रणपिंगल भाग. ३ जो.

वैदिकछन्दः प्रकरण.

गूर्जर भाषामां रचनार

रणछोडभाइ उदयराम

अेओअे

वडोदरा नूतनविलास प्रिन्टिंग प्रेस

अने

अमदावादना आर्योदय प्रेसमां मुद्रांकित करावी

प्रसिद्ध कर्युं.

संवत् १९६१ सन १९०५.

मूल्य बार आना.

अनुक्रमणिका.

—:०:—

मंत्रछन्दानुक्रमणि.

—:०:—

त्वंह्यग्ने.	विराट्गायत्री.	२४
ता विद्वांसा.	काविराट् अनुष्टुप्	५१
तांम आवह.	भूरिक् अनुष्टुप.	५४
तामे.	उष्णिग्गर्भागायत्री.	१२
तेजोऽसि.	साम्नी अनुष्टुप.	४५
दश.	सतःपंक्ति	७९
दर्दीरेकणस्तवे.	ककुपन्यंकुशिरा	३६
दिवो.	परोष्णिक्	३३
दुहीं.	विराट गायत्री	१०
दुहीयन्.	विराट अनुटुष्प्	४६
देवइन्द्रो.	कृति	१२६
देवस्त्वा.	प्राजापत्याअनुष्टुप्	४४
देवी उषा.	ब्राह्मी उष्णिक्	३१
देवो अग्निः	संस्कृति	१३०
द्रूपस्ते.	निचृत्अनुष्टुप	५४
द्रुतं गायत्रं.	विराट् उष्णिक्	४०
घृतं न.	पदपंक्ति	८३
नृभिर्ये.	अनिष्ठ गर्भा गायत्री पिपीलिक मध्या.	१६-२७
नदं व.	चतुष्पाद उष्णिक्	३३
पर्यूपु.	त्रिपाद्अनुष्टुप्	४७
पर्यूपु.	पिपीलिकमध्यानुष्टुप्	४८
परितो.	आर्षबृहती	६१
परिधत्त.	विराट्त्रिष्टुप्	१०४
परमेष्ठी.	आकृति	१२८
पथ्या न तायुं.	द्विपदागायत्री	१९

वेदाहमेतं	....आर्षत्रिष्टुप्	९०
शचीभिर्नः	....बृहती	६२
शतक्रतु	....निचृतजगती	११८
शुक्रश्च	....उत्कृति	१३२
सत्	....दैविगायत्री	९
सनितः	....विषमपदाबृहती	६६
सवितुर्वः	....आर्चीअनुष्टुप्	४९
	....साम्नी जगती	१०७
सपूर्व्यो	....ककुम्मतीअनुष्टुप्	५६
समाग्नि	....ब्राह्मीअनुष्टुप्	४९
स हि	....अतिधृती	१२५
समुन्वे	....यवमध्या गायत्री	१२
साविश्वायुः	....दैवीबृहती	६९
सा विश्वकर्मा	....दैवीपंक्ति	७४
सुदेवः	....यवमध्याउष्णिक्	४१
सुषुमा	....अतिशक्वरी	१२१
सो अग्नि	....आस्तारपंक्ति	८२
संवत्सरोऽसि	....अभिकृति	१३१
स्वस्तिन	....विराटस्थानात्रिष्टुप्	९२
हरीयस्य	....पिपीलिकमध्याउष्णिक्	३५
होता	....प्राजापत्यापंक्ति	७६

रणपिंगल भाग ३ जो.

वैदिकछन्दः प्रकरण.

मुख्य वैदिक छंद २१ छे; तेमनां नाम क्रमेः—

१. गायत्री.	८ अतिजगती.	१५. कृति.
२. उष्णिक्.	९ शकरी.	१६. प्रकृति.
३. अनुष्टुप्.	१० अतिशकरी.	१७. आकृति.
४. बृहती.	११ अष्टि.	१८. विकृति.
५. पंक्ति.	१२ अत्यष्टि.	१९. संस्कृति.
६. त्रिष्टुप्.	१३ धृति.	२०. अतिकृति.
७. जगती.	१४ अतिधृति.	२१. उत्कृति.

आ छंदने त्रण भागमां विभक्त करवामां आव्या छे. प्रथमना सातने आद्यसप्तक, बीजा सातने द्वितीय सप्तक अथवा परसप्तक अने त्रीजा सात छंदने परात्परसप्तक अथवा तृतीय सप्तकनी संज्ञा आपवामां आवी छे.

आद्य सप्तकमां गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् अने जगती एवा ७ छंद छे, ते प्रत्येकना नीचे आपेला आठ आठ प्रकार थायछे.—

१ आर्ष. २ दैवी. ३ आसुरी. ४ प्राजापत्य. ५ याजुषी. ६ साम्नी. ७ आर्ची. ८ ब्राह्मी.

एटले के, आठ प्रकारनी गायत्री, आठ प्रकारना उष्णिक्, आठ प्रकारनो अनुष्टुप्, आठ प्रकारनी बृहती, आठ

प्रकारनी पंक्ति, आठ प्रकारनो त्रिष्टुप् अने आठ प्रकारनी जगती थायछे. आ प्रमाणे उपर जणावेल सात प्रकारना गायत्री आदि छंद अने ते प्रत्येकना थता आठ प्रकारथी नीचेना बिम्बमां जणाव्या प्रमाणे छप्पन जातना वैदिक छंद बनेछे.

१. आर्ष गायत्री.	१. आर्ष उष्णिक्.
२. दैवी गायत्री.	२. दैवी उष्णिक्.
३. आसुरी गायत्री.	३. आसुरी उष्णिक्.
४. प्राजापत्या गायत्री.	४. प्राजापत्या उष्णिक्.
५. याजुषी गायत्री.	५. याजुषी उष्णिक्.
६. साम्नी गायत्री.	६. साम्नी उष्णिक्.
७. आर्ची गायत्री.	७. आर्ची उष्णिक्.
८. ब्राह्मी गायत्री.	८. ब्राह्मी उष्णिक्.

१. आर्ष अनुष्टुप्.	१. आर्ष बृहती.
२. दैवी अनुष्टुप्.	२. दैवी बृहती.
३. आसुरी अनुष्टुप्.	३. आसुरी बृहती.
४. प्राजापत्या अनुष्टुप्.	४. प्राजापत्या बृहती.
५. याजुषी अनुष्टुप्.	५. याजुषी बृहती.
६. साम्नी अनुष्टुप्.	६. साम्नी बृहती.
७. आर्ची अनुष्टुप्.	७. आर्ची बृहती.
८. ब्राह्मी अनुष्टुप्.	८. ब्राह्मी बृहती.

१. आर्ष पंक्ति.	१. आर्ष त्रिष्टुप्.
२. दैवी पंक्ति.	२. दैवी त्रिष्टुप्.
३. आसुरी पंक्ति.	३. आसुरी त्रिष्टुप्.

४. प्राजापत्या पंक्ति.	४. प्राजापत्या त्रिष्टुप्.
५. याजुषी पंक्ति.	५. याजुषी त्रिष्टुप्.
६. साम्नी पंक्ति.	६. साम्नी त्रिष्टुप्.
७. आर्ची पंक्ति.	७. आर्ची त्रिष्टुप्.
८. ब्राह्मी पंक्ति.	८. ब्राह्मी त्रिष्टुप्.

१. आर्ष जगती.
२. दैवी जगती.
३. आसुरी जगती.
४. प्राजापत्या जगती.
५. याजुषी जगती.
६. साम्नी जगती.
७. आर्ची जगती.
८. ब्राह्मी जगती.

महर्षि पिंगलाचार्यें पिंगलसूत्रमां उपर जणावेला आद्यसप्तकना छंदना छप्पन प्रकार कहेला छे. ते महीधर प्रभृति वेदना भाष्य करनाराओए स्वीकार्या छे.

प्रत्येक छंदना देवता, स्वर, वर्ण, गोत्र अने अक्षर प्रमाण नक्की करायलुं छे ते छंदवार विस्तार समेत बतावबामां आवशे. आ स्थळे तेमनां नाम निर्देश सूचववा जरूर होतां आ नीचे आपेला वैदिक छन्दः कोष्टकमां ए बतावबामां आव्या छे.

वैदिक छंदः कोष्टक.

देवता.	अग्नि.	सविता.	सोम.	बृहस्पति	वरुण.	इन्द्र.	विश्वेदेवा
स्वर.	षड्ज.	ऋषभ.	गांधार.	मध्यम.	पंचम.	धैवत.	निषाद.
वर्ण.	सित.	सारंग.	पिशंग.	कृष्ण.	नील.	लोहित	गौर.
गोत्र.	आग्निवेश्य.	काश्यप.	गौतम	आंगिरस.	भार्गव.	कौशिक.	वासिष्ठ.
छंदनी जात.	गायत्री	उष्णिक्.	अनुष्टुप्	बृहती.	पंक्ति.	त्रिष्टुप्	जगती.
आर्षी.	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८
दैवी.	१	२	३	४	५	६	७
आसुरी.	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
प्राजापत्या.	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२
याजुषी.	६	७	८	९	१०	११	१२
साम्नी.	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४
आर्ची.	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६
ब्राह्मी.	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२

छंदना चरणने पाद केहेछे. वैदिक पिंगलमां ए पाद चार प्रकारना मानवामां आव्या छे.

१ गायत्री पाद. २ विराट्पाद. ३ त्रिष्टुप् पाद. ४ जागत पाद.

गायत्री पाद आठ अक्षरनो थायछे, विराट् पाद दश

अक्षरनो थायछे; त्रिष्टुप् पाद अगियार अक्षरनो थायछे अने जागत पाद बार अक्षरनो थायछे.

मंत्रमां आवी गयेल ओछा अक्षरना पादने इयादिना उमेराथी अथवा कंइक क्षेपक उमेरी पूरो मानी लेवानी छूट मूकवामां आवेछे.

जे छंद जेवा पादनो बनतो होय तेवा एक, बे, त्रण, चार अथवा पांच पादनो ते बनी शकेछे. गायत्री छंद त्रण पादनो ज थाय, एम पिंगलसूत्रमां लख्युं छे; पण वेदमां ते उपर जणाव्या प्रमाणे एकपदा, द्विपदा, त्रिपदा, चतुःपदा अने पंचपदा इत्यादि जोवामां आवेछे.

सरखा अक्षरना छंदना नामनो निर्णय ए छंदना आदिमां जे पाद होय ते परथी करवो; अर्थात् आदिपाद जे जातिनो होय ते जातिनो ते छंद केहेवो. जेमके, स्वराट् अनुष्टुप् ३० अक्षरनो थायछे, अने विराट् उष्णिक् पण ३० अक्षरनो थायछे; आवी जातनो कोइ मंत्र होय अने ते कया छंदनो छे एम जाणवानुं होय तो ए छंदमां प्रथम पाद कयो छे ते जोवो. आपणा उदाहरणमां प्रथम पाद आठ अक्षरनो छे ए गायत्रीनो पाद छे ने अनुष्टुप्नो पण छे. तेथी ए ३० अक्षरनो छंद, स्वराट् अनुष्टुप् गणाशे.

वैदिक मंत्रने छंदकल्पना माटे त्रण भागमां वेंहेचवामां आव्या छे. **ऋक्, यजुष् अने दंडक.**

जेमां छंद अने तेना पादाक्षरनुं प्रमाण छे, अर्थात् जे नियमसर रचवामां आवेल छे, ते **ऋचा** केहेवायछे.

जेमां केवळ अक्षर संख्यानुं प्रमाण रेहेछे, अने पादनो विवेक नथी होतो ते **यजुष्** केहेवायछे.

जेमां १०६ अक्षरथी वधारे होय एवा यजुःने दंडक केहेछे.

ऋग्वेदमांना सर्व मंत्र नियत पादाक्षर प्रमाणानुसार रचायला छे. यजुर्वेदमां केटलीक तेवी ऋचाओ छे अने बाकीना यजुः अने दंडक छे.

यजुःनी छंदकल्पना तेना अक्षर प्रमाणमां दैवी आसुरी इत्यादि विभागे करवामां आवेछे,

जे यजुःमां १०६ अक्षरथी वधारे अक्षर होयछे, ते दंडक केहेवायछे: तेनी छन्द कल्पना थइ शकती नथी.

छन्दःमां तेना केहेवामां आवेला प्रमाणथी एक अक्षर ओछो होय तो ते **निचृत्** छंद केहेवायछे. बे अक्षर ओछा होय तो ते **विराज्** छंद केहेवायछे.

छन्दमां तेना कहेला प्रमाणथी एक अक्षर वधारे होय तो ते **भूरिज्** छंद केहेवायछे; अने बे वधारे होय तो ते **स्वराज्** छंद केहेवायछे.

गायत्री.

आद्य सप्त वर्गनी संज्ञाना सात छंदमां आ छंद पेहेलो छे. देवतोनी स्तुति, गान अने प्रकाश करवा माटे ए छंद वापरवामां आवेछे माटे एने **गायत्री** केहेछे. (गायत्री गायते स्तुति कर्मणा) वळी केटलाक ब्राह्मण ग्रंथना बनावनारा महर्षिओ केहेछे के 'गायतो मुखादुदपतदिति' अर्थात् वेदनु आदि गान करनार ब्रह्माना मुखमांथी ए उत्पन्न थइ माटे ए गायत्री केहेवायछे. केटलाक एम केहेछे के ए "संसारमां तृषा पच्या करो नहि; तेनो नाश करवा अर्थे मात्र मारुं न

स्मरण करो, हुं तमारुं पालन करीश " एम गाइने पालन करे छे माटे ए गायत्री केहेवायछे.

आ छंदनुं गोत्र अग्निवेश्य छे; वर्ण स्वेत छे, स्वर षड्ज छे; अने तेना देवता अग्नि छे.

आ छंदना बे प्रकारे जूदा जूदा भेद पडेछे, एक पिंगलोक्त छंन्दोनियमे अने बीजा पादपरत्वे.

पिंगलोक्त रीते जे भेद पडे छे तेनां नाम नीचे प्रमाणे छे.

१ दैवी गायत्री. २ आसुरी गायत्री.
३ प्राजापत्या गायत्री. ४ याजुषी गायत्री.
५ साम्नी गायत्री. ६ आर्ची गायत्री.
७ ब्राह्मी गायत्री. ८ आर्ष गायत्री.

उपर जणावेला आठ प्रकारना भेदमांना आर्ष गायत्री नामना भेदना पादपरत्वे नीचे प्रमाणे जूदा जूदा उपभेदो थायछे:—

१. त्रिपाद् त्रैष्टुभ विराट् गायत्री.
२. पदपंक्ति गायत्री.
३. त्रिपदा गायत्री.
४. यवमध्या गायत्री.
५. उष्णिक्गर्भा गायत्री.
६. चतुष्पदा गायत्री.
७. नागी गायत्री.
८. वाराही गायत्री.
९. शंकुमती गायत्री.
१०. ककुम्मती गायत्री.
११. पिपीलिकमध्या गायत्री.

१२. प्रतिष्ठा गायत्री.

१३. पादनिचृद् गायत्री.

१४. वर्द्धमाना गायत्री.

१५. विराट्‌द्विपदा गायत्री.

१६. अतिपाद निचृत् गायत्री.

१७. हसीयसी गायत्री.

गायत्री.

१. दैवी गायत्री.=१ अक्षर.

ॐ १. तत् २. सत् ३. त्वम्. ४.

२. आसुरी गायत्री.=१५ अक्षर

अक्षर आणे पांचत्री, छे आसुरी गायत्री.

उदाहरण–आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥

अर्थः–वळी ए तेज जळरूप, ज्योतिरूप, रसरूप, अमृतरूप व्यापकरूप, उत्पत्ति करनार, स्थिति–रक्षण करनार, लय करनार अने ॐकाररूप छे.

३. प्राजापत्या गायत्री. = ८ अक्षर.

आठ अक्षर आणजो. १.
प्राजापत्या गायत्रीमां. २.

उदाहरण_भूताय त्वा नारातये.

य. सं. १ अ. ११ कं.

अर्थः–हे व्रीहिशेप! शकटावस्थित भवन माटे अने अन्य यागमां ब्राह्मण भोजनमाटे, हुं तने साचवी राखुंछुं.

४. याजुषी गायत्री. = ६ अक्षर.

याजुषी गायत्री १.
छ अक्षरे थाय. २.

उदाहरण—आश्विभ्यां पिन्वस्व.

य. सं. ३८ अ. ४ कं.

अर्थ:—तुं अश्विनीकुमार माटे गायने पात्रमां दे.

५. साम्नी गायत्री. = १२ अक्षर.

बार अक्षरे बने गायत्री साम्नी.

उदाहरण. वाचो विधृतिमग्निं प्रयुजं स्वाहा.

य. सं. ११ अ ६६ कं.

अर्थ:—आ होमनुं हवि वाणीना विधारण प्रति प्रेरक अग्निने उद्देशी सुहुत थाओ.

६. आर्चीगायत्री. १८ अक्षर.

गायत्री आर्ची प्रमाणो, अक्षर अढार पूरा आणो.

उ०—अग्ना ३ इ पत्नीवन्त्सजूर्देवेन त्वष्ट्रा सोमं पिब स्वाहा

य सं. ८ अ १० कं.

अर्थ:—हे अग्नि ! हे पत्नीवाळा ! तुं त्वष्टा देवनी साथे समान प्रीतिवाळो थइने, सोमरसनुं पान कर. ए सोम सुहुत थाओ.

७. ब्राह्मी गायत्री.=३६ अक्षर.

ब्राह्मी, गायत्रीमां तमे,
लावजो छत्रीश वर्ण;
पूरे पूरा न अधूरा
दरकार पादाक्षरनी न जरा.

उ०—इयत्यग्र आसीन्मखस्य तेऽद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.

य. सं. ३७ अ. ५ कं.

अर्थः—हे पृथ्वी ! पेहेलां श्रीवराहभगवाने ज्यारे तने जळमांथी बाहार काहाडी, त्यारे तुं आवडी (प्रादेश मात्र) हती. एवी तने में आज लइने, देवयजनमाटे यज्ञना शिरो भागमां मूकी.

८ त्रिपात् त्रैष्टुभ् विराट् गायत्री.

११,११,११ = ३३ अक्षर.

पे'ले बीजे त्रीजे हरवर्ण[१] छे,
एवी देववर्णनी गायत्री छे,
त्रिपाद त्रैष्टुभ विराट् नामे छे.

उ. दुही यन्मित्रधितये युवाकु,
राये चनो मिमीतं वाजवत्यै,
इषे चनो मिमीतं धेनुमत्यै.

ऋ. सं. १ मं. १७ अ. १२० सू. ९ मंत्र.

अर्थः—हे अश्विनीकुमारो ! तमारी स्तुति करनाराओ तमारी पासेथी मित्रजनोनी धारणा माटे धन मेळवेछेः एटला माटे स्तुति करनारा अमोने तमे बळयुक्त धन अने गोयुक्त अन्न आपो.

९ पदपंक्ति[१] गायत्री. ५,५,५,५,४. = २४ अक्षर.

५,५,५,५,६. = २६ अक्षर.

१ पांच अक्षर,
२ चो पद बंध,

---

१. पिंगलाचार्ये आ छंदनो समावेश पंक्ति छंदमां कर्यो छे.

३ छे पदपंक्ति;
४ गायत्री छंद,
५ युग के छये.

उदाहरण-एभिर्नो अर्कै,

भवा नो अर्वाङ्;

स्व १ र्ण ज्योतिः;

अग्ने विश्वेभिः,

सुमना अनीकैः.

ऋ सं. ४ मं. १ अ १० सू ३ मंत्र.

अर्थः-हे अग्नि! तुं के जे सोनाना सूर्य समो, विश्वव्यापी तेजथी प्रकाशमान छुं, ते आ अमारां स्तोत्रथी अमोने अभिमुख था.

१० त्रिपदागायत्री. ८,८,८, = २४ अक्षर.

आठ वर्ण पादे रे' छे,
त्रिपद चोवी आवे छे;
त्रिपदा गायत्री के'छे.

उदाहरण-अग्निमीळे पुरोहितं,

यज्ञस्यदेव मृत्विजम्;

होतारं रत्नधातमम्.

ऋ. सं. १ मं. १ अ. १ सू. १ मं.

अर्थः—पुरोहित यज्ञना देदीप्यमान ऋत्विज, होता अने विशेषे करीने संपत्ति आपनार अग्निनुं हुं स्तवन करुंछुं.

११ यवमध्या गायत्री. ७, १०, ७ = २४ अक्षर.

पे'ले त्रीजे पाताळ
बीजे दश वर्णनी चोविशी,
यवमध्या गायत्री.

उदाहरण—ससुन्वे यो वसूनां,

योरायामानेताय इळानाम्,

सोमो यः सुक्षितिनाम्.

ऋ सं. १ मं. ७ अ. १०८ सू १३ मंत्र.

अर्थः—जे सोम धन, गाय, अन्न, अने शोभन मनुष्ययुक्त गृहनो आ नेता छे तेने ऋत्विजो काहाडेछे. एनुं कहाडवुं शुभ करनार थाओ.

महर्षि पिंगलाचार्य पिंगल सूत्रमां लखेछे के जे गायत्रीमां छंदना पेहेला तथा छेल्ला पाद थोडा अक्षरना अने वच्चेनो पाद घणा अक्षरनो होय ते यवमध्या गायत्री केहेवायछे.

१२ उष्णिग् गर्भा गायत्री. ६, ७, ११. = २४ अक्षर.

छ वर्ण प्रथमे,
हय हर द्विजे,
उष्णिग्गर्भा गायत्री ए चोवीशी.

उदाहरण—तामे अश्व्यानां

हरीणां नितोशना

उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा.

ऋ. सं. ८ मं, २५ सू, २३ मं.

अर्थः–ऋषि केहेछे के, हरित वर्णना घोडा मध्ये शत्रुओने अत्यन्त बाधकरनार, कुशळ युद्धकरनारने हरकतकरनार अने आयुधधारी मनुष्यना वाहक एवा बे घोडा वरुण देव अमने तरत आपे.

१३ चतुष्पदागायत्री. ६,६,६,६, = २४

छवर्णना क्रमे,
चोपदी चोवीशी;
गायत्री रचेछे,
चतुष्पदा के'छे.

उदाहरण. इन्द्रः शचीपति.
बलेन वीलित;
दुश्च्यवनो वृषा,
समत्सु सासहि. ॥

१४ नागीगायत्री. ९,९,६=२४ अक्षर.

पे'ले बीजे नव वर्ण ने,
त्रीजे षट थइ चोवीशी;
नागीगायत्री छे.

उ. अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः,
क्रतुं न भद्रं हृदि स्पृशम्,
ऋध्यामा त ओहैः. ॥

ऋ. सं. ४ मं. १ अ. १० सू. १ मं.

अर्थः–हे अग्नि ! तुं के जे घोडारूप छुं, हविषनो लइ जनार छुं, उपकारक छुं, भक्ति करवा योग्य छुं, अने अतिशय प्रिय छुं, तेने अमे ऋत्विग् वगेरे मळीने इन्द्रप्रापक स्तोत्रथी स्तविये छिये.

१५ वाराही गायत्री. ६, ९, ९,=२४ अक्षर.

पे'ले पादे षट,
बीजे त्रीजे नव वर्णनी,
चोवीशी वाराही गायत्री.

उ. अग्ने मृळ महाँ,
असि यऽईमा देवयुं जनम्,
इयेथ बर्हिरासदम्.

ऋ. स. ४ मं. १ अ. ९ सू. १ मं.

अर्थः–हे अग्नि ! तुं अमने सुखी कर; तुं समर्थ छुं, अने देवने चाहनार यजमान पासे यज्ञमां दर्भ उपर बेसवा माटे आवुं छुं.

१६ आर्षगायत्री. =२४ अक्षर.

चोविश वर्णनी जाणो,
आर्षगायत्री प्रमाणो,
रणपिंगलनी रीते. १
पाद रचना जे,
आठना त्रण वा,
छ छना चार ते,
लावीने करजो. २

उ. तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १ ॥

य. सं ३• अ. २ क.

अर्थ-सघळा पदार्थोने उत्पन्न करनार, प्रकाशमान् एवा जे सूर्यनारायण तेना उत्तम तेजनुं अमे ध्यान करिये छिये. ए तेज अमारी बुद्धिने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षमां प्रेरेछे.

१७ शंकुमती गायत्री. ५, ८, ८ = २१ अक्षर.

५, ६, ६, ६, = २३

छेल्ले वा पे'ले धरजे,
पाद पंचाक्षर सारो,
गायत्री छंदे; १
शंकुमतीमां,
बीजा छ छ केरा
आठ आठना वा
पाद गायत्रीना. २

उ. युक्तेन मनसावयं,

देवस्य सवितुः सवे, ।

स्वर्ग्याय शक्त्या.

य. सं. ११ अ. २ कं.

अर्थः-सविता देवताना उदय वखते आज्ञामां रेहेनारा अमे यजमानो, एकाग्र चित्तथी यथाशक्ति स्वर्गसाधक कर्मने माटे प्रयत्न करिये छिये.

यजुर्वेद परना महीधर भाष्यमां, छेल्लो पाद पांच अक्षरनो होय तो ते पण शंकुमती गायत्री गणवानुं जणाव्युं छे.

१८ ककुम्मती गायत्री. ६,८, ८ = २२ अक्षर.

छ अक्षर पे'ले,
आठ बीजे वळी छेल्ले;
ककुम्मती गायत्री छे.

उ०—त्वं ह्यग्ने अग्निना,

विप्रो विप्रेण सन्त्सता,

सखा सख्या समिध्यसे.

ऋ. सं. ६ अ. ३ अ. ११ व. ४ मंत्र.

अर्थः—हे अग्नि ! तुं बुद्धिवाळो छुं अने सखा होइने बुद्धिवाळा तारा मित्र साथे वृद्धि पामुंछुं.

पिंगलाचार्यना लखवा प्रमाणे आ भेद सर्व प्रकारना छंदनो पडेछे. जेनो एक पाद छ अक्षरनो होय अने बाकीना ७ छन्दना कथित प्रमाणना होय, ते, ते जातनो ककुम्मती छंद केहेवायछे.

१९ पिपीलिकमध्या अणिष्ठगर्भा.

८, ४ ८, = २०.
८, ५, ८ = २१.
८, ६, ८ = २२.

मोटा पे'ला छेल्ला पाद,
वच्चेनो छे न्हानो;
पिपीलिकमध्या जाणो. १
गायत्री ए छे गरवो;
वेद, पांच, छ
विकल्पे वच्चेनो करवो. २

उ०—नृभिर्येमानो हर्य्यतो,

विचक्षणो;

राजादेवः समुद्रियः ॥ १ ॥

ऋ. सं. ७ अ. ५ अ. १५ व. १६ मंत्र.

अर्थः—यज्ञ करनाराओथी निर्मित करातो, स्पृहा करवा लायक, विचक्षण, देदीप्यमान, अने अन्तरिक्षमां उत्पन्न थयेल राजा सोम इन्द्रने माटे अमृत स्त्रवेछे.

महर्षि पिंगलाचार्यना लखवा प्रमाणे आ जातनो भेद सर्व प्रकारना त्रिपाद् छंदमां पडेछे. वच्चेनो पाद न्हानो अने आगळ पाछळना मोटा ए पिपीलिकमध्या छंद केहेवाय.

२० प्रतिष्ठा. ८,७,६,= २१ अक्षर.

आठ, सात, छ क्रमथी,
त्रिपदा एकवीशी,
प्रतिष्ठा गायत्री.

ॐ०—आपः पृणीत भेषजं,

वरूथं तन्वे ३ मम,

ज्योक्च सूर्यं दृशे.

ऋ. सं १० मं. १ अ. ९ सू. ७ मं.

अर्थः—हे जळदेवता! पापनो नाश करवा माटे उपस्थानमां मने सूर्य अने चन्द्रनुं दर्शन लांबा काळसुधी थाय, माटे मारा तनमां संसार निवर्त्तक औषध पूरो.

२१ पादनिचृत् गायत्री. ७,७,७, = २१ अक्षर

त्रिपद वर्ण सात,
एकवीश वर्णो प,

पादनिचृत् गायत्री.

उ०-युवाकु हि शचीनां,

युवाकु सुमतीनाम्,

भूयाम वाजदान्नाम्.

ऋ. सं. १ मं. ४ अ. १७ सू. ४ मंत्र.

अर्थः-अमारा कर्मनुं सोमरूप हवि उत्तम प्रकारनां धनात्मक उदक,पय अने सातवा इत्यादि द्रव्यथी मिश्रित थयेलुं छे,अने शोभन बुद्धिवाळा ऋत्विजनां स्तोत्ररूप वचन नाना प्रकारना स्तुत्यगणथी मिश्रित थयेल छे, एटला माटे हे मित्रावरुण ! एवा प्रकारनुं अमारुं ए हवि, आप ग्रहण करो; जेथी आपनी कृपा वडे अमे अन्न आपनाराओमां मुख्य थइये.

२२ वर्द्धमाना. ६, ७, ८ = २१ अक्षर.

छ सात आठनी,
वर्द्धमाना गायत्री,
त्रणे पादे एकवीशी.

उ०-इशाना वार्याणां,

क्षयन्ती श्चर्षणीनाम्;

अपोयाचामिभेषजम्.

ऋ. स. १० मं. १ अ. ९ सू. ५ मं.

अर्थः-निवारण योग्य पापनुं निवारण करवामां समर्थ प्राणीना निवास:कारणभूत अपदेवता पासे हुं संसार निवारणनुं औषध याचुंछुं.

२३ विराट् द्विपदा गायत्री. १२,८ = २० अक्षर.

पे'ले बार बीजे आठ वीश वर्ण,
विराट् द्विपदा गायत्री.

उ०—पश्वा न तायुं गुहा चतन्तं नमो,
युञ्जानं नमो वहन्तम्. ॥ १ ॥
सजोषा धीराः पदैरनु ग्मन्नुप,
त्वा सीदन्विश्वे यजत्राः. ॥ २ ॥

ऋ. सं. १ मं. १२ अ. ६५ सू. १ मंत्र.

अर्थः—गुफामां संताइरहेला उपासको पासे उपासना करावनार अने उपासना लइजनार हे अग्नि! चोरायला पशुनो शोध जेम तेना पगलांना योगथी काहाडेछे, तेम तारा सखा जे प्रज्ञावान् पूजनीय सर्व देव तेमणे पगलांना योगे तारो शोध काहाड्यो अने ते तारी पासे बेठा.

२४ अतिपादनिचृत्. ७, ६, ७, = २० अक्षर.

सात, छ ने सातनी,
घीशी जे गायत्री
अतिपाद निचृत् छे.

उ०—पुरूतमं पुरूणां,
स्तोतॄणां विवाचि;
वाजेभिर्वाजयताम्.

ऋ. सं. ६. मं. ४ अ. ४६ सू. २६ मंत्र.

अर्थः-हे इन्द्र! अमो घणा स्तुति करनाराओनी स्तुति, घणा शत्रुने नाश करनार तने प्राप्त करे. जे यज्ञमां अमारी आ स्तुतिशस्त्रात्मक वाणी बोलायछे, तेमां ते तने हविष्यान्नथी बळवान बनावे.

छ, आठ, सातना,
पाद क्रमथी जे बने,
पिंगल मतनी ते.

उ०-मनोन्वाह्वामहे,

नाराशं॒सेन स्तोमेन;
पितॄणां च मन्मभिः ॥

य. सं. ३ अ. ५३ कं.

अर्थः-पितृओ जे स्तोत्रथी माने तेवां मानुषी स्तोत्रथी अमे अमारा मनोभिमानी देवताने बोलाविये छिये.

२५ ह्रसीयसी गायत्री=६,६,७,=१९ अक्षर.

छ, छ, सात क्रमे,
ओगणीश वर्णो,
ह्रसीयसीगायत्री.

उ० प्रेष्ठं मुप्रियाणां

स्तुह्यासावातिथिम्

अग्निं रथानां यमम् ॥

ऋ. सं. ८ मं १० अ. ९२ सू. १० मं.

अर्थः-हे स्तोता ! तुं प्रियमां प्रिय अतिथी अने रथोने यममां राखनार अग्निनुं स्तवन कर.

गायत्री छंदना भेद.

संख्या.	गायत्री.	पादाक्षर प्रमाण.						संख्या.	गायत्री.	पादाक्षर प्रमाण.					
१	दैवी						१		पिपीलिकमध्या	८	६	८			२२
२	याजुषी						६	२०	प्रतिष्ठा	८	७	६			२१
३	प्राजापत्या						८	२१	पांदनिचृत्	७	७	७			२१
४	साम्नी						१२	२२	वर्धमाना	६	७	८			२१
५	आसुरी						१५	२३	विराट् द्विपदा	१२	८				२०
६	आर्ची						१८	२४	अतिपादनिचृत्	७	६	७			२०
७	ब्राह्मी						३६	२५	हसीयसी	६	६	७			१९
८	आर्षी						२४								
९	त्रिपात्त्रैष्टुभ	११	११	११			३३								
१०	पदपंक्ति	५	५	५	५	४	२४								
	,,	५	५	५	५	६	२६								
११	त्रिपदा	८	८	८			२४								
१२	यवमध्या	७	१०	७			२४								
१३	उष्णिग्गर्भा	६	७	११			२४								
१४	चतुष्पदा	६	६	६	६		२४								
१५	नागी	९	९	६			२४								
१६	वाराही	६	९	९			२४								
१७	शंकुमती	५	८	८			२१								
	,,	५	६	६	६		२३								
१८	ककुम्मती	६	८	८			२२								
१९	पिपीलिकमध्या	८	४	८			२०								
	,,	८	५	८			२१								

आगळ केहेवाई गयेला सर्व प्रकारना गायत्री छंदना नीचे जणावेला चार भेद पडेछे:—

१ निचृत् २ भूरिक् ३ स्वराट् ४ विराट्

केहेवायला मापथी जे गायत्री छंदनो एक अक्षर ओछो होय ते **निचृत्** केहेवायछे; अने जेमां बे अक्षर ओछा होय ते **विराट्** छंद केहेवायछे.

जेना मापमां कथित मापथी एक अक्षर वधारे होय ते भूरिक् गायत्री केहवायछे. अने जेना मापमां कथित मापथी बे अक्षर वधारे होय ते स्वराट् गायत्री केहेवायछे.

उपरनी संज्ञाना प्रत्येक प्रकारना गायत्री छंदना जे भेद पडेछे तेनां सर्व उदाहरणो मळवां दुष्प्राप्य होतां जेटलां मळी शक्यां छे तेज मात्र अत्र आपवामां आव्यां छे. परंतु तेनुं नामान्तरनुं दिग्दर्शन थवा माटे गायत्री निचृत्आदि भेद बिम्ब आ पासेना पृष्ठमां आप्युं छे एथी वांचनारने तरत समजाशे.

गायत्री छंद.

भूरिक्आदि उपभेद बिम्ब.

अक्षर संख्या.	छंदजात.	उपभेद.		रिमार्कस.	अक्षर संख्या.	छंदो जात.	उपभेद.		रिमार्कस.
		१	२				१	२	
१	दैवी				२१	पादनि चृत्			
२	दैवी	भूरिक्			२२	आर्षी	विराट्		
३	दैवी	स्वराट्			२३	आर्षी	निचृत्		
४	याजुषी	विराट्			२४	आर्षी			
५	याजुषी	निचृत्			२५	आर्षी	भूरिक्		
६	याजुषी				२६	आर्षी	स्वराट्		
७	याजुषी	भूरिक्	प्राजाप-त्या निचृत्		३४	ब्राह्मी	विराट्		
८	प्राजापत्या				३५	ब्राह्मी	निचृत्		
९	प्राजापत्या	भूरिक्			३६	ब्राह्मी			
१०	प्राजापत्या	स्वराट्	साम्नी वि राट्.		३७	ब्राह्मी	भूरिक्		
११	साम्नी	निचृत्			३८	ब्राह्मी	स्वराट्		
१२	साम्नी								
१३	साम्नी	भूरिक्	आसुरी वि राट्.						
१४	साम्नी	स्वराट्	आसुरीनि-चृत्.						
१५	आसुरी								
१६	आसुरी	भूरिक्	आर्ची वी						
१७	आसुरी	स्वराट्	राट्आर्ची						
१८	आर्ची		निचृत्						
१९	आर्ची	भूरिक्							
२०	आर्ची	स्वराट्							

१ निचृत्गायत्री.=कथितमापथी १ अक्षर ओछो.

गायत्री छंद बनेछे,
एक ओछे अक्षरे
ते निचृद् गायत्री कहेछे.

उ०—अग्निमिन्धानो मनसा,
धियं सचेत मर्त्यः;
अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥

सामवेद पू. प्र. १ अ. १ मं. ९.

उ०—तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गोदेवस्य धीमहि;
धियो यो नःप्रचोदयात्

य. सं. ३० अ. २ कं.

अर्थः—सघळा पदार्थने उत्पन्न करनार प्रकाशवान् सूर्य-ना उत्तम तेजनुं अमे ध्यान करिये छिये. ए तेज अमारी बुद्धिने चारे पुरुषार्थोमां यथायोग्य विजय मळे एवी रीते स्फुरायमान करो.

२ विराट्गायत्री. कथितमापथी २ अक्षर ओछा.

बे अक्षर ओछा होय,
ते विराट् गायत्री;
मुनिवर वदे को'य.

उ०—त्वंह्यग्ने अग्निना,
विप्रो विप्रेण सन्त्सता;
सखा सख्या समिध्यसे.

ऋ. ६ अ. ३ अ. ३१ व. ४ मं.

अर्थः—हे अग्नि ! तुं बुद्धिवाळो छुं, अने सखा बनीने बुद्धिवाळा तारा मित्रनी साथे तुं वृद्धि पामुंछुं.

उ०—अभीमूनः सखिना,
सविता जरितृणाम् ।
सतां भवास्युनये.

भयदेवः

३ भूरिज् गायत्री.=कथित संख्या+२

गायत्रीना मापथी जो,
अक्षर एक अदको
होय ते छे भूरिज् गायत्री.

स्वराट्गायत्री. = कथित प्रमाण+२ अक्षर.

बे अक्षर जो अदका होय,
जाणो ए स्वराट्गायत्री,
छंद भलेरो वेदमां.

उ०— विद्वांसा विदुरः पृच्छे-
दविद्वानित्था परो अचेताः
नूचिन्नु मर्त्ते अक्रौ ॥

ऋ. सं. १ मं. १७ अ. १२० सू. २ मं.

अर्थ—एक अज्ञानी अने बीजा बुद्धिहीन एमणे ज्ञानी अश्विने ज मार्ग पूछवो. अश्वि देव मर्त्यो विषे अनास्था करनार छे ज नहि.

वळी केटलाक आचार्यवर्यो आर्ष गायत्री छंदना पादने अनुसरी नीचे प्रमाणे चार जातना भेद पाडेछेः—

१. शंकुमती गायत्री.
२. ककुम्मती गायत्री.
३. पिपीलिकमध्या गायत्री.

४. यवमध्या गायत्री.

जे गायत्री छंदनो एक पाद पांच अक्षरनो होय ते शंकुमती गायत्री केहेवाय छे. जेनो एक पाद छ अक्षरनो होय ते ककुम्मती गायत्री केहेवायछे.

जे गायत्री छंदना आगळ पाछळना बे पाद मोटा होय अने वच्चेनो पाद नानो होय ते पिपीलिकमध्या गायत्री केहेवाय छे.

जे गायत्री छंदना आगळ पाछळना पाद नाना होय अने वच्चेनो पाद मोटो होय ते यवमध्या गायत्री केहेवाय छे.

आ प्रत्येक जातनां जे उदाहरणो वेदमांथी मळी शक्यां छे ते आ नीचे मूकीये छिये.

१ शंकुमतीगायत्री. ५,८,८=२१. अक्षर.

५,६,६,६ = २३. अक्षर.

छेल्ले वा पे'ले करजे,
पाद पंचाक्षर सारो,
गायत्री छंदे. १
शंकुमतीमां,
बीजा छ छ केरा;
आठ आठना वा,
पाद गायत्रीना. २.

उ०—युक्तेन मनसा वयं
देवस्य सवितुः सवे
स्वर्ग्याय शक्त्या.

य. स. अ. ११. कं. २.

अर्थ—सविता देवताना उदय वखते आज्ञामां रेहेनारा अमे यजमानो एकाग्र चित्तथी यथाशक्ति स्वर्गसाधक कर्मने माटे प्रयत्न करिए छिये.

२ ककुम्मती गायत्री. ६+छन्द पादाक्षर.

एक पाद छनो,
बीजा होय जे छन्दना;
ककुम्मती गायत्रीमां.

उ०—त्वंह्यग्ने अग्निना,
विप्रो विप्रेण सन्त्सता,
सखा सख्या समिध्यसे.

ऋ. सं ६ अ. ३ अ. ३१ व. ४ मं.

३ पिपीलिकमध्यागायत्री. ८, स्वल्पाक्षर, ८ = २२.

छे पे'ला छेल्ला आठना,
वच्चे एथी थोडा;
पिपीलिकमध्या बने.

उ०—नृभिर्येमानो हर्यतो,
विचक्षणो,
राजादेवः समुद्रियः ।

ऋ. सं. ७ अ. ५ अ. १५ व. १६ मं.

अर्थ—यज्ञ करनाराओथी निर्मित करातो, स्पृहा करवा लायक, विचक्षण, देदीप्यमान अने अन्तरिक्षमां उत्पन्न

थयेल सोमराजा इन्द्रने माटे अमृत स्त्रवेछे.

उष्णिक्.

वैदिक छंदना आद्यसप्त वर्गनो आ बीजो छंद छे. उष्णिक् आ शब्दनी व्युत्पत्ति उत्=पूर्वात् अने ष्णा=शौचे थाय छे. अथवा ष्णीह्=प्रीतौ एम पण थाय. आ छंद देवताओने व्हालो छे माटे एनुं नाम **उष्णिक्** पाडेलुं छे. वळी केटलाक एम केहछे के उपमावाळी गायत्रीनुं नाम उष्णिक् पाड्युं छे एटले के ए छंद एना करतां चार अक्षरनो वधारे थायछे माटे ए नाम एने आप्युं छे. आ छंदमां घणुं करी **गायत्रीपाद** अने **जागतपाद**नो उपयोग थायछे. एमां जागतपाद वपराता होतां एनो एक प्रदेश वृषभना ककुत् संज्ञ प्रदेशनी माफक उच्छ्रित=ऊंचो एटलो मोटो होय छे तेथी तेने ककुप्नी संज्ञा आपवामां आवी छे.

उष्णिक् छंदनुं गोत्र **कश्यप** छे; वर्ण **सारंग** छे, स्वर **ऋषभ** छे, अने तेना देवता **सविता** छे.

पिंगलोक्त वैदिक छंदोनियमे एना नीचे आपेला भेद थायछे:—

१ दैवी उष्णिक्
२ याजुषी उष्णिक्
३ प्राजापत्य उष्णिक्
४ आसुरी उष्णिक्
५ साम्नी उष्णिक्
६ आर्ची उष्णिक्
७ ब्राह्मी उष्णिक्

८ आर्ष उष्णिक्

आर्ष उष्णिक् जेनुं सामान्य माप २८ अक्षरनुं छे तेना पाद परत्वे नीचे आपवामां आवेला छंद बनेछे:—

१ अनुष्टुप् गर्भा उष्णिक्
२ चतुष्पाद् उष्णिक्
३ परोष्णिक्
४ तनुशिरा उष्णिक्
५ त्रिपदा उष्णिक्
६ पुरउष्णिक्
७ पिपीलिकमध्या उष्णिक्
८ ककुप् उष्णिक्
९ ककुप्न्यंकुशिरा.

जे उष्णिक् पोताना कथित प्रमाणथी एक अक्षरे ओछो होय ते निचृत् उष्णिक् केहवायछे.

जे उष्णिक् पोताना कथित प्रमाणथी बे अक्षरे ओछो होय, ते विराट् उष्णिक् केहवायछे.

जे उष्णिक् पोताना कथित प्रमाणथी एक अक्षरे वधारे होय, ते भूरिक् उष्णिक् केहवायछे. अने जे बे अक्षरे वधारे होय ते स्वराज् उष्णिक् केहवायछे.

उष्णिक्.

१ दैवी उष्णिक्. २ अक्षर.

देवी उष्णिक्.
वर्ण वेधी.

उ०— भुवः

सा. सं. १ प्र. १ मं.

अर्थ—सात महाव्याहृतिमांनी एक व्याहृति छे. तेनो अर्थ अन्तरिक्ष अथवा लक्ष्मी, श्रेष्ठ थायछे.

२ याजुषी उष्णिक्. ७ अक्षर.

याजुषी उष्णिक् छंद. १
सात अक्षरबंध. २

उ०—विष्णुस्त्वाधूपयतु.

य. सं. ११ अ. ६० कं

हे उषे! विष्णु तने अश्वसकृज्जन्य धूपथी संस्कारो.

३ प्राजापत्य उष्णिक् = १२ अक्षर.

प्राजापत्य उष्णिक् विषे,
बार दीसे.

उ०—इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥

य. सं १ अ. ५ क.

अर्थ—मनुष्योमांथी देवोनुं अमे उपावर्त्तन करिये; अर्थात् अमे सत्य बोलिये अने जुठ्ठुं बोलिये नहि.

४ आसुरी उष्णिक = १४ अक्षर.

आसुरी उष्णिक् छे जे;
चौदेथी थायछे ते.

५. साम्नी उष्णिक् = १४ अक्षर.

साम्नी उष्णिक् छंद विषे.
चौदवर्ण दीसे.

६ आर्ची उष्णिक् = २१ अक्षर.

आर्ची उष्णिक् छंदे आखे;
एकवीश पूरेपूरा अक्षर भाखे.

उ०—अग्ने व्रतपते व्रतञ्चरिष्यामि

तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्.

य. सं १ अ. ४ कं.

अर्थ—हे अग्नि! तारी अनुज्ञाथी हुं कर्मानुष्ठान करीश. तारी कृपाथी ते कर्मनुं अनुष्ठान करवा हुं शक्तिमान थाउं अने ते अनुष्ठान सत्फळ पर्यन्त सिद्ध थाय.

७ ब्राह्मीउष्णिक् = ४२.

ब्राह्मीउष्णिक् नामे छंद जे केहेछे,
तेमां अक्षर बेतालीश वदेछे;
पद पाडो तो बार आठ आवेछे,
संख्या फावी रे'छे.

उ०—देवी उषा सानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्युह्वेताम्;

दैवीर्विशः प्रायासिष्टाᳬ सुप्रीते सुधिते

वसुवने वसु धेयस्य वीतां यज. ॥

य. सं. २८ अ १४ कं.

अर्थ—अहोरात्रनी अधिष्ठात्री देवी उषा तने रात्रिये इन्द्रने प्रवृत्त थयेला यज्ञमां बोलावेल छे. अति प्रसन्न अने सुहितकारक थयेली दैवी प्रजा धननां दान अने संग्रह माटे घी पीओ. हे मनुष्य होता! तुं पण यजन कर.

८ अनुष्टुप् गर्भा उष्णिक् ५,८,८,८ = २९ अक्षर.

ओगणत्रीशो,
पाच वर्सु योग आठ;
अनुष्टुप् गर्भा उष्णिक्,
छंद बने छे रसाळो.

उ०—पितुं नुस्तोषं,

महो धर्माणं तविषीम्;

यस्यत्रितो व्योजसा,

वृत्रं विपर्वं मर्दयत्.

ऋ. सं. १ मं. २४ अ १८७ सू १ मं.

अर्थ–हु हवे मोटाने धारण करनार अने मोटाना बळ एवा पितुनी स्तुति करीश. जेना पराक्रमे करी (तेणे) त्रितवृत्रने मारीने टुकडा कर्या.

९ आर्ष उष्णिक् = २८ अक्षर.

अक्षर चोवीसेथी,
पद सात धरेथी;
कह्यु रणपिंगले;
आर्ष उष्णिक् वा बने

उ०—कुक्कुटोऽसि मधु जिह्व इषमूर्ज मावद

त्वया वय९ संघात९ संघातं जेष्म.

य. सं. १ अ १६ मंत्र

अर्थ–हे शम्यारूप आयुध ! तुं असुरोनो कुक्कुट छुं, अने देवोनो मधुजिह्व छुं. असुरनो पराभव कर्त्ता तुं यजमानने अन्न अने रस मळो, एवो शब्द कर. तारा तेवा करेला-शब्दथी अमे असुरो साथनी लडाइ जीतीशुं.

१० चतुष्पादउष्णिक् ७,७,७,७, = २८ अक्षर.

सात वर्णना चारे;
अठ्ठावीश आधारे;
चतुष्पाद कहीजे;

उष्णिक नाम दीजे.

उ०—नदंव ओदतीनाम्;

नदं यो युवतीनाम;

पतिं वो अघ्न्यानाम्,

धेनूनामिषुध्यसि.

ऋ. सं. ८ मं ७ अ. ५८ सू २ मंत्र.

अर्थ—हे यजमानो! उषा अने नदियोना नाद उत्पादक इन्द्रने, हुं तमारा माटे बोलावुंछुं. यजमान! तुं दूझणी गायनी अपेक्षा राखेछे?

११ परोष्णिक् = ८, ८, १२ = २८ अक्षर.

पे'ले बीजे वर्ण आठ,
त्रीजे बार तणो ठाठ;
अट्ठाविंश वर्णनो परोष्णिक छे.

उ०—दिवो मूर्धासि पृथिव्या,

नाभिरूर्ग पामोषधीनाम्;

विश्वायुः शर्म सप्रथा: नमस्पथे

य. सं. १८ अ ५४ कं.

अग्ने वाजस्य गोमत,

ईशानः सहसो यहो;

अस्मे धे हि जातवेदो महिश्रवः.

ऋ सं १ मं. १२ अ. ७९ सू. ४ मं.

अर्थ—हे अग्नि! स्वर्गमार्गरूप तमने नमस्कार हो. तमे स्वर्गना शिरो भागमां रेहेनारा छो, पृथ्विनी नाभीमां रेहेनारा छो; औषधी अने जळना साररूप छो, सर्व प्राणियोना आयुष्यना जीवनरूप अने शरणभूत छो, अने विस्तारवाळा छो. य स. १८ अ. ६४ कं.

हे बळना पुत्र अग्नि ! तुं घणी गायो युक्त अन्ननो प्रभु छुं, माटे अमारा सारु घणुं अन्न स्थिर कर. ऋ. स.

१२ तनुशिरा, ११,११,६, = २८ अक्षर.

पे'ले बीजे हर छे षट त्रीजे,
तनुशिरा उष्णिक एन कहीजे;
अट्ठावीश कीजे.

उ०—प्रयाघोसे भृगवाणेन शोभे,
यया वाचा यजति पज्रियोवाम्;
प्रेषयुर्न विद्वान्. ॥

ऋ. सं. १ मं. १७ अ. १२० सू. ५ मंत्र.

अर्थ—हे अश्वि! जे वाणी घोषना अंगे अने भृगवाणना अंगे शोभेछे अने जेना योगे वज्रपुत्र तमने भजेछे, ते वाणीनो उत्कर्ष थाओ अने ते ईषयु प्रमाणे ज्ञानी थइने उत्कर्ष पामो.

१३ त्रिपदाउष्णिक् = ८,८,१२ = २८ अक्षर.

पे'ले बीजे आठ वर्ण,
बार तो आवेछे त्रीजे;
अट्ठावीशो त्रिपदा उष्णिक् ए छे

उ०—अग्ने वाजस्य गोमत,

ईशानः सहसो यहो;

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः ॥

ऋ. सं. १ मं. १३ अ. ७९ सू. ४ मंत्र.

अर्थ–हे अग्नि ! हे शक्तिपुत्र ! हे जातवेद ! हे गोयुक्त संपत्तिना प्रभु ! अमने पुष्कळ अन्न आप.

१४ पुरउष्णिक् = १२,८,८, = २८अक्षर

पे'ले बार वर्ण आठ बीजे त्रीजे.
एम अठ्ठावीश कीजे,
पुरउष्णिक् भणीजे.

उ०—अप्स्वन्तर मृतमप्सु भेषजम्,

अपामुत प्रशस्तये;

देवा भवत वाजिनः ।

ऋ. सं. १ मं. ५ अ. २३ सू. १९ मंत्र.

अर्थ–अमृत अने ओषध आपो देवीना अंगे छे. हे देव ! आपो देवीनी स्तुति करवा माटे तमे शक्तिमान थाओ.

१५ पिपीलिकमध्याउष्णिक् ११, ६, ११ = २८

११ ६ ११
शिव षट हर त्रिपाद क्रमे,
पिपीलिकामध्या;
उष्णिक् पाद कीडी जेवां गमे.

उ०—हरीयस्य सुयुजा विव्रताबे

रर्वन्तानुशेपा,

उभारजीन केशिना पतिर्दन्. ॥

ऋ. सं. १० मं. ९ अ. १०५ सू. २ मंत्र.

अर्थ—लीला रंगना, सारा केळवायला, सारुं काम करी शके एवा सारी चालना, जोरवाळा अने सूर्य चंद्रना जेवा प्रकाशवाळा घोडावाळा हे इन्द्र ! तुं शस्त्रादिकनी अभिलाषा धराव.

१६ ककुप्उष्णिक् = ८, १२, ८ = २८.

विषमे आठ आणजो,
बीजे बार सर्वे अट्ठावीश हजो.
ककुप्उष्णिक् नाम जो.

उ०—विद्वांसाविदुरः पृच्छेद्—

अविद्वानित्थापरो अचेता,

नूचिन्नु मर्त्ते अक्रौ ॥

ऋ. सं. १ मं. १७ अ. १२० सू. २ मंत्र.

एक अज्ञानी अने बीजा बुद्धिहीने ज्ञानवान् आश्विने ज मार्ग पूछयो. अश्विदेव मर्त्योमां अनास्था करावनार नथी ज.

१७ ककुप्न्यंकुशिरा ११, १२, ४ = २७ अक्षर.

११ १२
रुद्र रवि चार क्रमे पाद छे.
ककुप्न्युंकुशिरा उष्णिक् थायछे;
सप्तविंशो

उ—दर्दीरेक्णस्तवे दार्दिर्वसु,

दार्दिर्वाजेषु पुरुहूत वाजिनम्,

नूनमथ. ॥

ऋ. सं. ८ मं. ६ अ. ४६ सू. १५ मंत्र.

अर्थ-हे पुरुहूत् (इन्द्र)! तुं मारा शरीरने सत्वर संपत्ति आप अने वळी धन, पुत्रादि अने संग्राममां श्रेष्ठ बळ मने आप.

उष्णिक् छंदना भेद.

संख्या.	उष्णिक्.	पादाक्षर प्रमाण.					संख्या.	उष्णिक्.	पादाक्षर प्रमाण.				
१	दैवी					२	१९	विराट्					२६
२	याजुषी					७	२०	भूरिक्उष्णिक्					२९
३	प्राजापत्या					१२	२१	स्वराट्					३०
४	आसुरी					१४	२२	शंकुमती	८	८	६	६	२८
५	साम्नी					१४	२३	यवमध्या	८	१२	८		२८
६	आर्ची					२१							
७	ब्राह्मी					४२							
८	अनुष्टुप्गर्भा	५	८	८	८	२९							
९	आर्षी					२८							
१०	चतुष्पात्	७	७	७	७	२८							
११	परोष्णिक्	८	८	१२		२८							
१२	तनुशिरा	११	११	६		२८							
१३	त्रिपदा	८	८	१२		२८							
१४	पुरउष्णिक्	१२	८	८		२८							
१५	पिपीलिकमध्या	११	६	११		२८							
१६	ककुप्	८	१२	८		२८							
१७	ककुप्न्यकुशिरा	११	१२	४		२७							
१८	निचृत्					२७							

जे उष्णिक्मां पोतानां कथित प्रमाणथी बे अक्षर अधिक होयछे ते **स्वराटउष्णिक्** केहेवायछे.

जे उष्णिक्नो एकपाद पांच अक्षरनो होयछे, ते शंकुमती उष्णिक् केहेवायछे.

जे उष्णिक्नो एकपाद छ अक्षरनो होयछे, ते ककुम्मती उष्णिक् केहेवायछे.

जे उष्णिकनो आगळ पाछळना पाद मोटा होय अने वच्चेनो पाद नानो होय ते पिपीलिकमध्या उष्णिक् केहेवायछे.

जे उष्णिकनो वच्चेनो पाद मोटो अने आगळ पाछळना पाद नाना होय ते यवमध्या उष्णिक् केहेवायछे.

उपर जणावेला सर्व प्रकारना उष्णिक्नां उदाहरण वेदमांथी मळवां दुष्प्राप्य होतां जेटलां मळी शक्यां छे तेटलां आ नीचे अमे दाखल करियेछिये. अने बाकीना छंदनु सूक्ष्म रीते बोधन थवा माटे उष्णिक् छंद भूरिजादि भेद नामनुं बिम्ब आ नीचे आपेलुं छे.

उष्णिक् छंद.

भूरिजादि उपभेद बिम्ब.

अक्षर संख्या.	छंदनी जात.	उपभेद. १	उपभेद. २	रिमार्कस	अक्षर संख्या.	छंदो जात.	उपभेद. १	उपभेद. २	रिमार्कस
१	दैवी	निचृत्			२४				
२	दैवी				२५				
३	दैवी	भूरिक्			२६	आर्षी	विराट्		
४	दैवी	स्वराट्			२७	आर्षी	निचृत्		
५	याजुषी	विराट्			२८	आर्षी			
६	याजुषी	निचृत्			२९	आर्षी	भूरिक्		
७	याजुषी				३०	आर्षी	स्वराट		
८	याजुषी	भूरिक्			३१				
९	याजुषी	स्वराट्			३२				
१०	प्राजापत्या	विराट्			३३				
११	प्राजापत्या	निचृत्			३४				
१२	प्राजापत्या		आसुरी		३५				
			साम्नी वि		३६				
			राट्.		३७				
१३	प्राजापत्या	भूरिक्	निचृत्		३८				
१४	प्राजापत्या	स्वराट्	आसुरी		३९				
			साम्नी		४०	ब्राह्मी	विराट्		
१५	आसुरी	भूरिक्			४१	ब्राह्मी	निचृत्		
	साम्नी				४२	ब्राह्मी			
१६	,,	स्वराट्			४३	ब्राह्मी	भूरिक्		
१७					४४	ब्राह्मी	स्वराट		
१८									
१९	आर्ची	विराट्							
२०	,,	निचृत्							
२१	आर्ची								
२२	,,	भूरिक्							
२३	,,	स्वराट्							

निचृत् उष्णिक्. छन्दप्रमाण–१ अक्षर.

उ०—इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ:,

देवोवः सविता प्रार्पयतु;

श्रेष्ठतमाय कर्मणे.

य. सं. १ अ. १ कं.

अर्थ:–हे शाखा! तने हुं वृष्टिने माटे छेदुं छुं. अने बळ तथा रस माटे तने सरखी करूं छुं. हे वत्सो! तमे तमारी माताओथी छूटा पडी बीजे स्थळे जाओ. हे गायो! प्रेरक अने प्रकाशमान परमेश्वर सविता देव, यज्ञरूपी श्रेष्टमां श्रेष्ठ कर्म माटे तृणादिकथी खीलेला जंगलमां तमने मोकलो.

विराट् उष्णिक्. छन्दप्रमाणाक्षर–२ अक्षर.

उ०—द्रुतंगायत्रं नकवनस्याहम्–
चिद्धिचिरे भाविनावाम्–
आक्षी शुभस्पतीदम्. ॥

"भवदेवः"

भूरिज् उष्णिक्. छन्दप्रमाणाक्षर+१ अक्षर.

भूरिक् उष्णिक्मां करजे,
अक्षर अधिको एक,
गुण गाजे गोविंदना धरी विवेक.

स्वराट् उष्णिक्. छन्दप्रमाणाक्षर+२ अक्षर.

उष्णिक् छंदना ज मापे
वर्ण वधारे बे आपे;
छंदः शास्त्र पने स्वराट् उष्णिक् नामे स्थापे.

शंकुमती उष्णिक् ८, ८, ६, ६ = २८.

त्रीजे चोथे षट षट
पे'ले बीजे अष्ट अष्ट
शंकुमती उष्णिक्.
शंकुसमो जाणो.

उ०—उतासौ दैवदिति,
रुरुष्यतां नाम उग्रः,
उरुरुयन्तमवतो,
वृद्धशवशः ॥

भवदेवः

यवमध्या उष्णिक् ८, १२, ८ = २८.

यवमध्या उष्णिक् के'जे,
लघु चरणो पे'लो त्रीजा करजे,
वच्चेनुं मोटुं धरजे.

उ०—सुदेवः समहासति,
सुवीरोनरो मरुतः स मर्त्यः ।
यंत्रायद्धे स्याम ते ॥

ऋ. सं. ४ अ ३ अ १३ व १५ मं.

अर्थः—हे पूजनीय देवताना गण ! तमे जे माणसनुं रक्षण करोछो, ते कल्याणवाळो, नायक, बहादुर, अने सारा पुत्रादिकथी जोडायलो थायछे. अमे तमारा दास थवा इच्छिए छिये.

अनुष्टुप्.

आद्य सप्त वर्गना छंदमांनो आ त्रीजो छंद छे. गायत्री छंद पोताना पादाक्षरथी वृद्धिगत थतां आ छंद थायछे, तेथी स्तोभति वृद्धार्थः प्रमाणे एनुं नाम अनुष्टुप् पडेलुं छे. ब्राह्मणमां कह्युं छे के **गायत्रीमेव त्रिपदां सतीं चतुर्थेन पादेनानुष्टोभति इति.** गायत्री छंद त्रिपाद छे, ते चोथा पादथी वृद्धि पामेछे तेथी अनुष्टुप् केहेवायछे.

आ छंदनुं गोत्र गौतम छे, वर्ण पिशंग छे; स्वर गांधार छे अने देवता सोम छे.

आ छंदना मुख्य भेद ८ छे; तेनां नाम नीचे प्रमाणे छे.

१ दैवी अनुष्टुप्. २ याजुषी अनुष्टुप्.
३ आसुरी अनुष्टुप्. ४ प्राजापत्या अनुष्टुप्.
५ साम्नी अनुष्टुप्. ६ आर्ची अनुष्टुप्.
७ ब्राह्मी अनुष्टुप्. ८ आर्षी अनुष्टुप्.

उपर जणावेला आर्ष अनुष्टुप्ना नीचे जणावेला उपभेद पादाक्षरने लीधे पडेछे.

१. त्रिपाद् अनुष्टुप्.
२. कृसनुष्टुप्.
३. पिपीलिकमध्याअनुष्टुप्.
४. चतुष्पदाअनुष्टुप्.
५. नष्टरूपाअनुष्टुप्.
६. महापदपंक्तिअनुष्टुप्.
७. काविराट्अनुष्टुप्.

जे अनुष्टुप् छंद पोतानां केहेवामां आवेलां प्रमाणथी एक अक्षरे ओछो होय ते निचृत् अनुष्टुप् केहेवायछे.

जे अनुष्टुप् छंद पोताना प्रमाणथी बे अक्षरे ओछो होय ते **विराट् अनुष्टुप्** केहेवायछे.

जे अनुष्टुप् छंद पोताना कथित प्रमाणथी एक अक्षरे अधिक होय ते भूरिक् अनुष्टुप् केहेवायछे.

जे अनुष्टुप् छंद पोताना कथित प्रमाणथी बे अक्षरे अधिक होय अर्थात् जेमां बे अक्षर वधारे होय ते **स्वराट अनुष्टुप्** केहेवायछे.

अनुष्टुप्.

१ दैवी अनुष्टुप् = ३ अक्षर.

त्रि वर्ण. १
अनुष्टुप्. २
दैवी ते. ३

उ०—इषे त्वा. १
ऊर्जे त्वा. २

य. सं. १ अ १ कं.

अर्थः—हे शाखा ! वृष्टि माटे तने हुं छेदुंछुं. अने बळमाटे सरखी करुंछुं.

२ याजुषी अनुष्टुप्. = ८ अक्षर.

याजुषी अनुष्टुप् आठ १.
छंद वर्ण तणो ठाठ. २.

उ०—वरुणस्त्वा धूपयतु.

य. सं. ११ अ. ६० कं.

अर्थ—वरुण तनें अश्व सकृज्जन्य धूपथी संस्कारो.

३ आसुरी अनुष्टुप्. १३ अक्षर.

आसुरी अनुष्टुप् थाय;
तेर गणाय.

उ०—भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम्.

य. सं. १ अ. १८ कं.

अर्थ- हे कपालो ! तमे भृगु अने अंङ्गिरानां तपोऽग्नि-थी तपायमान थाओ.

४ प्राजापत्या अनुष्टुप्. = १६ अक्षर.

अनुष्टुप् प्राजापत्य जे,
सोळ वर्णनो पूरो ते.

उ०—देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्टेऽधिनाके.

य. सं. १ अ. २२ कं.

अर्थ—हे पुरोडाश ! तने सविता देवता अत्यन्त वृद्धि पामेला द्युलोकवर्ति अग्निमां पकावो.

५ साम्नी अनुष्टुप्. = १६ अक्षर.

साम्नी अनुष्टुप् सोळनो,
एकंदरे ए तोलनो.

उ०—तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पा आयुर्मेपाहि.

य. सं. २२ अ. ९ कं.

अर्थ- हे निष्क ! तुं तेज छो. अग्निनुं वीर्य छो, अमृत रूप छो, अने आयुषनुं रक्षण करनार छो; माटे मारा आयुष्नुं रक्षण कर.

६ आर्ची अनुष्टुप् = २४ अक्षर.

आर्ची अनुष्टुप् करजो,
गायत्री त्रिपद समजो,
प्रभु नाम उच्चरजो.

उ०—सवितुर्वः प्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥

य. सं. १ अ. १२ कं.

अर्थः—हे जळ (देव) सविता प्रेरकना प्रसव वखते अमे छिद्रविनाना पवित्रांथी अने सूर्यना किरणथी उत्कर्ष साथे तमारुं शोधन करिये छिये.

७ ब्राह्मी अनुष्टुप् = ४८ अक्षर.

ब्राह्मी अनुष्टुप् रचवा रूडी रीते,
अडतालीश अक्षर आणो प्रीते;
बार आठनां पाद कदापि आवे,
तेनी संख्या आणो ज्यम ज्यम फावे.

उ०—समग्निरग्निनागतसं दैवेन सवित्रा सं
सूर्येणा रोचिष्ट ॥ स्वाहा समग्निस्तपसा
गतसं दैव्येन सवित्रा सं सूर्येणारूरुचत ॥

य. सं. ३७ अ. १५ कं.

अर्थः—जे अग्नि (धर्म) अग्नि साथे एक थायछे, जे सविता देवनी साथे एक थायछे; ते सूर्यथी प्रकाशेछे. स्वाहा-

सहित अग्नि सूर्य साथे एक थायछे; ए सविता देवनी साथे एक थायछे अने सूर्यनी साथे सारी रीते प्रकाशेछे.

८ विराट् अनुष्टुप् = १०, १०, १० = ३० अक्षर
११, ११, ११ = ३३ अक्षर

त्रणे पदे दश वा अगियार,
त्रीश वा तेत्रीश अक्षर बधा धार.
विराट अनुष्टुप् जो रचनार.

उ०—प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो-
अजस्रया सूर्म्या यविष्ठ;
त्वा॒ शश्वन्त उपयन्ति वाजाः

य. सं. १७ अ. ७६ कं.

दुही यन्मित्रधितये युवाकु;
राये च नो मिमीतं वाजवत्यै;
इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै.

ऋ. स. १ मं. १७ अ. १२० सू. ९ मं.

अर्थ—हे युवतम ! हे अग्नि ! तुं अमारी पासे तपावेला लोढाना जेवा प्रकाशथी देदीप्यमान था. कारण (सौ) अन्न अने हवि तारामांथी मेळवे छे. (य. स.)

हे अश्वि ! तमारी मित्रता माटे आ जनोए गाय दोही छे; तो तमे अमने अन्नायुक्त संपत्ति आपो. वळी अमने गो-युक्त संपत्ति पण आपो.

९ आर्ष अनुष्टुप्. ३२ अक्षर.

पद पदनां प्रमाणने,
तजी बत्रीश आणने,
वर्ण पूरा ए अनुष्टुप्,
आर्ष नामे थाय सारो.

उ०—ततो विराड जायत विराजो अधिपुरुषः

सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः

य. सं. ३१ अ. ५ कं.

अर्थ—ते आदि पुरुषमांथी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थइ. अने तेमां ते देहना अभिमानी पुरुष, सर्व वेदांतथी जाणवा योग्य एवा परमात्मा पुरुष जीव रूपे प्रवेश करी, ब्रह्मांडना अभिमानी देवता जीवरूप थया. पछी ते पशु, पक्षी अने मनुष्यादि रूप थया. देवादिक जीवरूप थया पछी पृथ्वीने उत्पन्न किधी. पछी तेमनां शरीर सात धातुथी उत्पन्न थयां.

१० त्रिपाद अनुष्टुप्. १२, १२, ८ = ३२ अक्षर.

बार बार ने आठना त्रण पाद,
मळी वर्ण बधा बत्रीश निर्वाद;
त्रिपाद अनुष्टुप् थाय.

उ०—पर्यूषु प्रधन्व वाजसातये,

परि वृत्राणि सक्षणिः;

द्विषस्तरध्या ऋणयानईयसे.

ऋ. सं. ९ मं. ७ अ. ११० सू. १ मं.

अर्थ–हे सोम ! अमने सारां अन्न आपवा अर्थे तुं तत्पर था. अने सहनशील थइ अमारा शत्रुओने हठाव. अमारां करजने उतारनार तुं अमारा शत्रुने हणवाने तत्पर था.

११ कृत्यनुष्टुप्. १२, १२, ८= ३२ अक्षर.

वार वार ने आठना त्रण,
बत्रीश वर्णे छंद रचाय तेने,
कृत्यनुष्टुप् केहेवाय.

उ०—माकस्मै धातमभ्य मित्रिणे नो,(११)

मा कुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवोगुः, (११)

सना भुजो आशिश्वीः ॥ (७)

ऋ. म. १ सं. १७ अ. १२० सू ८ मंत्र.

अर्थ–हे अश्वि ! तमे अमारो कोई पण शत्रुसाथे प्रसंग पाडशो नहि. अमारी दुझणी गाय वाछरडाने नांखी दइ अमारा घरमांथी अजाणे स्थळे न जाओ.

१२ पिपीलिकमध्यानुष्टुप्. १२, ८, १२=३२

पे'ले त्रीजे बार, बीजे आठ धरो,
बत्रीश अक्षर पूरी
पिपीलिकमध्या अनुष्टुप् करो.

उ०—पर्यूषु प्रधन्व वाजसातये,

परिवृत्राणि सक्षणिः;

द्विषस्तरध्या ऋण्या न ईयसे.

ऋ. सं. ९ मं. ७ अ. ११० सू. १ मं.

अर्थ—हे सोम! अमने सारां अन्न आपवा अर्थे तुं तत्पर था अने सहनशील थइ अमारा शत्रुओने हठाव. अमारां करज उतारनार तुं अमारा शत्रुओने मारवाने तैयार था.

१३ चतुष्पदा अनुष्टुप्. ८, ८, ८, ८ = ३२

चारे आठ रखाय छे,
बत्रीश वर्ण थाय छे;
ए चतुष्पदा अनुष्टुप्
चार पाद तणुं रूप.

उ०—पुराभिन्दुर्युवाकवि,

रमितौजाऽजायत;

इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो,

धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥

ऋ. सं. १ मं. ३ अ. ११ सू. ४ मंत्र.

अर्थ—जे इंद्र जन्म्यो, ते शत्रुनां नगर तोडनार, युवान, डाह्यो, अमित पराक्रमी, सकळ कर्मनो पोषक, वज्र धारण करनार अने घणाओथी वखाण पामनार थयो.

१४ नष्टरूपा अनुष्टुप् ९, १०, १३ = ३२ अक्षर.

नव दश तेर क्रमे छे;
बत्रीश वर्ण त्रणे पदे छे;
नष्टरूपा अनुष्टुप् छंद केहेछे.

उ०—विपृच्छामिपाक्या ३ न देवान्,

वषट्कृतस्याद्भुतस्यदस्रा,

पातं च सह्यसो युवं चरभ्यसोनः ॥

ऋ. सं. १ मं. १७ अ. १२० सू. ४ मं.

अर्थ—हुं अप्रौढ बुद्धिना देवनी प्रार्थना करतो नथी; पण तमारी ज प्रार्थना करुं छुं. तो हे अद्भूत कर्मकर्त्ता अश्वी ! वषट् बोलीने अर्पेलो अमारो आ आश्चर्यकारक अति बळवान सोम तमे पीओ अने अमने पराक्रमी करो.

१५ महापदपंक्ति अनुष्टुप्. ५, ५, ५, ५, ५, ६=३१

१ पांच पांचनां,
२ छट्ठुं छ रसनुं,
३ अक्षर बधा,
४ एकत्रीश छे,
५ ए महापद
६ पंक्ति अनुष्टुप् छे.

उ०—तवस्वादिष्टा—

अग्नेसंदृष्टि,

रिदाचिदह्न,

इदाचिदक्तोः,

श्रियेरुक्मोन,

रोचतउपाके.

ऋ. सं. ४ मं. १ अ. १० सू. ५ मं.

अर्थ—हे अग्नि ! तारी अति प्रिय लागती ज्वाळा दिवस अने रात्रिनी आ घडीमां पदार्थने आश्रय आपवाने माटे संनिधिमां प्रकाशे छे.

१६ काविराट् अनुष्टुप् ९, १२, ९, = ३० अक्षर.

नव आणे पे'ले ने त्रीजे,
धरी बीजे बार त्रीश करी दीजे,
काविराट् अनुष्ट् कहीजे.

ता॒वि॒द्वांसा॑ हवामहे वा॒ं,
ता॒नो॑ वि॒द्वांसा॒ मन्म॑ वोचे तम॒द्य;
प्रा॒र्च॑द्दय॑मानो॒ यु॒वाकु॑: ॥

ऋ. स. १ मं. १७ अ. १२०. सू ३ मं.

हे अश्वि! तमे ज्ञानीने अमे बोलावियें छियें. तमे ज्ञानी आज अमने स्तोत्र शीखवो. आ तमारो भक्त हवि अर्पण करी गाय छे.

अनुष्टुप् छंद.

भूरिजादि उपभेद बिम्ब.

अक्षर संख्या.	छंदो जात.	उपभेद.		रिमार्कस	अक्षर संख्या.	छंदो जात.	उपभेद.		रिमार्कस
		१	२				१	२	
१	दैवी	विराट्			२२	आर्ची	विराट्		
२	,,	निचृत्			२३	आर्ची	निचृत्		
३	,,	०			२४	आर्ची	०		
४	दैवी	भूरिक्			२५	आर्ची	भूरिक्		
५	दैवी	स्वराट्			२६	आर्ची	स्वराट्		
६	याजुषी	विराट्			३०	आर्षी	विराट्		
७	याजुषी	निचृत्			३१	आर्षी	निचृत्		
८	याजुषी	०			३२	आर्षी	०		
९	याजुषी	भूरिक्			३३	आर्षी	भूरिक्		
१०	याजुषी	स्वराट्			३४	आर्षी	स्वराट्		
११	आसुरी	विराट्			४६	ब्राह्मी	विराट्		
१२	,,	निचृत्			४७	ब्राह्मी	निचृत्		
१३	आसुरी	०			४८	ब्राह्मी	०		
१४	आसुरी	भूरिक्	प्राजापत्य विराट् साम्नी.		४९	ब्राह्मी	भूरिक्		
					५०	ब्राह्मी	स्वराट्		
१५	,,	स्वराट्	निचृत्						
१६	प्राजापत्य साम्नी	०							
१७	,,	भूरिक्							
१८	,,	स्वराट्							

आठ प्रकारना अनुष्टुप्ना निचृत् भूरिजादि भेद माटे जुवो नीचेनुं बिम्बः—

अनुष्टुप् छंदना भेद.

संख्या.	अनुष्टुप्.	पादाक्षर प्रमाण.						संख्या.	अनुष्टुप्.	पादाक्षर प्रमाण.
१	दैवी						३	२०	स्वराट्	३४
२	याजुषी						८	२१	शंकुमती	
३	आसुरी						१३	२२	ककुम्मती	
४	प्राजापत्या						१६	२३		
५	साम्नी						१६			
६	आर्ची						२४			
७	ब्राह्मी						४८			
८	विराट्	१०	१०	१०			३०			
	,,	११	११	११			३३			
९	आर्षी						३२			
१०	त्रिपाद्	१२	१२	८			३२			
११	कृत्स्नानुष्टुप्	१२	१२	८			३२			
१२	पिपीलिकमध्या	१२	८	१२			३२			
१३	चतुष्पदा	८	८	८	८		३२			
१४	नष्टरुपा	९	१०	१३			३२			
१५	महापदपंक्ति	५	५	५	५	६	३१			
१६	काविराट्	९	१२	९			३०			
१७	निचृत्						३१			
१८	भुरिक्						३३			
१९	विराट्						३०			

१ निचृत् अनुष्टुप्. छन्दप्रमाणाक्षर–१ अक्षर.

छन्द माप होय जेवुं
लावतां ए थाय एवुं
वर्ण एक ओछो थाय,
निचृत् अनुष्टुप् कथाय.

द्वेषस्ते धूम ऋण्वति,
द्विविषच्छुक्र आततः ।
शूरो नहि द्युतात्वम् ।
कृपा पावक रोचन ।

(भवदेव)

२ भूरिक् अनुष्टुप्.

छंद माप होय जेवुं,
रचतां तो तेना जेवुं;
वधे तेमां वर्ण एक,
अनुष्टुप् भूरिक् विवेक.

तां म आवह जात वेदो,
लक्ष्मी मनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं,
ग्रामश्व पूरुषानहम्० ॥

३ विराट् अनुष्टुप् छंन्दोऽक्षर संख्या–२

बे घटे पादमां
विराट् अन्टुपूना पादमां
सरवाळे मुनिवरो एम के'छे,

यदिवीरो अनुष्या–
अग्निमिन्धानमर्त्यः ।
अजुहव द्रव्य मानुषक.

सामवेद पू. प्र. १. अ. २ म.

४ स्वराट् अनुष्टुप्. छन्दाक्षर संख्या-२

अनुष्टुप् स्वराट् रचतां,
छन्दाक्षरना मापथी वधे बे जो
के'वाय अनुष्टुप् स्वराट् ए तो.

लवणाम्भसिजातोऽसि,
उग्रोऽसि हृदयं तव; ।
लवणस्य पृथिवी माता,
लवणस्य वरुणः पिता. ।

भवदेव.

खारा पाणीमां तुं उत्पन्न थयो छुं, तारूं हृदय उग्र छे; पृथ्वी लवणनी माता छे, अने वरूण लवणनो पिता छे.

भगवान् पिंगळाचार्यना केहेवा प्रमाणे आ छंदना नीचे जणावेला चार सामान्य भेद पण पडी शके छे.

१ शंकुमती अनुष्टुप् २ ककुम्मती अनुष्टुप्
३ पिपीलिकमध्याअनुष्टुप् ४ यवमध्याअनुष्टुप्

जे अनुष्टुप्नो एक पाद पांच अक्षरनो होय ते शंकुमती अनुष्टुप् केहेवाय छे. जेनो एक पाद छ अक्षरनो होय ते ककुम्मती अनुष्टुप् केहेवाय छे. जेना आद्यन्त पाद मोटा अने वच्चेनो पाद नानो होय छे ते पिपीलिकमध्याअनुष्टुप् केहेवाय छे अने जेना आद्यन्तपाद नाना अने वच्चेनो पाद मोटो ए यवमध्याअनुष्टुप् केहेवाय छे.

१ शंकुमती अनुष्टुप्.

एक पांचनो,
पाद अनुष्टुप् आदिमां;
शंकुमती अनुष्टुप् ए,
शंकाविना के'वाय ते.

पितुं नु स्तोषम् ।
महो धर्माणं तविषीम् ।
यस्य त्रितो व्योजसा,
वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥

ऋ. सं. १ मं. २४ अ. १८७ सू. १ मं.

हुं अगस्त्य जल्दी पोषण आपनार अन्ननी स्तुति करुंछुं. मोटा धर्मनी पण स्तुति करुं छुं. ए अन्नना बळ वडे त्रिलोक ख्यात इन्द्रे वृत्र राक्षसना टुकडे टुकडा करी नाख्या.

२ ककुम्मती अनुष्टुप्.

छ वर्णनो पे'लो
बाकी जेना तेना मेलो,
ककुम्मती अनुष्टुप् ए के'वाय छे.

सपूर्व्योमहोनां,
वेनःक्रतुभिराजते,
यस्यद्वारामनुःपिता,
देवेषु धिय आनजे.

सामवेद. ४ अ. २ ख. ४ मं.

बृहती.

आद्य सप्तवर्गनो आ चोथो छंद छे. एनो अर्थ मोटी एवो थाय छे. केटलाक अनुष्टुप् छंदना पादमां अकेक अक्षर वधवाथी आ छंद थाय छे माटे बृहती वृष्टहतेर्वृद्धिकर्मणः ए उपरथी बृहती केहेवाय छे. एनुं गोत्र आंगिरस छे, वर्ण कृष्ण छे, स्वर मध्यम छे, अने एना देवता बृहस्पति छे.

आ छंदना मुख्य भेद ८ छे. तेनां नाम नीचे प्रमाणे छे.

१. दैवी बृहती.
२. याजुषी बृहती.
३. आसुरी बृहती.
४. प्राजापत्य बृहती.
५. आर्ची बृहती.
६. साम्नी बृहती.
७. ब्राह्मी बृहती.
८. आर्षी बृहती.

बृहतीना पाद परत्वे नीचे जणाव्या प्रमाणे उपभेद पडे छे.

१ बृहती.	२ पुरस्ताद् बृहती.
३ न्यंकुसारिणी.	४ उपरिष्टाद् बृहती.
५ विष्टार बृहती.	६ ऊर्ध्व बृहती.
७ सामान्या बृहती.	८ विषमपदा बृहती.
९ ककुम्मी बृहती.	१० पिपीलिक मध्या.

उपर केहेवामां आवेली सर्व प्रकारनी बृहती पोताना केहेवामां आवेलां प्रमाणथी एक अक्षरे हीन होय तो ते **निचृत् बृहती** केहेवाय छे, जे एक अक्षरे अधिक होय ते **भुरिक्** बृहती केहेवाय छे. वळी जेमां प्रमाण करतां बे अक्षर ओछा होय ते **विराट् बृहती** केहेवाय छे अने जेमां बे अक्षर वधारे होय ते **स्वराट् बृहती** केहेवाय छे.

अष्टविध बृहतीना निचृत् भुरिजादि भेद माटे जुओ नीचेनुं बिम्ब:—

४ प्राजापत्य बृहती = २० अक्षर.

प्राजापत्य बृहती वीश वर्णनो
वेद विषे ए छंद छे.

पृथिव्यास्त्वानाभौ सादयाम्यदित्या-

उपस्थेऽग्ने हव्यꣳरक्ष. ॥

य. सं. १ अ. ११ कं.

हे हवि! जेम सूतेलां बाळकने माता पोताना खोळामां मूके छे तेम पृथ्वीनी नाभीमां हुं तने स्थापुंछुं. हे अग्नि! तारी पासे स्थापेला ए हविनुं रक्षण कर.

५ ब्राह्मीबृहती = ५४ अक्षर.

जाणी बृहती रचवा माटे आणो
एकन्दरे चोपन अक्षर जाणो.
एमां सृष्टि रचना खूब वखाणो,
वेद विषे आ छंद घणो गवाणो
प्रभुनी लीलामां.

विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानु

६ साम्नीबृहती = १८ अक्षर.

साम्नी बृहती अढार अक्षरनो छंद वेदमां छे.

इन्द्रस्यत्वा भग ꣳसोमेना तनाच्मि

विष्णोहव्यꣳरक्ष ॥

य. स. १ अ. ४ कं.

हे क्षीर! हे इन्द्रभाग! तने सोमवल्ली रसथी घी बनाववा माटे हुं कठण करूं छुं. हे विष्णु! आ हव्य क्षीरनी तमे रक्षा करो.

७ आर्ची बृहती=२७ वर्ण.

आर्ची बृहती सत्तावीश वर्णनो
वेदविषे रचनामां आण्यो तेथी जाण्यो छे.

८ आर्षबृहती = ३६ अक्षर.

बृहती छंद तो बनावो,
छत्रीश वर्ण वधा लावो,
पद नियम मने न धरशो,
आर्ष बृहती मांह,

उ०-परीतो षिञ्चता सुतꣳ सोमो य उत्तमꣳ
हविः दधन्वा योनर्यो अप्स्वन्तरा
सुषाव सोम मद्रिभिः ॥

य. सं. १९ अ. २. कं.

हे ऋत्विज! गायमांथी दोवामां आवेला दूधथी परिसुदरूप सोमनुं तमे परिसिंचन करो. सर्व हविमां सोम उत्तम हवि छे. जे मनुष्यना हितने माटे जळना मध्यमां काहाडवामां आवे छे.

९ बृहती. १२,८,८,८=३६ अक्षर.

१०,१०,८,८ = ३६ अक्षर.

एक पाद बार वर्णनो बने छे,
बाकीना त्रण आठना,
एम छत्रिस ठाठना,
वर्णनी बृहती बने.

दश तो प्रथमे तथा बीजे,
आठ वर्ण आवे चोथे त्रीजे,
एम वर्ण छत्रीशनी
बृहती बने छे वळी. २

उ०–शचीभिर्नः शचीवसू
दिवानक्तं दशस्यतम् ॥
मावांरातिरुपदसत्
कदाचनास्मद्रातिः कदाचन ॥

ऋ. सं. १ मं. २० अ. १३९ सू. ५ मं.

अग्ने विवस्व दुषश्चित्रं ।
राधो अमर्त्य आदाशुषे ।
जातवेदा वहत्व ।
मद्यादेवा उषर्बुधः ॥
(अवदेवः)

हे पराक्रम पूर्ण अग्नि! तमे तमारा पराक्रमथी दिवसे अने रात्रे अमारी सहाय करो. तमारी कृपा क्यारे पण नष्ट न थाओ. अमारा उपरथी तमारी कृपा क्यारे पण नाश न पामो.

१० पुरस्ताद्बृहती १२,८,८,८ = ३६ अक्षर.

पेहेलो पाद बार वर्णनो यने,
बाकीना त्रण आठना;
एम छत्रीश वर्णनी.

पुरस्ताद्बृहती बने,

उ०—महोयस्पतिः शवसोऽ असाम्या ।

महो नृम्णस्य तूतुजिः

भर्त्ता वज्रस्य धृष्णोः,

पिता पुत्रमिव प्रियम्.

ऋ. सं. ७ अ. ७ अ. ६ व. ३ मंत्र.

जे इन्द्र मोटो बलवान्, अनन्तगुणवाळो, मागनाराओने घणुं धन आपनारो, शत्रुओने वज्र जेवो छे, ए वज्रधारी इन्द्र, पिता जेम पुत्रनी रक्षा करे छे तेम, अमारी रक्षा करो.

११ न्यंकुसारिणी ८, १२, ८, ८ = ३६ अक्षर.

पे'ले त्रीजे आठ आवे,
बीजे बार चोथे आठ वर्ण लावे;
छत्रीशे न्यंकुसारिणी,
स्कंधोग्रीवी, उरो बृहती.

उ०—मत्स्य पायिते महः

पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः,

वृषाते वृष्ण इन्दु ।

र्वाजी सहस्रसातमः ॥

ऋ. सं. १ मं. २३ अ. १७५ सू. १ मंत्र.

हे हर्यश्व! (इन्द्र) मदकारी महान् सोमनो प्याळो ग्रहण करे छे तेमनुं भक्षण कर अने हर्ष पाम. तुं बळवन्तने माटे, बळवान्, संपत्तिवान् अने हजार दान उत्तम रीते आपनार सोमरस अर्पण कर्यो छे.

१२ उपरिष्टाद्बृहती. ८, ८, ८, १२ = ३६ अक्षर,

पे'ले बीजे त्रीजे आठ,
चोथे बार तणो ठाठ;
एम छत्रीश वर्णनी,
उपरिष्टाद् बृहती छंद रचाय.

उ०—यदर्जुन सारमेय-
दंतःपिशंग यच्छसे; ।
बीव भ्राजन्त ऋष्य
उपस्रक्केषु बप्सतो निषुस्वप.

ऋ. सं. ७ मं. ३ अ. ५५ सू. २ मंत्र.

हे अर्जुन! हे सारमेय! हे पिंगल वर्ग शुनक! तुं ज्यारे अमने दंशवाने माटे तारा दांत देखाडे छे; त्यारे तेजोमय ऋषि नामना आयुध जेवो प्रकाश आपे छे. तुं खाय छे त्यारे तारा ते दांत ओष्ठमां देखाय छे. तुं अमारी पासे राते निद्रा कर.

१३ विष्टारबृहती ८, १०, १०, ८ = ३६ अक्षर.

पे'ले चोथे आठ आवे,
बीजे त्रीजे वर्ण दश लावे;
एम छत्रीस वर्णनी थाय,
विष्टारबृहती गाय.

उ०—युवं ह्यास्तं महोरन्यु
बंवायन्निर ततं सतम् ।

तानो वसूसु गोपा स्यातम्—
पातं नो वृकादधायोः ।

ऋ. सं. १ मं. १७ अ. १२० सू. ७ मंत्र.

तमे धनना दाता छो, हर्ता पण तमे ज छो. हे शुभकारी देव! तमे अमारा रक्षक थाओ अने घातक दुष्टोथी अमारी रक्षा करो.

१४ ऊर्ध्वबृहती. १२, १२, १२ = ३६ अक्षर.

त्रणे पाद बार वर्णना आणजो,
त्रणेना वर्ण छत्रीश प्रमाणजो;
सतो, ऊर्ध्व, महाबृहती, जाणजो.

उ०—अग्नेऽभ्यावर्त्तिन्नभिमा निवर्त्त.
स्वायुषा वर्चसा प्रजया धनेन;
सन्यामेधया रय्या पोषेण.

य. सं. १२ अ. १०७ कं.

अमारा तरफ संमुख मोंथी आवनारा हे अग्नि! तमे मारी पासे आयुष्य, ब्रह्मवर्चस्, पुत्रपौत्रादिक धन, लाभ, सारी बुद्धि, सुवर्णालंकार, अने आयुष्य आदि पुष्टि साथे लइने सत्वर आवो.

१५ चतुष्पदासामान्या बृहती. ९,९,९,९ = ३६

नव नव वर्णना चारे,
पाद छत्रीश करो ज्यारे;
त्यारे चतुष्पदा सामान्या
चतुर्नवका बृहती छे.

उ०–तत्वावयं पितो वचोभि–

गावोनहव्या सुषूदिम्

देवेभ्यस्त्वा सधमाद–

मस्मभ्यं त्वा सधमादम् ॥

ऋ. सं. १ मं. २४ अ. १८७ सू. ११ मं.

हे सोमरूप अन्न! अमारा अने इन्द्रादि देवोने माटे गायो जेवी रीते हविष् उत्पन्न करे छे तेम मादक अने होमातां शेष रहेल ताराथी अमे सोमरस उत्पन्न करिये छिये. हे महानुभाव! अमे तने स्तुतिरूप वाणीथी उत्पन्न करिये छिये.

१६ विषमपदाबृहती. ९, ८, ११, ८ = ३६.

पे'ले नव त्रीजो रुद्र छे,
बीजे चोथे आठ आवे;
अेम छत्रीशनी बने छे सारी,
विषमपदा बृहती

उ०––सनितः सुसनितरुग्र ।

चित्र चेतिष्ट सुनृत ।

प्रासहा सम्राट् सहुरिं सहन्तं ॥

भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।

ऋ. सं. ८ मं. ६ अ. ४६ सू. २० मंत्र.

हे सम्भक्त ! हे दाता ! हे उग्र ! हे चित्र स्वभाववान् ! हे अत्यन्त चेष्टा करनार ! हे सत्यरूप ! हे साम्राट् ! भोगथी शकाय अने मुख्य गणाय एवुं धन अमने संग्राममां आप.

१७ ककुम्मती बृहती. ६, ८, ८, १२ = ३४ अक्षर.

लावो षट पे'ले,
बीजे पादे आठ वर्ण;
तेटला त्रीजे चरण.
बार चोथे ककुम्मती बृहती छे.

उ०—इन्द्रं याहिमत्सु,
चित्रेण देव राधसा;
सयोनः प्राप्युत्तरम्;
सपीति भिरासोमेभिरुरुस्थिरम् ॥

(भवदेव.)

१८ पिपीलिकमध्याबृहती. १३, ८, १३ = ३४ अक्षर.

तेर वर्णना पाद पे'ले त्रीजे आवे,
आठ वर्ण बीजे लावे;
चोत्रीशे बृहती छे पिपीलिकमध्या.

उ०—अभिवो वीरमन्धं सोमदेषु गाय-
गिरामहा विचेत समः;
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥

ऋ. सं. ८ मं. ६ अ. ४६ सू. १४ मंत्र.

हे यजमानो ! तमारा हितने माटे सोम रसना मदमां

आवी शत्रुओने दमनार श्रेष्ठ बुद्धिवाळा सर्वत्र प्रशस्य, शक्तिमान् एवा इन्द्रनी मोटी स्तुतिथी यथाशक्ति स्तुति करो.

१९ निचृत्बृहती.

अक्षर बृहती जेटला
धरतां एक घटे ज्यारे,
निचृत्बृहती एहने तो
केहजो कविवर! कोडथी.

उ०—बलं धेहि तनूषु नो,

बलं मिन्द्रानळुत्सुनः,

बलं तोकाय तनयाय,

जीवसे त्वांहि बलदाऽसि.

हे इन्द्र ! अमने शरीरमां बळ आप. अमारा बळदोने बळ आप. अने लांबु आयुष्य भोगववा माटे अमारा पुत्र अने पौत्रोने पण बळ आप. तुं खरेखर बळ आपवावाळो छे.

२० विराट् बृहती.

वर्ण गणतां बृहतीमां,
एकन्दरे घटे जो बे
अक्षर एने केहजोजी
विराट् बृहती बलवती.

उ०—अग्ने विवस्व दुषसः
चित्रं राधो अमर्त्य ।
आदाशुषे जातवेदा वहात्व,
मद्यादेवा उषर्बुधः ॥

(भग्वेद)

२१ ककुंमती बृहती.

पे'ले धर षट्,
बीजा छंदना चरपद,
ककुम्मती बृहती कवि
वनशे, गमशे छे नवी.

उ०—इन्द्रं याहि मत्सु,
चित्रेण देव रोधसा;
सयोनः प्राप्त्युदरं,
सपीतिभिरासोमेमिरुरुस्थिरं ॥

(भवदेवः)

२२ पिपीलिकमध्या बृहती.

छेल्लो पे'लो पाद करजो प्रीतिथी
मोटो मध्यपादथी
पिपीलिकमध्या बृहती रीतिथी.

उ०—अवीभो वीरमध्यसीम देषुगाय,
गिरे सह्रा विचेतम् ।
इन्द्रं नाम शून्यं शाकिनं वचो यथा.

भवदेव.

बृहती छंदना भेद.

संख्या.	बृहती.	पादाक्षर प्रमाण.				
१	दैवी					४
२	याजुषी					९
३	आसुरी					१२
४	प्राजापत्या					२०
५	साम्नी					१८
६	आर्ची					२७
७	ब्राह्मी					५४
८	आर्षी					३६
९	बृहती	१२	८	८	८	३६
	बृहती बीजी..........	१०	१०	८	८	३६
१०	पुरस्ताद्बृहती........	१२	८,	८	८	३६
११	न्यंकुसारिणी..........	८	१२	८	८	३६
१२	उपरिष्टात् बृहती.......	८	८	८	१२	३६
१३	विष्टार बृहती..........	८	१०	१०	८	३६
१४	उर्ध्व बृहती..........	१२	१२	१२	०	३६
१५	चतुष्पदा..........	९	९	९	९	३६
१६	विषमपदा..........	९	८	११	८	३६
१७	ककुम्मती..........	६	८	८	१२	३४
१८	पिपीलिकमध्या	१३	८	१३		३४
१९	निचृत् बृहती..........	......	......	......	......	३५
२०	विराट्..........	......	......	......	......	३४
२१	पिपीलिकमध्या	......	......	......	......	छत्रीसथी वधारे अ.नहि.

पंक्ति

आद्यसप्तक वर्गनो आ पांचमो छंद छे. एथी " पंक्तिः पंचिन पंच पदा " एटले जेमां गायत्रीना पांच पाद रहेला छे एवो ध्वनी थाय छे माटे एने पंक्ति छंद केहे छे. आ छंदनुं गोत्र भार्गव छे. वर्ण नील छे, स्वर पंचम छे, अने देवता वरुण छे.

एना नीचे जणावेला मुख्य भेद ८ छे.

१. दैवी पंक्ति.
२. आसुरी पंक्ति.
३. याजुषी पंक्ति.
४. प्राजापत्या पंक्ति.
५. आर्ची पंक्ति.
६. साम्नी पंक्ति.
७. ब्राह्मी पंक्ति.
८. आर्ष पंक्ति.

उपर जणावेली आर्ष पंक्तिना पादपरत्वे नीचे जणावेला भेद पडे छे:—

१. जगती पंक्ति. २. संस्तार पंक्ति.
३. प्रस्तार पंक्ति. ४. सायान्या पंक्ति.
५. सतो बृहती पंक्ति. ६. पंचपदा पंक्ति.
७. चतुष्पदा पंक्ति. ८. असतो बृहती पंक्ति.
९. आस्तार पंक्ति. १०. विष्टार पंक्ति.
११. पद पंक्ति. १२. अक्षर पंक्ति.
१३. अल्पश पंक्ति.

जे पंक्तिमां पोताना प्रमाणाक्षरथी एक अक्षर ओछो होय ते निचृत् पंक्ति केहेवाय छे. जेमां बे ओछा होय ते विराट् पंक्ति केहेवाय छे.

वळी जेमां प्रमाणाक्षरथी एक अक्षर वधारे होय ते भूरिक्पंक्ति अने बे अक्षरे वधारे होय ते स्वराट् पंक्ति केहेवाय छे.

अष्ट विध पंक्तिना निचृत भूरिजादि भेद माटे जुवो नीचेनुं बिम्ब.

पंक्तिछंद.

भूरिजादि उपभेद बिम्ब.

अक्षर संख्या.	छन्दो जात.	उपभेद. १	उपभेद. २	अक्षर संख्या.	छन्दो जात.	उपभेद. १	उपभेद. २
३	दैवी	विराट्		२३	प्राजापत्या	निचृत्	
४	"	निचृत्		२४	प्राजापत्या	०	
५	दैवी	०		२५	प्राजापत्या	भूरिक्	
६	दैवी	भूरिक्		२६	"	स्वराट्	
७	"	स्वराट्		२८	आर्ची	विराट्	
८	याजुषी	विराट्		२९	आर्ची	निचृत्	
९	"	निचृत्	आसुरी विराट्	३०	आर्ची	०	
१०	याजुषी	०	आसुरी निचृत्	३१	आर्ची	भूरिक्	
११	याजुषी	भूरिक्	आसुरी	३२	"	स्वराट्	
१२	"	स्वराट्	आसुरी भूरिक्	३८	आर्षी	विराट्	
१३	आसुरी	स्वराट्		३९	"	निचृत्	
१८	साम्नी	विराट्		४०	आर्षी	०	
१९	"	निचृत्		४१	आर्षी	भूरिक्	
२०	साम्नी	०		४२	"	स्वराट्	
२१	साम्नी	भूरिक्		५८	ब्राह्मी	विराट्	
२२	"	स्वराट्	प्राजापत्या विराट्	५९	"	निचृत्	
				६०	ब्राह्मी	०	
				६१	ब्राह्मी	भूरिक्	
				६२	"	स्वराट्	

आ छंदना शंकुमत्यादि सामान्य भेद पण पडी शके छे.

पंक्ति.

दैवी पङ्क्ति. ५ अक्षर.

छे दैवी पंक्ति. १
पांच अक्षरे. २

उ०—सा विश्वकर्मा

य. सं. १ अ. ४ कं.

अर्थः—ए गाय विश्वकर्मा थाओ.

३ साम्नीपंक्ति. २० अक्षर.

साम्नीपंक्तिमां वीस आवे छे
वेदविषे आ माप लावे छे.

पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या

उपस्थेऽग्ने हव्य ँरक्ष.

य. सं. १ अ. ११ कं.

हे हवि ! जेम सूतेला बाळकने माता पोताना खोळामां मूके छे, तेम हुं तने पृथ्वीनी नाभीमां स्थापुं छुं. हे अग्नि ! तारी पासे स्थापेला ए हविनुं तुं रक्षण कर.

४ आर्चीपंक्ति. ३० अक्षर.

आर्चीपंक्ति छंद बनावे छे
त्रीश अक्षर सर्वे लावे छे,
पाद रचना नहि फावे छे.

५ आसुरीपंक्ति ११ अक्षर.

आसुरीपंक्ति अगियार वर्ण.

अपहत ँरक्षः यच्छन्ताम् पञ्च.

य. सं. १ अ. ९ कं.

यज्ञना विघातकोने निवारी अमारी रक्षा करो. पंचांगुलीयुक्त मुष्टिथी चोखा लेवा.

६ प्राजापत्यपंक्ति २४ अक्षर.

प्राजापत्यपंक्ति रुडेरो बने छे
चोवीश वर्ण एकन्दरे गणे छे.

होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया
मेदसो जुषेताँ हविर्होतर्यज.

य. सं. २१ अ. ४१ कं.

७ ब्राह्मीपंक्ति. ६० अक्षर.

ब्राह्मीपंक्ति छंद सारो,
सर्वे साठ वर्ण धारो,
पादनी गणना नहि,
वेदविषे वद्युं सहि,
तेम अहि दीधुं कँही
प्रभुपद पामवाने ए मागजो,
गुणगाई सुखी थाजो.

रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टञ्चमे पुष्टिश्च-
मे विभुचमे प्रभुचमे पूर्णञ्चमे पूर्णतर
ञ्चमे कुवयञ्चमे क्षितञ्चमे नञ्चमेऽ क्षुच्चमे
यज्ञेन कल्पन्ताम्.

य. सं. १८ अ. १० कं.

सुवर्ण, मुक्तादि मणि, धनपोषक, शरीरपोषक, व्याप्ति, सार्म्यथ, ऐश्वर्य, धन पुत्रादि बाहुल्य, गजतुरगादि बाहुल्य, कुत्सितधान्य, क्षयहीन धान्यादि, अन्न अने भुक्तान्न परिपाक ए अमे यज्ञे करी कलिये छिये.

८ आर्ष पंक्ति. ४० अक्षर.

रचो आर्ष पंक्ति धरी
वर्ण चालीश कुल छन्दमां;
जो रचो पाद तो रणपिंगलमां,
कह्युं मनधरी धरो तेमां,

उ०—इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्य पक्षः

शकुनो भरण्युः । महान् सधस्थे ध्रुव

आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मामा

हिंसीः ॥

य. स. १८ अ. ५३ कं.

हे अग्नि ! तुं के जे चन्द्रवत् आल्हादक छुं, उत्साहवान् छुं; प्रशंसनीय गतिवाळो छुं, सत्य यज्ञोदकवाळो छुं, हिरण्यनी पांखवाळो छुं, पक्षीना आकारनो छुं, पोषक छुं, प्रभावे मोटो छुं, स्थिर छुं, ब्रह्मानी साथे तुं स्थानमां रहेलो छुं, तेने हुं नमुं छुं. तुं हिंसा मा कर.

९ जगती पंक्ति. ८,८,८,८,८,८ = ४८

आठ, आठ पादे आवे,
एम छ पाद बनावे,
अडतालीश गणावे,
बधाय पादमां लावे,

ए छंदनुं नाम भावे
जगती पंक्ति वदावे.

उ०—येन स्त्रियमकृणुनं,
येनापाममृतं सुरां,
ये चेमां पृथिवीं महीं,
यत्वांतदश्विनाय,
....
यस्तेनाभिषिंचितम् ॥

(भवदेव:)

१. भगवान् कात्यनाचार्ये आ छंदनी गणना जगती छंदमां करेली छे.

९ पंक्ति. १२, १२, ८, ८=४०, अक्षर.

पाद बे बार बारना कथाय छे,
आठ आठ वर्णना बीजा थाय छे,
चालीश तो गणाय छे,
विकल्पे पंक्ति थाय छे.

उ०—भद्रं नो अपि वातय,
मनो दक्षमुत क्रतुम्;
अधाते सख्ये अन्धसो विवोमदे ।
रणन् गावो न यवसे विवक्षसे. ।

ऋ. सं. १० मं. २ अ. २५ सू. १ मं.

हे सोम! तुं अमारा मनने शुभ संकल्पवाळुं कर; अमारा अन्तरात्माने शुभकारी बनाव; अमारी प्रज्ञाने सारी

बनाव; स्तुति करनाराओ तारा मादमां गायो जेम रमे छे तेम रमो. कारण तुं महान् छुं.

१० सस्तारपंक्ति १२,८,८, १२ = ४० अक्षर.

पे'ले चोथे पाद बार तो आवे छे,
आठ बीजे त्रीजे के' छे,
सस्तार पंक्ति वदे छे,
जेना अक्षर चालीश गणावे छे.

उ०—पितु भृतो न तन्तु मित्सु दानवः,
प्रतिदध्मो यजमसि ।
उषा अप स्व सुस्तमः ।
संवर्तयति वर्तिनिं सुजातता. ।

ऋ. सं. १० मं. १२ अ. १७२ सू. ३. ४ मं.

अन्नना जाणे धणी होइये तेम सारुं दान देनारा अमे उषा देवी प्रति उपायनरुप (बोहोळां अन्नने) धारण करिये छिये. अने प्रसिद्ध यज्ञवडे एने यजिये छिये.

११ प्रस्तारपंक्ति १२,१२,८,८=४० अक्षर,

आदिना बे बार अक्षरना आणो,
पाछळना वे आठ वर्णना जाणो;
चालीश वधाय मानो,
प्रस्तारपंक्ति प्रमाणो.

उ०—भद्रमिद्भद्राकृणवत्सरस्वती,

बनाव; स्तुति करनाराओ तारा मादमां गायो जेम रमे छे तेम रमो. कारण तुं महान् छुं.

१० सस्तारपंक्ति १२,८,८, १२ = ४० अक्षर.

पे'ले चोथे पाद बार तो आवे छे,
आठ बीजे त्रीजे के' छे,
सस्तार पंक्ति वदे छे,
जेना अक्षर चालीश गणावे छे.

उ०—पितु भृतो न तन्तु मित्सु दानवः,
प्रतिदध्मो यजमसि ।
उषा अप स्व सुस्तमः ।
संवर्तयति वर्तिनिं सुजातता. ।

ऋ. सं. १० मं. १२ अ. १७२ सू. ३. ४ मं.

अन्नना जाणे धणी होइये तेम सारुं दान देनारा अमे उषा देवी प्रति उपायनरुप (बोहोळां अन्नने) धारण करिये छिये. अने प्रसिद्ध यज्ञवडे एने यजिये छिये.

११ प्रस्तारपंक्ति १२,१२,८,८=४० अक्षर,

आदिना बे बार अक्षरना आणो,
पाछळना बे आठ वर्णना जाणो;
चालीश वधाय मानो,
प्रस्तारपंक्ति प्रमाणो.

उ०—भद्रमिद्भद्राकृणवत्सरस्वती,

अर्कवारी चेतति वाजिनीवती ।

गृणाना जमदाग्निवत्,

स्तुवा नाचं वासिष्ठवत्. ॥

ऋ. सं. ७ मं. ६ अ. ९६ सू. ३ मंत्र.

कल्याण करनारी सरस्वती अमारुं कल्याण करो. अने सारी क्रियावाळी अने अन्नवाळी अमने बुद्धि आपो. तुं जमदाग्नि अने वाशिष्टनी पेठे स्तुति करातो था.

१२ सतोबृहती, सतःपंक्ति १२,८,१२,८=४० अक्षर.

पे'ले त्रीजे बार अक्षर आवे छे,
सर्व चालीश लावे छे;
बीजे चोथे आठ वर्ण गणावे छे

सतोबृहती सतःपंक्ति.

उ०—दश क्षिपः पूर्व्यं सीमजीजनत् ।

सुजातं मातृषु प्रियम् ।

अग्निं स्तुहि दैववातं देवश्रवो ।

योजना नाम सद्गुसी ॥

ऋ. सं. ३ मं. २ अ. २३ सू. ३ मंत्र.

तेजे कुलीन अने प्रिय पुरातन अग्निने दश आंगळीओ माताना पेटमां निर्माणकर्त्ता थइ. हे देवश्रवा ! देववातना अग्निने तुं स्तव के जेथी ते जनोने वश थाय.

१३ पंचपदापंक्ति. ८,८,८,८,८ = ४० अक्षर.

आठ आठना पाद छे,
सर्वे मळीने पांच छे,
पंचपदा पंक्ति करजो;
चालीश वर्णो धरजो.
तेमां प्रभुने स्मरजो.

उ०—अक्षन्नमीमदन्तह्य-

वप्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो ।

विप्रा न विष्ठ्याम,

तीयोजान्विन्द्रते हरी. ॥

ऋ. सं. १ मं. १३ अ. ८२ सू. २ मं.

कारण के हे इन्द्र! उपासक लोको, तें आपेलुं अन्न खाता थया, आनंद पाम्या, ने आनंदे नाचवा लाग्या; तेजस्वी अने बुद्धिमत् उपासक केवळ नवां स्तोत्रथी तने स्तवता थया, तो हे इन्द्र! तुं तारा पोताना घोडा सत्वर जोड़.

१४ चतुष्पदा विराटदशका.

१०, १०, १०, १० = ४० अक्षर.

दश, दशना चार पाद छे,
चालीश वर्ण बधा थाय छे;
ए पंक्ति चतुष्पदा गाय छे,
विराट् दशका वदाय छे.

उ०—अयुजन्तइन्द्र विश्वकृषी-

विदानासो निष्षिधो मर्त्यत्रा;

मरुतां पृत्सुतिर्हासि माना,

स्वर्मीह्ळस्य प्रधनस्य सातौ.

ऋ. सं. १ मं. २३ अ. १६९ सू. २ मंत्र.

हे इन्द्र ! सर्व जनोना राजा अने मर्त्यलोकमां शत्रु नाशक एवा जे ते ज्ञानी मरुत ते तैयार थया छे. उत्तम धन मेळववाना युद्धमां जय मेळववा माटे मरुतोनी सेवा स्पर्धा-युक्त थइ छे.

१५ असतोबृहतीपंक्ति ८,१२,८,१२, = ४०अक्षर.

सतूथी विपरीत आवे,
अयुज आठने युज बार लावे;
चालीश एम गणावे;
असतः पंक्ति एवुं नाम वदावे.

यऋष्मः श्रावयत्सखा,-

विश्वेत्सवेदजानि मापुरुष्टुतः ।

तंविश्वे मानुषा युग-

इन्द्रं हवन्तेत विषं यतस्रुचः ॥

ऋ. सं. ८ मं. ६ अ. ४६ सू. १२ मंत्र.

सर्व हविष् जेमां स्विकारायलां छे एवा अध्वर्युओ, इन्द्र. के जे रुपाळो छे, स्तुतिरुपी वाणी संभळावनारा ऋत्वि-

१३ पंचपदापंक्ति. ८,८,८,८,८ = ४० अक्षर.

आठ आठना पाद छे,
सर्वे मळीने पांच छे,
पंचपदा पंक्ति करजो;
चालीश वर्णो धरजो.
तेमां प्रभुने स्मरजो.

उ०—अक्षन्नमीमदन्तह्य-

वप्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो ।

विप्रा न विष्ठ्याम,

तीयोजान्विन्द्रते हरी. ॥

ऋ. सं. १ मं. १३ अ. ८२ सू. २ मं.

कारण के हे इन्द्र! उपासक लोको, तें आपेलुं अन्न खाता थया, आनंद पाम्या, ने आनंदे नाचवा लाग्या; तेजस्वी अने बुद्धिमत् उपासक केवळ नवां स्तोत्रथी तने स्तवता थया, तो हे इन्द्र! तुं तारा पोताना घोडा सत्वर जोड़.

१४ चतुष्पदा विराटदशका.

१०, १०, १०, १० = ४० अक्षर.

दश, दशना चार पाद छे,
चालीश वर्ण बधा थाय छे;
ए पंक्ति चतुष्पदा गाय छे,
विराट् दशका वदाय छे.

उ०—अयुञ्जन्तइन्द्र विश्वकृषी-

देवेषु चिद्दारयते महिसजः,

क्रत्वा वयो वितार्यायुः सुक्रतो,

क्रत्वा यम स्मदा सुतः ॥

ऋ. सं. १० मं. ११ अ. १४४ सू. ६ मंत्र.

ए प्रकारे करी ते सोम रसथी तृप्त थतो इन्द्र, देवताओमां अने अमारामां तेज धारण करे छे. हे शोभन कर्मवाळा इन्द्र ! यज्ञवडे प्रसन्न थयेलो तुं अमने अन्न अने जीवन आप.

१८ पदपंक्ति ५,५,५,५,५ = २५ अक्षर.

अक्षर पांच,
चरण पांच,
बधा पचीश,
तेनुं तो नाम,
छे पदपंक्ति.

उ०—घृतं न पूतं,

तनूररेपाः

शुचि हिरण्यम्,

तत्तेरुक्मो न,

रोचतस्वधावः ॥

ऋ. स. ४ मं. १ अ. १० सू. ६ मं.

हे अन्न ! शोधायला धननी पेठे तारी मूत्त पापरहित थाय छे. सोना जेवुं चळकतुं तारुं प्रसिद्ध तेज आभूषणनी पेठे शोभे छे.

जो जेना मित्र छे, जेने घणा यजमानो स्तवे छे; अने जे प्राणीओना सर्व जन्मने जाणे छे, ते बळवाननी सर्वकाळ स्तुति करेछे.

१६ आस्तारपंक्ति. ८,८,१२,१२ = ४० अक्षर.

बे आदिना छे आठना,
छेल्ला बारना ठाठना;
सर्वे मळी वर्ण चाळीश थाय छे,
तेने आस्तार पंक्ति वदाय छे.

उ०—सो अग्निर्योवसु गृणे,

संयमा यन्ति धेनवः,

समर्वन्तो रघुद्रवः संसुजातासः,

सूरयइषं स्तोतृभ्य आभर.

ऋ. सं. ५ मं. १ अ. ६ सू. २ मंत्र.

जे अग्निनी वसुओ स्तुति करे छे, जेने होममाटे गायो मळे छे, जेने संयमी पुरुषो स्तवे छे, अने जेने सुकुलोत्पन्न मेधावी पुरुषो स्तवे छे, ते अग्नि यजमानने पशु, पुत्र अने धन इत्यादि आपो.

१७ विष्टारपंक्ति ८,१२,१२,८, = ४० अक्षर.

पे'ले चोथे आठ आणो,
बीजे त्रीजे बार अक्षर प्रमाणो;
विष्टार वा विस्तार पंक्ति नाम छे,
वर्ण चालीश आम छे.

उ०—एवा तदिन्द्र इन्दुना,

सर्व कामना आपवा वाळी मनीषा देवी, आ सूक्तमां अमे करेल स्तुतिथी वेगवान् देवो पासे सुसंस्कारित रथ जेम जाय तेम, जाओ.

१. आ. छंदनी गणना गायत्री छंदमां भगवान् कात्यायनाचार्ये करेली छे. सायणाचार्ये एने द्विपदापंक्तिनुं नाम आप्युं छे.

२१ अल्पशःपंक्ति ५, ५ = १० अक्षर.

द्विपद् पांचनी.
अल्पशः पंक्ति.

अ॒सिक्न्यां॒ यज॑मानो॒ न होता॑.

ऋ. सं. ४ मं. २ अ. १७ सू. १५ मं.

रात्रनी वखते यजमाननी पेठे अग्निने सोमथी छांटेछे.

२२ निचृत्पंक्ति.

प्रमाण पंक्तिमां भू' घटशे,
निचृत्पंक्ति श्री कवि रटशे,
खाटे मोटा मनथी आजे
राजी थइ तेमां गुण गाजे.

उ०—अ॒ग्ने॒ तव॒ श्रवो॒ वयो॒ ।

म॑हि भ्राजन्ते अ॒र्चयो॑ विभावसो,

बृ॑हद्भानो॒ शव॑सा॒ वाज॑मु॒क्थ्य॑म्,

दधा॑सि दा॒शुषे॑ कवे. ।

ऋ. सं. मं. १०. अ ११. सू १४०. मं १.

हे अग्नि! सर्व प्रकारना अन्नमां तारूं अन्न मंत्रसंस्कृत होवाथी प्रशंस्य छे. हे विभावसो! तमारुं तेज घणुं प्रकाशे छे.

१९ पदपंक्ति. ४,६,५,५,५ = २५ अक्षर.

पे'ले चार;
षट बीजे धार,
अवर विषे
पांडव दिशे,
ए पद पंक्ति.

उ०—अधाह्यग्ने,
क्रतोर्भद्रस्य,
दक्षस्य साधोः
रथी ऋतस्य,
बृहतो बभूथ.

ऋ. सं. ४ मं. १ अ. १० सू. २ मं.

हे अग्नि! तुं अमारा भद्र, वृद्धि पामेला सारा, सत्यवाळा, अने मोटा यागनो हमणां ज प्रवर्त्तक था.

२० अक्षरपंक्ति. ५, ५, ५, ५ = २० अक्षर.

चार पाद छे,
पांच वर्णना,
वीश एम छे,
अक्षरपंक्ति.

उ०—प्रशुक्रैतु
देवी मनीषा,
अस्मत्सुतष्टो,
रथो न वाजी.

ऋ. स. ७ मं. ३ अ. ३४ सू. १ मं.

सर्व कामना आपवा वाळी मनीषा देवी, आ सूक्तमां अमे करेल स्तुतिथी वेगवान् देवो पासे सुसंस्कारित रथ जेम जाय तेम, जाओ.

१. आ छंदनी गणना गायत्री छंदमां भगवान् कात्यायनाचार्ये करेली छे. सायणाचार्ये एने द्विपदापंक्तिनुं नाम आप्युं छे.

२१ अल्पशःपंक्ति ५, ५ = १० अक्षर.

द्विपद् पांचनी.
अल्पशः पंक्ति.

असिक्न्यां यजमानो न होता.

ऋ. सं. ४ मं. २ अ. १७ सू. १५ मं.

रात्रनी वखते यजमाननी पेठे अग्निने सोमथी छांटे छे.

२२ निचृत्पंक्ति.

प्रमाण पंक्तिमां मूं घटशे,
निचृत्पंक्ति श्री कवि रटशे,
छाटे मोटा मनथी आजे
राजी थइ तेमां गुण गाजे.

उ०—अग्ने तव श्रवो वयो ।

महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो,

बृहद्भानो शवसा वाजमुकथ्यम्,

दधासि दाशुषे कवे. ।

ऋ. सं. मं. १०. अ ११. सू १४०. मं १.

हे अग्नि! सर्व प्रकारना अन्नमां तारूं अन्न मंत्रसंस्कृत होवाथी प्रशंस्य छे. हे विभावसो! तमारुं तेज घणुं प्रकाशे छे.

हे महान् दीप्तिवाळा अग्नि! तने आहुती आपता आ यजमानने तुं बळवाळुं यथायोग्य अन्न आपे छे.

२ याजुषी पंक्ति. १०(पृष्ठ ७४ मे योजवी)अक्षर.

याजुषी पंक्तिमां दश वर्ण.

प्रजापतये मनवे स्वाहा.

य. सं. ११ अ. ६६ कं.

मन्वन्तरना कर्त्ता प्रजापतिने अर्थे होमेलुं सुहुत थाओ.

पंक्ति छंदना भेद.

संख्या.	पंक्ति.	पादाक्षर प्रमाण.					
१	दैवी	......	......	......	......	......	५
२	याजुषी	......	......	......	......	......	१०
३	साम्नी	......	......	......	......	......	२०
४	आर्ची	......	......	......	......	......	३०
५	आसुरी	......	......	......	......	......	११
६	प्राजापत्या	......	......	......	......	......	२४
७	ब्राह्मी........	......	......	......	......	......	६०
८	आर्षी........	......	......	......	......	......	४०
९	जगती.	८	८,८	८,८	८	......	४८
१०	संस्तार.	१२	८	८	१२	......	४०
१२	प्रस्तार.	१२	१२	८	८	......	४०
१३	पंक्ति	१२	१२	८	८	......	४०
१४	सतोबृहती.	१२	८	१२	८	......	४०
१५	पंचपदा–पथ्यापंक्ति....	८	८	८	८	८	४०
१६	चतुष्पदा	१०	१०	१०	१०	......	४०
१७	असतोबृहती	८	१२	८	१२	......	४०
१८	आस्तार........	८	८	१२	१२	......	४०
१९	विष्टार–विस्तार........	८	१२	१२	८	......	४०
२०	पदपंक्ति	५	५	५	५	५	२५
२१	पंचपदापंक्ति........	४	६	५	५	५	२५
२२	अक्षर पंक्ति	५	५	५	५	......	२०
२३	अल्पशः पंक्ति.	५	५	......	......	......	१०
२४	निचृत्.	......	......	......	......	......	३९

त्रिष्टुप्

आद्य सप्त वर्गमांनो आ छट्ठो छंद छे. त्रिष्टुप्स्तोभ इत्युत्तरपदा अर्थात् स्तुतिकर्मोत्तरस्तु पद छे जेनुं एवो आनो गूढार्थ छे. आ छंदनुं कौशिक गोत्र छे, लोहित वर्ण छे, धैवत स्वर छे अने तेना देवता इन्द्र छे.

आ छंदना मुख्य भेद आठ छे, तेनां नामः—

१.	दैवी त्रिष्टुप्	५.	प्राजापत्या त्रिष्टुप्
२.	आसुरी त्रिष्टुप्	६.	आर्ची त्रिष्टुप्
३.	याजुषी त्रिष्टुप्	७.	ब्राह्मी त्रिष्टुप्
४.	साम्नी त्रिष्टुप्	८.	आर्ष त्रिष्टुप्

आर्षत्रिष्टुप्ना पाद विशेषे करी नीचे जणावेला उपभेद पडे छे:—

१. त्रैष्टुभ्पदा त्रिष्टुप्.	७. ज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्.
२. अभिसारिणी त्रिष्टुप्.	८. पुरस्ताज्ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्.
३. विराट्स्थानात्रिष्टुप्.	९. उपरिष्टाज्ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्
४. महाबृहती त्रिष्टुप्.	१०. मध्ये ज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्.
५. यवमध्या त्रिष्टुप्	११. विराड्रूपात्रिष्टुप्.
६. पंक्त्युत्तरा त्रिष्टुप्.	१२. द्विपदात्रिष्टुप्.

आ छंदनां माप अने ते रचवानो प्रकार आ नीचे आपवामां आव्यो छे.

त्रिष्टुप्.

१ दैवी त्रिष्टुप्. ६ अक्षर.

दैवी त्रिष्टुप् छन्दः.

उ०—विष्णुस्त्वाक्रमताम्.

य. सं. १ अ. १ मं.

हे शंकर ! विष्णुपादक्रमथी तारी पासे चडी आववाने हुं समर्थ नथी.

२ आसुरी त्रिष्टुप्. १० अक्षर.

आसुरी त्रिष्टुप् दश अक्षरे.

उ०—अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि.

य. सं. १ अ. १० कं.

३ याजुषीत्रिष्टुप्. ११ अक्षर.

याजुषी त्रिष्टुप्मां वर्ण रुद्र ११ छे.

उ०—अपहतꣳरक्षः यच्छन्तांपञ्च.

य. सं. १ अ. ९ कं.

...ना विघातकोने निवारी अमारी रक्षा करो. पंचांगुली ...ो चोखा गृहण करवा.

४ साम्नीत्रिष्टुप्. २२ अक्षर.

साम्नी त्रिष्टुपमां बावीश अक्षर
गणीने आखा छंदाविषे धर.

उ०—कस्त्वा युनक्ति सत्वा युनक्ति कस्मै
त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति. ।

य. सं. १ अ. ६ कं.

प्रणित अपने धारण करवावाळा हे पात्र ! तने कयो पुरुष योजे छे? हे पात्र ! ते सर्व शक्तिमान् ईश्वर तने योजे छे, तने शामाटे योजे छे? तेनी (प्रण्यपात) प्रीति माटे तने योजे छे.

५ प्राजापत्यत्रिष्टुप्. २८ अक्षर.

प्राजापत्य त्रिष्टुप् छंद रचवाने

अठ्ठाविंश वर्ण आवे,
आखा छंदमां गणावे.

अदितिष्ट्वा देवी विश्वदेव्यावती पृथिव्याः-
सधस्थे अंगिरस्वत् खनत्ववट. ।

य. सं. ११ अ. ६१ कं.

हे अवट गर्त्त ! अदिति देवी पृथ्वीना सहस्थानमां उपरना भागमां जेम अंगिराए तने खोदेल त्यम तुं खोदा.

६ आर्चीत्रिष्टुप्. ३३ अक्षर.

आर्चीत्रिष्टुप् छंद रचवा काजे
तेत्रीश अक्षर सरस राजे
याजुषीथी ए त्रमणो बिराजे.

अग्निं नरो दीधितिभिररण्यो हस्तच्युतं-
जनयत प्रशस्तं दूरेदृशं गृहपतिमथव्यम्.

साम. सं. उ. प्र. ६. १ अ. १० मं.

७ ब्राह्मीत्रिष्टुप्. ६६ अक्षर.

ब्राह्मी त्रिष्टुप् छंद वर्ण छाशठनो,
प्रवेश जेमां थाय नहि को शठनो,
पण जो शठपर प्रभु रिझाय,
शठ फीटी ते पंडित बनी जाय,
प्रभु प्रसादनी लीला वखणाय,
माटे गुणगाय.

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ-
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः-

शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च-

शरदः शतात् ॥

य. सं. ३६ अ. २४ कं.

आ मंत्र वडे अमाराथी स्तुति करायला जगतना चक्षुरूप देवथी स्थापित थयेला अने अपाप आदित्य पूर्व दिशामां उगेछे. अमे सो वर्ष सुधी जोइ शकिये; सो वर्ष सुधी सांभळिये; सो वर्ष सुधी बोली शकिये, अने सो वर्ष सुधी अमे गरीब न थइये. बीजां सो वर्ष लगण पण अमे जोवा, सांभळवा, बोलवा अने गरीब न थवा पामिये.

८ आर्षत्रिष्टुप्. ४४ अक्षर.

पद रचना न ध्यान धरतां
अक्षर चुमालीश ज करतां
त्रिष्टुप् आर्षबने अति सुंदर
स्तव पथी प्रभुने कविवर.

उ०—वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्-

आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्-

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः

पन्था विद्यतेऽयनाय. ।

य. सं. ३१ अ. १८ कं.

हुं एने सर्व थकी श्रेष्ठ, सूर्य मंडळमां रेहेनार, तेजोमय अंधकार रहित, परम ब्रह्मरूप जाणुंछुं. तेना विना आश्रय माटे बीजो मार्ग नथी.

९ त्रैष्टुभपदात्रिष्टुप् ११,११,११,११ = ४४ अक्षर.

पे'ले बीजे अक्षर अगियार,
त्रीजे चोथे तुं तेटला ज धार,
एम चुवालिश अक्षर आण,
त्रैष्टुभपदा ए त्रिष्टुप जाण.

इमा अग्ने शरणिं मीमृषो न,
इममध्वानं यमगा मदूरात्;
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां,
भृमिरस्यृषिकृन्मर्त्यानाम्. ॥

ऋ. सं. १ मं. ७ अ. ३१ सू. १६ मं.

हे अग्नि! मार्ग मूकी अमे अवळे रस्ते गया ए अमारां पापनी अमने क्षमा कर. कारण तुं मित्र छुं, पिता छुं, सहायक छुं, पोषक छुं, अने जे मर्त्यो तने सोमरस आपेछ तेनो तुं उत्तेजक छुं.

१० अभिसारिणी त्रिष्टुप्. १०,१०,१२,१२=४४.

दश दश वर्णना बे पाद,
बार बारना बीजा बे पाद,
एम चुंवालीश वर्ण सर्व थाय,
ते अभिसारिणी त्रिष्टुप् वदाय.

उ०—योवाचा विवाचो मृध्रवाचः

पुरू सहस्रा शिवा जघान,

ततत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि,

पितेवयस्तविर्षीवा वृधेशवः

ऋ. सं. १० मं. २३ अ. २३ सू. ५ मं.

जे इन्द्र पोताना वाचाळ शत्रुओने मुंगा बनावे छे, अने जगत्ने जे पीडा करनार तेमने हणे छे, वळी जे इन्द्र जेम पिता पुत्रना बळने अन्न आपी वधारे छे तेम वृष्टिद्वारा जगत् आखाना बळने वधारे छे ते इन्द्रना बळने अमे वखाणिये छिये.

११ विराट्स्थाना त्रिष्टुप्. ९, ९, १०, ११,=३९ १०, १०, ९, ११, = ४० अक्षर.

नव पे'ले बीजे आवे छे;
त्रीजे दश वर्ण लावे छे,
चोथे शिव[११] ओगण चालीश
बधाय विराटस्थाना त्रिष्टुप. १
दश दश पे'ले बीजे आवे,
नव त्रीजे शिव[११] चोथे लावे;
एम चाळीश वर्ण थाय,
अवर विराट स्थाना रचाय. २

स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः,

स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः;

स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमीः

सुअस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु

ऋ. स. १ मं. १४ अ. ८९ सू. १ मंत्र.

महा वैभवी इन्द्र अमारूं कल्याण करो; सकल धन संपन्न पूषा अमारूं रक्षण करो. अखंडितशस्त्र तार्क्ष्य अमारूं कल्याण करो. बृहस्पती अमारूं कल्याण करो.

१२ महाबृहती त्रिष्टुप्. ८,८,८,८,१२ = ४४.

आठ पे'ला चारे आवे,
बार तो पांचमे लावे,
वर्ण चुंवालीश का'वे,
एवो छंद मने भावे,
महाबृहती त्रिष्टुप् नाम वदावे.

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः ।
शुक्रेण देव शोचिषा,
भरद्वाजे समिधानो,
यविष्ठ्यरेवन्नः शुक्र,
दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि.

ऋ. सं. ६ मं. ४ अ. ४८ सू. ७ मं.

हे देव! हे युवावस्थावाळा! हे दीप्ताग्नि! निर्मळ तेजथी अमारा माइ भारद्वाज भणी वृद्धि पामतो तुं, घणा तेजवडे अमारे माटे धनयुक्त थवाय तेम प्रकाशमान था. अने हे पावक! अमे जेम कान्तियुक्त थइए तेम तुं प्रकाशमान था

१३ यवमध्या त्रिष्टुप्. ८, ८, १२, ८, ८ = ४४.

आठ आठ पे'ले बीजे,
बार वर्ण आवे त्रीजे,

चोथे ने पांचमे आठ वर्ण दीजे,
बधा चुंवालीश धारो,
यवमध्या त्रिष्टुप् सारो.

उ०—मीढुष्टम शिवतम,
शिवो नः सुमना भव,
परमे वृक्षआयुधं निधाय,
कृत्तिं वसान आचर,
पिनाकं बिभ्रदागहि. ॥

य. स. १६ अ. ५१ कं.

अर्थः—हे कामशेक्ता! हे शिवतम! अमारा प्रति तुं शान्त अने प्रसन्न चित्तवाळो था. पेला उंचा वृक्षपर तारां त्रिशूळादि आयुध मूकी आवी तुं व्याघ्रचर्म धारण करीने आव. मात्र शोभा माटे तारुं ज्याशर सहित पिनाक धारण करीने आव.

१४ पंक्त्युत्तरात्रिष्टुप्. १०,१०,८,८,८, = ४४

दश वर्ण पे'ले बीजे आवे,
बीजा त्रण पाद आठ लावे,
चुंमालीशो त्रिष्टुप् एवो,
पंक्त्युत्तरा नामे के'वो,
या विराट् पूर्वा जेवो.

उ०—एवेन्द्रा ग्निभ्या महाविहव्यं,
शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः,
तासूरिषुश्रवो बृहत्,

रयिं गृणत्सु दिधृतम्,
इषं गृणत्सु दिधृतम् ॥

ऋ. सं. ५ मं. ६ अ. ८६ सू. ६ मंत्र.

अर्थः—पथ्थरथी वाटीने कढायलो सोमरस जेम तमे आपोछो तेम इन्द्र अने अग्निए आ वलिदान आप्युं. ए बन्ने देवो बुद्धिवाळा अमने घणुं धन अने अन्न आपो.

१५ ज्योतिष्मति त्रिष्टुप्.

१२,१२,१२,८ = ४४ कात्यायन.

११,८,८,८,८ = ४३ } पिंगल.
८,११,११,११ = ४१ }

पाद त्रण वर्ण बारना रचाय,
चोथो जे ते आठ वर्णतणो थाय,
चुंमालिश बधा अक्षर गणाय,
ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् ते १.

वा चार चरण आठनां थाय,
पे'लुं तो अगियारनुं,
ए पण ज्योतिष्मती,
पिंगल सूत्र प्रमाणे,
पांच एवा पाद आणे. २

अथवा पे'लुं आठनुं,
छे अवर त्रण रुद्र ठाठनुं,
ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् एने जाण,
एकतालीश वर्ण सर्वे आण. ३

उ०—अग्निनेन्द्रेण वरुण विष्णुना,

आदित्यैरुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा,

सजोषसा उषसा सूर्येण च,

सोमं पिबतमश्विना.

ऋ. स. ८ मं. ५ अ. ३५ सू. १ मं.

अर्थः—हे आश्विनी कुमारो ! अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु, सूर्यो, रुद्रो अने वसुओ तथा उषासमेत तमे सूर्यनी साथे बे जणा सोम पियो.

१६ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती. ८,१२,१२,१२, = ४४

११,८,८,८,८ = ४३० ८,११,११,११ = ४१

पे'ले पादे आठ आवे
बीजे त्रीजे चोथे बार वर्ण लावे
गायत्री पादपूर्वा चुम्मालीशमो
पुरस्ताज्ज्योतिष्मती एने वदे छे. १

रूद्र वर्ण पे'ले पादे आवे छे,
बीजा चार आठ लावे छे,
तेंतालिश पाद पांचे,
त्रिष्टुप् पाद पूर्वा एवी,
पुरस्ताज्ज्योतिष्मती छे. २.

आठ आवे पे'ले पदे,
बीजे त्रीजे चोथे करण''वदे
गायत्री पाद पूर्वा एकतालिशो
पुरस्ताज्ज्योतिष्मती वदे त्रीजो. ३

१०—तमु ष्टु हीन्द्रं योह सत्वा यः शूरो,

मघवा यो रथेष्ठाः;

प्रतीचश्चिद्योऽधीयान्,

वृषण्वान् वव्र युषः

चित्तमसो विहन्ता.

ऋ. सं. १ मं. २३ अ. १७३ सू. ५ मंत्र.

अर्थः—हे होता! अति प्रबळ, शूर, बळवान्, रथमां बेसनार, शत्रुने संमुख लडनार, वज्रादिक हथियारवाळो, ढांकवानी टेववाळा अंधकारने हणनार जे इन्द्र छे तेनी तुं स्तुति कर.

आ वृत्तमां अक्षरनी गणना करवामाटे फेरफार करवो पडे छे.

१७ उपरिष्टाज्ज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्-१२,१२,१२,८=४४. ८,८,८,८,११=४३. ११,११,११,८=४१

प्रथमना त्रण बारना रचाय,
बाकी छेल्लो आठ वर्णतणो थाय,
चुमालीश बधा अक्षर गणाय
उपरिष्टाज्ज्योतिष्मती. १
पे'ले बीजे आठ आठ
त्रीजे चोथे आठ आठ
पांचमे रुद्रनो पाठ
वर्ण त्रेतालीस ठाठ
ए बीजी उपरिष्टा ज्ज्योतिष्मती. २
प्रथमे बीजे त्रीजे रुद्र थाय

आठ अक्षर चोथा पदमांय
उपरिष्टा ज्योतिष्मती वदाय
एकताळीस गणाय. ३

उः—अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुना,

आदित्यै रुद्रैर्वसुभिःसचाभुवा,

सजोषसा उषसा सूर्येण च,

सोमं पिबतमश्विना.

ऋ. सं. ८ मं. ५ अ. ३५ सू. १ मं.

अर्थ–हे अश्विनी कुमारो ! तमे अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु आदित्यो, रुद्रो अने उषा समेत सूर्य साथे सोम पियो.

१८ मध्येज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्. १२,८,१२,१२ = ४४.

८,८,११,८,८ = ४३. ११,११,८,११ = ४१.

बार प्रथमे त्रीजे चोथे आणोजी,
बीजे गायत्री जाणोजी.
एम कुळ चुमालीश वर्ण रे' छे,
मध्ये ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् वदे छे. १
आठ वर्ण पे'ले बीजे,
रुद्र वर्ण आवे त्रीजे,
चोथे पांचमे आठ छे त्रिष्टुप्,
पिंगल तेंतालीशाने
मध्ये ज्योतिष्मती के'छे. २
पे'ले बीजे चोथे अगियार छे
त्रीजे पाद आठ वर्ण यार छे
एकताळीश वर्ण छे

त्रिष्टुप् मध्ये ज्योतिष्मती के छे. ३

उ०—यद्वां यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुः,

एवेत्काण्वस्य बोधतम्. ।

बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुव,

इन्द्राविष्णू अश्विना वाशुहेषसा.

ऋ. सं. ८ मं. २ अ. १० सू. २ मं.

अर्थ—हे अश्विनीकुमारो ! जे प्रकारे तमे प्रजापति यजमानने माटे यज्ञ कर्यो, तेज प्रकारे काण्वगोत्रवाळा मने मारा यज्ञ करवामां शीखामण आपो. वळी बृहस्पति, सर्व देवताओ, विष्णु, अने उतावळा अश्विनीकुमारोने हुं बोलावुंछुं,

१९ विराट्रूपात्रिष्टुप् ११,११,११,८ = ४१.

प्रथमना त्रिव वर्णना त्रणे,
चोथो पाद आठवर्णनो गणे;
एकतालिश वर्णतणो भणे,
विराटरूपा त्रिष्टुप.

उ०—एतत्त्यन्नयोजनमचेति,

सस्वर्हयन्मरुतो गोतमो वः ।

पश्यन्हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान् ।

अविधावतो वराहून्

ऋ. सं. १ मं. १४ अ. ८८ सू. ५ मंत्र.

आठ अक्षर चोथा पद्‌मांय
उपरिष्ठा ज्योतिष्मती वदाय
एकतालीस गणाय. ३

उः—अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुना,
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिःसचाभुवा,
सजोषसा उषसा सूर्येण च,
सोमं पिबतमश्विना.

ऋ. सं. ८ मं. ५ अ. ३५ सू. १ मं.

अर्थ–हे अश्विनी कुमारो ! तमे अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु आदित्यो, रुद्रो अने उषा समेत सूर्य साथे सोम पियो.

१८ मध्येज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्.१२,८,१२,१२ = ४४.

८,८,११,८,८ = ४३. ११,११,८,११ = ४१.

बार प्रथमे त्रीजे चोथे आणोजी,
बीजे गायत्री जाणोजी.
एम कुळ चुमालीश वर्ण रे' छे,
मध्ये ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् वदे छे. १
आठ वर्ण पे'ले बीजे,
रुद्र वर्ण आवे त्रीजे,
चोथे पांचमे आठ छे त्रिष्टुप्,
पिंगल तेंतालीशाने
मध्ये ज्योतिष्मती के'छे. २
पे'ले बीजे चोथे अगियार छे
त्रीजे पाद आठ वर्ण यार छे
एकतालीश वर्ण छे

त्रिष्टुप् मध्ये ज्योतिष्मती कहे छे. ३

उ०—यद्वां यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुः,

एवेत्काण्वस्य बोधतम्. ।

बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुव,

इन्द्राविष्णू अश्विना वाशुहेषसा.

ऋ. सं. ८ मं. २ अ. १० सू. २ मं.

अर्थ—हे अश्विनीकुमारो ! जे प्रकारे तमे प्रजापति यजमानने माटे यज्ञ कर्यो, तेज प्रकारे काण्वगोत्रवाळा मने मारा यज्ञ करवामां शीखामण आपो. वळी बृहस्पति, सर्व देवताओ, विष्णु, अने उतावळा अश्विनीकुमारोने हुं बोलावुं छुं,

१९ विराट्रूपात्रिष्टुप् ११,११,११,८ = ४१.

प्रथमना शिव वर्णना भणे,
चोथो पाद आठवर्णनो गणे;
एकतालिश वर्णतणो भणे,
विराटरूपा त्रिष्टुप.

उ०—एतत्त्यन्नयोज नमचेति,

सस्वर्हयन्मरुतो गोतमो वः ।

पश्यन्हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान् ।

अविधावतो वराहून्

ऋ. सं. १ मं. १४ अ. ८८ सू. ५ मंत्र.

अर्थ—हे मरुतो ! तमारी प्रीतिने माटे गौतमे जे अप्रतिम स्तोत्र गायां, ते आ छे. स्तोत्र रचतां रचतां तेने सुवर्णचक्रयुक्त लोढानी दाढनुं अहिंताहिं दोडनार वराह, जे तमे, ते नजरे पड्या.

२० द्विपदात्रिष्टुप् ११,११ = २२ अक्षर.

शिव[११]वर्ण बे पादथी रचजो,
बावीशो द्विपदा त्रिष्टुप सजो.

उ०—अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध,
उतबर्हिरुर्विया विस्तृणीताम्.

ऋ. सं. ७ मं. १ अ. १७ सू. १ मं.

अर्थ—हे अग्नि ! तुं सारी समिधवडे प्रदीप्त था. अने वळी अध्वर्यु दर्भने पृथ्वीपर पाथरे.

त्रिष्टुप् छंदना भेद.

संख्या.	त्रिष्टुप्.	पादाक्षर प्रमाण.					
१	दैवी.						६
२	आसुरी.						१०
३	याजुषी.						११
४	साम्नी.						२२
५	प्राजापत्या.						२८
६	आर्ची.						३३
७	ब्राह्मी.						६६
८	त्रैष्टुभ्पदा.	११	११	११	११		४४
९	आर्षी.						४४
१०	अभिसारिणी.	१०	१०	१२	१२		४४
११	विराट्स्थाना.	९	९	१०	११		३९
	,,	१०	१०	९	११		४०
१२	महाबृहती.	८	८	८	८	१२	४४
१३	यवमध्या.	८	८	१२	८	८	४४
१४	पंक्त्युत्तरा.	१०	१०	८	८	८	४४
१५	ज्योतिष्मती.	१२	१२	१२	८		४४
	,,	११	८	८	८	८	४३
	,,	८	११	११	११		४१
१६	पुरस्ताज्ज्योतिष्मती.	८	१२	१२	१२		४४
	,,	११	८	८	८	८	४३
	,,	८	११	११	११		४१
१७	उपरिष्टाज्ज्योतिष्मती.	१२	१२	१२	८		४४
	,,	११	११	११	८		४१
	,,	८	८	८	८	११	४३
१८	मध्येज्योतिष्मती.	१२	८	१२	१२		४४
	,,	८	८	११	८	८	४३
	,,	११	११	८	११		४१
१९	विराड्रूपा.	११	११	११	८		४१
२०	द्विपदा.	११	११				२२
२१	निचृत् आर्ष त्रिष्टुप्.						४३
२२	भुरिक् आर्ष त्रिष्टुप्.						४५
२३	विराट् आर्ष त्रिष्टुप्.						४२
२४	स्वराट् आर्ष त्रिष्टुप्.						४४

जे त्रिष्टुप् छंदमां तेना प्रमाण करतां एक अक्षर ओछो होय ते निचृत् त्रिष्टुप् केहेवाय छे. जेमां बे अक्षर ओछा होय, ते विराट् त्रिष्टुप् केहेवाय छे. वळी जेमां एक अक्षर वधारे होय ते भूरिक् त्रिष्टुप् अने जेमां बे वधारे होय ते स्वराट् त्रिष्टुप् केहेवाय छे.

अष्टविध त्रिष्टुप्ना निचृत् आदि भेदना विस्तार माटे जुओ नीचेनुं बिम्ब.

त्रिष्टुप् छंद.
भूरिजादि उपभेद बिम्ब.

अक्षर संख्या.	छन्दो जात.	उपभेद.		अक्षर संख्या.	छन्दो जात.	उपभेद.	
		१	२			१	२
४	दैवी	विराट्		२६	प्राजापत्य	विराट्	
५	,,	निचृत्		२७	,,	निचृत्	
६	दैवी	०		२८	प्राजापत्य	०	
७	दैवी	भूरिक्		२९	प्राजापत्य	भूरिक्	
८	,,	स्वराट्	आसुरी	३०	,,	स्वराट्	
			विराट्	३१	आर्ची	विराट्	
९	आसुरी	निचृत्	याजुषी	३२	आर्ची	निचृत्	
			विराट्	३३	आर्ची	०	
१०	,,	०	याजुषी	३४	आर्ची	भूरिक्	
			निचृत्	३५	,,	स्वराट्	
११	याजुषी	०	आसुरी	४२	आर्षी	विराट्	
			भूरिक्	४३	,,	निचृत्	
१२	याजुषी	भूरिक्	आसुरी	४४	आर्षी	०	
			स्वराट्	४५	आर्षी	भूरिक्	
१३	,,	स्वराट्		४६	,,	स्वराट्	
२०	साम्नी	विराट्		६४	ब्राह्मी	विराट्	
२१	,,	निचृत्		६५	,,	निचृत्	
२२	साम्नी	०		६६	ब्राह्मी	०	
२३	साम्नी	भूरिक्		६७	ब्राह्मी	भूरिक्	
२४	,,	स्वराट्		६८	,,	स्वराट्	

निचृत्त्रिष्टुप्.

निचृत् त्रिष्टुप् रचवा हॉंस करो,
कहाथी एक अक्षर ओछो धरो;
पछी हॉंसथी मनगमतां गाजो,
गोतो हरि स्मरीने एमां जो.

उ०—इदन्त एकं परऊत एकं
तृतीयेन ज्योतिषा संविशस्व,
संवेशन स्तन्वे चारु धेहि,
प्रियो देवानां परमे जनित्रे.

शामवेद. पू. प्र. १ अ २ मं. ३.

भूरिक् त्रिष्टुप्.

सरवाळे गणतां गणतां वधे,
प्रमाणथी एक अक्षर जो वधे;
भूरिक् त्रिष्टुप् छंद गणजो तेने,
कात्यायन ऋषि जणावे जेने.

उ०—य ऋतभ्यो दूतमिव वाचमिष्य,
उपस्तीरेश्वैतरो धेनुमीडे; ।
ये वातजूनस्तराणिभिरेवैः ।
परिद्यो सद्यो अपसो बुभुषु. ।

भवदेवः

विराट् त्रिष्टुप्.

विराट् त्रिष्टुप् रचवा धारो,
अक्षर अधूरा यम[२] होशेथी
धरवाथी कविवर बनशो,
छंद अतिशय प रहियाळो.

उ०—परिधत्त वासरौनां,
दीर्घायुर्षी कृणुत दीर्घमायुः
शतं च जीव शरदः सवर्चा,
वसूनि चार्ये विभृजासि जीवन्।

भवदेवः

स्वराट् त्रिष्टुप्.

त्रिष्टुप् छंद रचतां कविवर!
वर्ण बे प्रमाणथी अदका धर;
स्वराट् त्रिष्टुप् थाशे हेतेथी गाजे,
हरियश मस्त मनथी आजे.

उ०—इन्द्रा सोमा परि वां भूतु विश्वतः,
इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना;
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेध,
ये मा ब्रह्माणि नृपतीव जिन्वतम् ॥

ऋ. सं. ७ मं. ६ अ. १०४ सू. ६ मं.

अर्थ—हे इन्द्र! हे साम! तमे बे बळवान, आ अमारी स्तुतिने जेम घासनी बनावेली लगाम घोडाने ग्रहण करेछे- तेम ग्रहण करो. आ वाणी तमारा माटे हुं बुद्धिथी प्रेरुंछुं. वळी अमारी ए स्तुतिओ, राजाओ जेम सेवकोने धनथी तृप्त करेछे, तेम अमने फळथी परिपूर्ण करे.

महर्षिपिंगळाचार्यना छंदः सूत्रपरनी हलायुध टीकानुसार आ छंदना शंकुमत्यादि भेद पण पडी शके

छे. एमना लक्षण माटे जुओ आगळ छंदोनी अपायली व्याख्या.

जगती.

आद्य सप्तवर्गनो आ छेल्लो एटले सातमो छंद छे. एनुं नाम जगती एटला माटे पाडवामां आव्युं छे के " जगतीगततमं छन्दः " एटले छेल्लो छंद माटे जगती.

आ छंदनुं गोत्र, वशिष्ठ छे, वर्ण, गौर छे, स्वर, निषाद छे अने देवता, विश्वेदेवा छे. एना अष्ठ प्रकारना नीचे जणावेला मुख्य भेद छे.

१. दैवी जगती.
२. आसुरी जगती.
३. याजुषी जगती.
४. प्राजापत्य जगती.
५. आर्ची जगती.
६. साम्नी जगती.
७. ब्राह्मी जगती.
८. आर्ष जगती.

आर्षजगतीना पाद विशेष करी नीचे जणावेला भेद पडे छे.

१ जागतपदा,
२ महासतो बृहती.
३ महापंक्ति,
४ चतुष्पादज्योतिः
५ पंचपाद ज्योतिः
६ पुरस्ताज्जोतिः

७ मध्येज्योतिः

८ उपरिष्टाज्ज्योतिः

उपर केहेवामां आवेल सर्व प्रकारनी जगतीनुं माप अने ते रचवानो प्रकार तथा तेनुं अकेकुं उदाहरण आ नीचे आपवामां आवे छे.

जगती छंद.

१ दैवी जगती. ७ अक्षर.

दैवी जगती साते.

उ०—वसोः पवित्रमसि.

य. सं. १ अ. २ कं.

अर्थः—हे दर्भमय पवित्र! तुं इन्द्र देवना निवास हेतु पयः शोधक पवित्र छुं.

२ याजुषी जगती. १२ अक्षर.

याजुषी जगतीमां बार वर्ण छे.

उ०—वाचो विधृतिमग्निं प्रत्युजन्स्वाहा.

य. सं. ११ अ. ६६ कं.

अर्थ---वाणीना विधारण प्रति प्रेरक अग्निने उद्देशी सुहुत थाओ.

३ आसुरी जगती. ९ अक्षर.

आसुरी जगती नवथी.

उ०—यजमानस्य पशून्पाहि.

य. सं. १ अ. १ कं.

अर्थः—हे पलाश शाखे! तुं उंचा प्रदेशपर रहेली हो-
वाथी यजमानना पशूओनुं व्याघ्रादिना भयथी रक्षण कर.

४ प्राजापत्य जगती. ३२ अक्षर.

प्राजापत्य जगती छंद वखाणो
जेमां बत्रीश अक्षर आखा आणो.
पाद प्रमाण न जाणो.

५ आर्चीजगती. ३६ अक्षर.

आर्ची जगती छंद रचवा काजे,
बधा मळी छत्रीश वर्ण राजे,
ए छंदे उलटे प्रभु गुण गाजे.

६ साम्नी जगती. २४ अक्षर.

साम्नी जगती छंद कवि! बनावो,
चोवीश अक्षर एकन्दरे लावो.

उ०—सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण,
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥

य. सं. १ अ. १२ कं.

अर्थ—हे आप! सूर्योदय समये उत्कर्षे करी अमे छिद्र विनाना दर्भथी अने सूर्यनां किरणथी तमारुं शोधन करिये छिये.

७ ब्राह्मी जगती. ७२ अक्षर.

ब्राह्मी जगती छंद रचो जो आप,
तेमां बोतेर अक्षर केरुं माप,
चार पाद जो इच्छो रचवा काजे,
धृति छंद ए आर्ष जातिमां राजे,
पादे पादे अढार अक्षर आवे,
ए रीते बी कवि आ छंद बनावे.

आर्षजगती.

८ जागतपदा जगती १२,१२,१२,१२ = ४८ अक्षर.

बार वर्णतणा चार पाद थाय,
कुल अडतालीश वर्ण रचाय,
एवो आ तो जगती छंद के'वाय,
तेनुं नाम जागतपदा देवाय.

उ०—अधि पेशांसि वपते नृतूरिवा,-
पोर्णुते वक्ष उस्रे व बर्जहम्;
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती,
गावो न व्रजं व्यूषा आवर्तमः.

ऋ. स. १ मं. १४ अ. ९२ सू. ४ मं.

अर्थ—गाय जेम पोतानां आंचळने प्रकट करे छे, अने पोतानी मेळे गोष्ठमां दोडी आवे छे, तेम उषा देवी, नापित जेम केशने निःशेष बनावे छे तेम, प्राचीदिशामां आवी तेम जगत्साथे जोडायला काळा अंधारने दूर करे छे अने पोताना वक्षस्थळने प्रकट करे छे

९ महासतो बृहती.८,८,८,१२,१२, = ४८ अक्षर.

पे'ला त्रणे पादे आठ,
छेल्ला बेमां बार ठाठ;
पाद पांच एवा आण,
अडताळीश वर्ण कुल प्रमाण.
महासतो बृहती जगती जाण.

उ०—आयः प्रप्रा भानुना,
रोदसी उभे धूमेन,

धावते दिवि तिरस्,

तमो ददृश ऊर्म्या स्वाश्या वा,

स्वरुषो वृषा श्यावा अरुषो वृषा.

ऋ. सं. ४ अ. ८ अ. ४८ सू. ६ मं.

अर्थ–अग्नि प्रगट थइने, पृथ्वी अने आकाशना अवकाशने दूरथी जोवामां आवती पोतानी कान्तिवडे पूरी मूके छे. ते अग्नि पछीथी, रात्रना घणा अंधकारने पोतानी कान्तिथी हठावतो जोवामां आवे छे.

१० आर्ष जगती. ४८ अक्षर.

वर्ण अडतालीश लावीने तमे,
रचो आर्ष जगती सर्वने गमे;
जगतपतिना गुण गरवा गाजो,
गरवी गतिथी ए जगतीमां जो.

उ०—तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं–

बर्हिषदꣳ स्वर्विदम् । प्रतीचीनं वृजनं दोहसे

धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्द्धसे.

य. सं. ७ अ. १२ कं.

अर्थः—हे इन्द्र, जे यज्ञमां तुं सोमपानथी वृद्धि पामीश, तेमां जेम बीजा प्राचीन ऋषियो, साध्य देवताओ, अने सर्व ऋषिपुत्रोने तें फळ आपेलं छे; तेम तुं यजमानने बळवाळुं यज्ञफळ आपीश. एवां फळ आपनार जे तुं ते तारी अमे स्तुति करिये छिये.

मोटा विस्तारवाळा यज्ञमां दर्भना आस्तरणपर बेसनारा,

स्वर्गने जाणनार, आत्म संमुख शत्रुओने कंपावनार, अने तरत जीतनार तुं आलस्य अने अश्रद्धादिकनो नाश करीश. अने जे क्रियामां तारी कृपाथी शत्रुने जीतनारा अने तारा अनुष्ठानथी बीजा यजमानथी श्रेष्ठ एवा आ यजमानने सोमपान अने स्तुति थी तुं वधारीश; एटला माटे अमे तारी स्तुति करिये छिये.

११ महापंक्तिजगती. ८,८,७,६,१०,९ = ४८.

८,८,८,८,८,८ = ४८.

आठ वर्ण पे'ले बीजे,
सात वर्ण आवे त्रीजे,
चोथे षट प्रमाणो,
दश बाणे[5] आणो,
नव छठ्ठे, अडतालो भणो.
महापंक्ति जगती गणो.

इयत्तिका शकुन्तिका,
सका जघास ते विषम्,
सो चिन्नु न मराति,
नो वयं मरामा-
रे अस्ययोजनं हरिष्ठा,
मधुत्वा मधुला चकार.

ऋ. सं. १ मं. २४ अ. १९१ सू. ११ मंत्र.

नानकडी कपिंजले तारुं झेर खाइ लीधुं छे. ते पण मरनार नथी. अमे पण मरनार नथी. पीळा घोडापर बेठेलो सूर्य

ए विषने दूर पोहोंचाडतो थयो. हे विष, ते तने मधुर विद्याना योगे मधुर बनावतो थयो.

आठ अक्षर पादे छे,
छ पाद आ छंदे देछे,
अडतालीशो केहे छे,
आवी पण जगती छे,
महापंक्तिनी गति छे,
जो कविता तणी मति छे.' १

योनइन्द्राभितोजनो,

वृकायुरादिदेशति,

अधस्पदंतमींकृधि,

विबाधो असिसासहि,

नि भन्ता मन्यकेषाम्;

ज्याका आधिधन्वसु.

ऋ. सं. ८ मं. ७ अ. १३३ सू. ४ मंत्र.

हे इन्द्र! साथे ज जेनो जन्म छे एवो शत्रु अमने पजवे छे; अधम योनिमां जेनो जन्म छे एवो शत्रु अमने पजवे छे माटे आकाशनी पेठे फेलायला ए शत्रुना बळनो तुं पोताना मेळे नाश कर. अने वळी नठारा बीजा शत्रुओनां धनुषपर चढावेली प्रत्यंचा नाश पामो.

१. आ छंद त्रिष्टुप साथे मळीजतो होवाथी तेनो जूदो भेद वेदना सूत्रमां आपवामां आव्यो नथी.

स्वर्गने जाणनार, आत्म संमुख शत्रुओने कंपावनार, अने तरत जीतनार तुं आलस्य अने अश्रद्धादिकनो नाश करीश. अने जे क्रियामां तारी कृपाथी शत्रुने जीतनारा अने तारा अनुष्ठानथी बीजा यजमानथी श्रेष्ठ एवा आ यजमानने सोमपान अने स्तुतिथी तुं वधारीश; एटला माटे अमे तारी स्तुति करिये छिये.

११ महापंक्तिजगती. ८,८,७,६,१०,९ = ४८.

८,८,८,८,८,८ = ४८.

आठ वर्ण पे'ले बीजे,
सात वर्ण आवे त्रीजे,
चोथे षट प्रमाणो,
दश बाणे[५] आणो,
नव छट्ठे, अडतालो भणो,
महापंक्ति जगती गणो.

इयत्तिका शकुन्तिका,
सका जघास ते विषम्,
सो चिन्नु न मराति,
नो वयं मरामा-
रे अस्ययोजनं हरिष्ठा,
मधुत्वा मधुला चकार.

ऋ. सं. १ मं. २४ अ. १९१ सू. ११ मंत्र.

नानकडी कपिंजले तारुं झेर खाइ लीधुं छे. ते पण मरनार नथी. अमे पण मरनार नथी. पीळा घोडापर बेठेलो सूर्य

अबोध्यग्निर्ज्म उदेति

सूर्यो व्यू षा श्चन्द्रा मह्या वो अर्चिषा,

आयु क्षातामश्विनाया तवे रथ

प्रासावीद्देवः सविता जगत् पृथक्.

ऋ. सं. मं. १, अ. २२, सू. १५७, मं. १.

उपर प्रमाणे बराबर पद पडेछे, पण आ छंदनुं जगती नाम आपीने कोइ नीचे प्रमाणे पद पाडेछेः—

अबोधि अग्निः ज्मःउदेति सूरिअः विउषाः चन्द्रा मही आत्र अर्चिषा. (इत्यादि)

अग्नि जगाववाथी वेदीपर जागृत थाय छे. सूर्य उदय पामे छे, मोटी उषा तेजथी आनंद आपती अंधाराने नसाडे छे. अश्विनी कुमारो ए! पोताना रथने देवयजनमां लइ जवा माटे जोडचो छे. अने सूर्यनारायण देव जंगम प्राणी समूहने पोतपोताना कामपर प्रेरे छे.

१५ मध्येज्योतिर्जगती ८,८,१२,८,८, = ४४
१२,१२,८,१२, = ४४.

आठ वर्ण पे'ले बीजे
पछी बार आवे त्रीजे,
चोथे ने पांचमे आठ आठ कीजे
चुंवालो छंद जाणी जे,
मध्य ज्योतिर्जगती छे. १
अथवा चोपद छंद तो रचजो,
त्रणे पाद बार बारना करजो,
वच्चे त्रीजे आठ सारो,
मध्ये ज्योतिर्जगती छंदविषे धारो. २

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः

१२ चतुष्पादज्योतिःजगती[1] ८,१२,१२,१२ = ४४.

पे'ले पादे आठ आणो,
बीजा त्रण पादे बार वर्ण जाणो,
चोपदो चुंवालीशो छंद वखाणो,
चतुष्पादज्योतिः जगती प्रमाणो.

१३ पंचपादज्योतिर्जगती[2] ८,८,८,८,१२=४४.

पांच पाद जेमां आवे,
आठ आठ चारे लावे,
पांचमे बार चलावे,
चुंवालीशो छंद का'वे,
पंचपादज्योतिर्जगती धरावे.

१४ पुरस्ताज्ज्योतिर्जगती. १२,८,८,८,८, = ४४.

८,१२,१२,१२, = ४४.

पे'ले पादे बार अक्षर आवे छे,
बीजे तो आठ लावे छे,
बाकी त्रणे पादे आठ,
चुंवालीशो पद्यो जाणो
पुरस्ता ज्ज्योतिर्जगती. १.
धरो आठने आदिमां
रचजो रह्या जे त्रण वर्ण बारे,
पुरस्ताज्ज्योतिर्जगतीने संभारे,
गुण गावा हरिनां जो मन धारे. २.

---

१. पिंगल सूत्रमां आ भेद बताव्यो छे ते त्रिष्टुप साथे मळी जतो होवाथी सूत्रमां जूदो नथी गणाव्यो.

२. आ वेदनां सूत्र प्रमाणे त्रिष्टुपमां आवी जतो होतां त्यां जूदो नथी गणाव्यो. महार्षि पिंगळे आ प्रमाणे जूदो लीधो छे.

भवत्पुरो हितोऽग्नि,

मनुष्या ऋषयः समीधिरे

अग्निं महो धनं साता-

यहं हुवे मृळीकं धनसातये.

ऋ. सं. १० मं. १० अ. १५० सू. ४ मं.

दानादि गुण युक्त अग्नि, देवतानो पुरोहित छे, माटे तेने मनुष्यो अने मुनिओ प्रज्वलित करेछे. वळी मोटा यज्ञना कर्त्ता ते अग्निने धनना लाभ माटे अथवा सुख माटे हुं वोलावुं छुं.

आनो बीजो भेद त्रिष्टुपमां मळी जतो होवाथी जुदो गण्यो नथी.

शुक्रेण देव शोचिषा,

भरद्वाजेसमिधानो यविष्ठय,

रेवन्नः शुक्रदीदिहि,

द्युमत्पावक दीदिहि.

ऋ. सं. ४ अ. ८ अ. २ व. ७ मं.

हे देव! हे युवावस्थावाळा! हे दीप्ताग्नि! अमारा भाइ भरद्वाज तरफ निर्मल तेजथी वृद्धि पामतो तुं घणा तेज वडे अमे धनवान् थइये तेम प्रकाशमान था. अने हे पावक! अमे जेम कान्तियुक्त थइये तेम तुं प्रकाशमान था.

आनो बीजो भेद त्रिष्टुपमां मळी जतो होवाथी जूदो नथी गण्यो.

१६ उपरिष्टाज्ज्योतिर्जगती. ८, ८, ८, ८, १२ = ४४. १२, १२, १२, ८ = ४४.

चार पे'ला पाद थाय,
तेना वर्ण आठ गाय,
पांचमे बार रखाय,
चुंवालीशो ए गणाय,
उपरिष्टाज्ज्योतिर्जगती रचाय. १.
आदिना पाद त्रण बारना बने,
चोथो रह्यो छेल्लो ते आठनो अने
वर्ण चुंवालीशनी जे थाय गति
(उ)परिष्टाज्ज्योतिर्जगती. २

अग्निर्देवो देवानाम,

जगती छंद.

भूरिजादि उपभेद.

अक्षर संख्या.	छंदो जात.	उपभेद.		अक्षर संख्या.	छंदो जात.	उपभेद.	
		१	२			१	२
५	दैवी.	विराट्.		३८	आर्ची.	भूरिक्.	
६	,,	निचृत.		३९	आर्ची.	स्वराट्.	
७	दैवी.	०	आसुरी	४६	आर्षी.	विराट्.	
			विराट्.	४७	आर्षी.	निचृत्.	
८	दैवी.	भूरिक्.	आसुरी	४८	आर्षी.	०	
	,,		निचृत.	४९	आर्षी.	भूरिक्.	
९	आसुरी.	०	दैवी	५०	,,	स्वराट्.	
	,,		स्वराट्	७१	ब्राह्मी.	विराट्.	
१०	आसुरी.	भूरिक्.	याजुषी	७१	,,	निचृत्.	
	,,		विराट्.	७२	ब्राह्मी.	०	
११	,,	स्वराट्	याजुषी	७३	ब्राह्मी.	भूरिक्.	
	,,		निचृत.	७४	,,	स्वराट्.	
१२	याजुषी.	०					
१३	याजुषी.	भूरिक्					
१४	,,	स्वराट्					
२२	साम्नी.	विराट्					
२३	,,	निचृत्					
२४	साम्नी.	०					
२५	साम्नी.	भूरिक्					
२६	,,	स्वराट्					
३०	प्राजापत्या	विराट्					
३१	,,	निचृत्					
३२	प्राजापत्या	०					
३३	प्राजापत्या	भूरिक्					
३४	,,	स्वराट्					
३५	आर्ची.	विराट्					
३६	आर्ची.	निचृत्					
३७	आर्ची.	०					

जगती छंदना भेद.

संख्या.	जगती.	पादाक्षर प्रमाण.					
१	दैवी	....	....	....	....	....	७
२	आसुरी	....	....	....	....	....	९
३	याजुषी	....	....	....	....	....	११
४	साम्नी	....	....	....	....	....	२४
५	प्राजापत्या	....	....	....	....	....	३१
६	आर्ची	....	....	....	....	....	३६
७	ब्राह्मी........	....	....	....	....	....	७२
८	जागतपदा........	१२	१२	१२	१२	....	४८
९	महासतोबृहती.	८	८	८	१२	१२	४८
१०	आर्षी	....	....	....	....	....	४८
११	महापंक्ति	८	८	७	६,	१०,९	४८
	,, ...	८	८ ८	८ ८	८	....	४८
१२	चतुष्पाज्ज्योती:	८	१२	१२	१२	....	४४
१३	पंचपाज्ज्योती:	८	८	८	८	१२	४४
१४	पुरस्ताज्ज्योती:	१२	८	८	८	८	४४
	,, ...	८	१२	१२	१२	....	४४
१५	मध्येज्योती:	८	८	१२	८	८	४४
	,, ...	१२	१२	८	१२	....	४४
१६	उपरिष्टाज्ज्योती:........	८	८	८	८	१२	४४
	,, ...	१२	१२	१२	८	....	४४
१७	निचृत्.	....	....	....	....	....	४७
१८	भूरिक्.	....	....	....	....	....	४९

जे जगती छंदमां पोताना माप करतां एक अक्षर ओछो होय ते **निचृत् जगती** केहेवाय छे, तेम एक अक्षर वधारे होय ते **भूरिक् जगती** केहेवाय छे.

जे जगतीमां पोताना प्रमाणथी बे अक्षर वधारे होय ते **स्वराट् जगती** अने जेमां बे अक्षर ओछा होय ते **विराट् जगती** केहेवाय.

अष्टविध जगतीना निचृत् आदि भेद माटे जुओ नीचेनुं बिम्ब.

नास्य वेशि त्रिभुवना कृतं पुनः,
विद्वान्पथः पुर एत ऋजुनेषति. ।

भवदेव.

बीजा छंदनी पेठें आ छंदना शंकुमत्यादि भेद पण पडे छे एवुं महर्षि पिंगलाचार्य लखे छे.

परसप्तक.

आ सप्तकमां अति जगतीथी आरंभी अतिधृति पर्यन्तना छंदनो समावेश थाय छे. ए छंदनां नाम क्रमवार :—

१. अतिजगती   २. शक्वरी
३. अतिशक्वरी   ४. अष्टि
५. अत्यष्टि   ६. धृति
७. अतिधृति

आ प्रत्येक छंदनुं माप अने तेनो रचवानो विधि उदाहरण सहित आ नीचे क्रमवार आपवामां आवे छे, एथी स्पष्ट समजाशे.

आ साते छंदना निचृतादि चार चार प्रकारना भेद पण पडेछे.

ऋग्वेदमां म्होटामां म्होटो मंत्र अतिधृतिनो छे. तेथी वधारे अक्षरनो एक पण मंत्र तेमां नथी.

अतिजगती.[1] ५२ अक्षर.

अतिजगतीना पाद लौकिक रीते,
तेरवर्णना चार गणेछे जो प्रीते;
पण आ वेदे बावन अक्षर आवे,
नहि पादनो मेळ कशो पण लावे.

---

१. कोइ आचार्य आ छंदना पाद क्रमे १२, १२, १२, ८, ८=५२ लावावानुं कहेछे.

निचृत् जगती.

वर्ण ओछो एक सवाळे करजो,
निचृत् जगती जाणी स्मरजो,
ममता मनथी करी अरीपरी,
चित्तने चुस्त करी स्मरजो हरी.

उ०- शत क्रतुमर्णवं शाकिनं नरं-
गिरो म इन्द्रमुपयन्ति विश्वतः
वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरम्-
धामसाचं मभिषाचं स्वर्विदम् ॥

ऋ. सं. १ मं. ४ अ. ५१ सू. २ मं.

जेणे सो यज्ञ करेला छे, जे वर्षाने वरसावनारो छे, जेना बळवान साहायकारक छे, जे सर्व जगतनो नेता छे, जे अन्न आपनारो छे, जे शत्रुनां पुरनो नाश करनारो छे, जे युद्धमां उतावळो थसे छे, जे वर्षादिने प्रेरणा करनारो छे, जे तेजस्वी छे, जे शत्रुने हरावनारो छे, अने स्वर्ग लोकने आणवावाळो छे, ते इन्द्र प्रति मारी आ स्तुतिरुपी वाणी जाओ.

भूरिक् जगती.

जाण भूरिक् जगतीमां कविवर,
सरवाळे वधतो एक अक्षर,
भक्तिना भावथी लक्ष लावो गृही,
ईशना गुण गाने गुणोला कही.

उ०- इयो न विद्वां अयुजिरियं धुरि,
तं वहानि प्रतराणि मनश्रुतम् ।

मदाय प्रति धात्पिबध्यै शूरो मदाय

प्रतिधत्पिबध्यै. ।

ऋ. सं. ४ मं. ३ अ. २७ सू. ५ मं.

अर्थः—शूरवीर इन्द्र, हमणां उज्वल कलशमां रहेल गायना दूधथी भळल पुष्टि आपनार अने सारवाळुं सोम जेनुं नाम छे एवुं अध्वर्युथी अपायलुं अन्न, मधुर सोम लीधा पेहेलां मदने माटे ग्रहण करवाने मान आपो.

अतिशक्करी. ६० अक्षर.

अतिशक्वरी छंद साठ वर्णनो करजो,
ने अति शक्वरी एम नाम पण धरजो;
वेद विषे नहि पाद गणतरी जणवो,
चार तूक तो तिथिनो लौकिकमां भणवो.

सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा—

इमे सोमा सो मत्सरा इमे ॥

आ राजाना दिविस्पृशास्मत्रा गन्तमुप नः

इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्रा

गवाशिरः ॥

ऋ. सं. १ मं. २० अ. १३७ सू. १ मं.

हे मित्र अने वरुण तमे आवो. अमे पथ्थरवडे कूटीने सोमरस काहाड्यो छे आ मादक सोमरसमां गोरस (दूध) मेळवेलुं छे. आ सोम मादक छे. हे द्युलोकनिवासी राजा ! तमे अमारी पासे अमारा यज्ञमां आवो. हे मित्र अने वरुण आ

उ०—इति चिन्तु प्रजायै पशुमत्यै—

देवा सोवनते मर्त्योव आदेवासो—

वनते मर्त्यो वः ॥

अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या,—

जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जग्रसीत.

ऋ. सं. ५ मं. ३ अ. ४१ सू. १७ मं.

हे देवो ! आ प्रमाणे मनुष्यो तमने पशुपुत्रनी प्राप्ति थवा माटे यजे छे. तमोने यजे छे. आ यज्ञमां देवोए अनुग्रह करी जेने पुत्र आपेल छे एवा मारुं मुजनुं अन्न आप अंगिकार करो. निर्ऋति देवता अमारी वृद्धावस्थानो नाश करो.

शाक्करी[1] ५६ अक्षर.

शाक्करी ए शर्करी छंद बे नामी सारो,
लोकिक तो चौद वर्णना चार पसारो,
पण वेद विषे तो छप्पन वर्ण आवे,
जेमां भेद न कशो पादनो बतलावे.

उ०—अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तमा पिप्याने,

मघवाशुक्रमन्धः

अध्वर्युभिः प्रयतं मध्वो अग्रमिन्द्रो

---

१. कोई आचार्य आना पाद क्रमे ८,८,८,८,८,८,८= ५६ होवानुं जणावे छे.

कर अने दुर्जनोनो सदैव परिहर्त्ता—देदीप्यमान परिहर्त्ता था. पापी राक्षसोनो हननकर्त्ता अने मारा जेवा स्तोतानो त्राता था. केमके ते कारण माटे ज हे कृपालु इन्द्र! तने तारा पिताए उत्पन्न कर्यो. हे कृपालु इन्द्र, तने राक्षसना हनन माटे उत्पन्न कर्यो.

कात्यायनाचार्य आ छंदना पाद क्रमे १६,१६,१६,८, ८=६४ लाववानुं केहे छे.

दुर्मतिनाम् शब्दनी साथे पूरा थता पदना पेटा चरणमां पआहि न इन्दर एम वांचवुं. अने दुर्मती नाम् शब्दने बंने ठेकाणे दुर्मती न आम् एम वांचवुं. हणं त्वाजीजनद्रक्षो एटला चरणना आठ अक्षर थइ जतां तेनी पेहेलांना रक्षो ए बे अक्षर वधी पडे छे.

अत्यष्टि[1]. ६८ अक्षर.

अत्यष्टि छंदमां वेदमां अडशठ वर्णो आणे,
रणपिंगलमां सत्तर वर्णे चारे पादो जाणे,
वळी तेमां वृत्तियो गणीने वृत्त जूजवां कीधां,
सरसा स्वरथी गावा माटे गणो गोठवी दीधा.

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो-
जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्। १
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा। २

१. केटलाक आ छंदना पाद क्रमे १२, १२, ८, ८, ८, १२, ८ अक्षरना होवानुं जणावेछे.

दूध मेळवेलो सोम तमारो छे. आ तेजस्वी अने गोरस मिश्रित सोम तमारे माटे छे.

आ छंदना इमे सुधीना पदमां त्रण चरण अनुष्टुपनां छे तेना २४ अक्षर थाय छे. त्यारपछी नः सुधीना पदमां बंने पेटा चरण पण अनुष्टुपनां होतां तेना वर्ण १६ थाय छे. त्यार पछीनुं पद गवाशिरः सुधीनुं छेल्लुं छे तेमां पेहेलुं पेटा चरण जगतीनुं १२ वर्णनुं छे अने बीजुं अनुष्टुप्नुं ८ वर्णनुं छे एम तेना २० वर्ण गणतां एकंदर ६० वर्ण थाय छे.

कात्यायनाचार्यै आ छंदना पाद क्रमे
१६, १६, १२, ८, ८=६० लाववानुं कह्युं छे.

अष्टि. ६४ अक्षर.

अष्टि छंदे चोसठ वर्णो वेद विषे आवे छे,
पण पद रचना रणपिंगले बतावे छे;
सोळ तणा चार पाद शोभित समजावे छे,
पण ते सरखा गणना गणी गणी लावे छे.

पाहि न इन्द्र सुष्टुत स्रिधोऽवयाता सद-
मिद्दुर्मतीनां देवः सन्दुर्मती नाम्॥
हन्ता पापस्य रक्षसस्त्राता विप्रस्य मावतः
अधा हि त्वा जनिता जीजनद्वसो रक्षोहणं
त्वा जीजनद्वसो. ।

ऋ. सं. १ मं. १९ अ. १२९ सू. ११ मं.

अर्थ—हे सुस्तुत इन्द्र ! तुं अमारी द्वेपियोथी रक्षा

कर अने दुर्जनोनो सदैव परिहर्त्ता—देदीप्यमान परिहर्त्ता था. पापी राक्षसोनो हननकर्त्ता अने मारा जेवा स्तोतानो त्राता था. केमके ते कारण माटे ज हे कृपालु इन्द्र ! तने तारा पिताए उत्पन्न कर्यो. हे कृपालु इन्द्र, तने राक्षसना हनन माटे उत्पन्न कर्यो.

कात्यायनाचार्य आ छंदना पाद क्रमे १६,१६,१६,८, ८=६४ लाववानुं केहे छे.

दुर्मतिनाम् शब्दनी साथे पूरा थता पदना पेटा चरणमां पआहि न इन्दर एम वांचवुं. अने दुर्मती नाम् शब्दने बंने ठेकाणे दुर्मती न आम् एम वांचवुं. हणं त्वाजीजनद्रक्षो एटला चरणना आठ अक्षर थइ जतां तेनी पेहेलांना रक्षो ए बे अक्षर वधी पडे छे.

अत्यष्टि[1]. ६८ अक्षर.

अत्यष्टि छंदमां वेदमां अडशठ वर्णो आणे,
रणपिंगलमां सत्तर वर्णे चारे पादो जाणे,
वळी तेमां वृत्तियो गणीने वृत्त जूजवां कीधां,
सरखा स्वरथी गावा माटे गणो गोठवी दीधा.

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो-

जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।

य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।

1. केटलाक आ छंदना पाद क्रमे १२, १२, ८, १२, ८ अक्षरना होवानुं जणावेछे.

घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषा-

जुह्वानस्य सर्पिषः ॥ १

ऋ. सं. १ मं. १९ अ. १२७ सू १ मंत्र.

अर्थ—महोदर, कृपाळु, बळना पुत्र, उपजतां प्रज्ञावान् (कवि) एवा जे अग्नि तेने हुं होता मानीने पूजुं छुं. जे सुयज्ञ देव अत्युच्च दिव्य प्रभाथी अने तेजथी उना घीनी कान्तिनी इच्छा करेछे.

धृति. ७२ अक्षर.

धृति छंद छे, बोतेर अक्षर तणो वेदनी मांहे,
अढार केरा पाद जणावे रण पिंगलनो मांहे;
एवी रीते अढार चोकु बोतेर अक्षर थाशे,
जुजवी जुजवी वृत्तिथातां जुजवा वृत्त गणाशे.

अवर्मह इन्द्र दादृहि श्रुधी नः शुशोच हि

द्यौः क्षा न भीषाँ अद्रिवो घृणान्न भीषाँ अद्रिवः

शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरीयसे

अपूरुषघ्नो अप्रतीत शूर सत्वभिस्त्रिसप्तैः शूर

सत्वभिः

ऋ. सं. १ मं. १९ अ. १३३ सू. ६ मं.

अर्थः— हे इन्द्र ! तुं मोटा असुरोने विदारी नाख. अमारी प्रार्थना सांभळ. कारण, हे वज्रधर ! भूलोक प्रमाणेज, अंतरिक्ष भयथी संतप्त थयुं छे. हे वज्रधर ! भयथी जाणे अग्नि

१. कोइक आ छंदना पादक्रमे १२, १२, ८, ८, १६, ८=७२ होवानुं जणावे छे.

संतप्त थयो छे, तुं अतिशय बळवान्, प्रबळ अने प्रतापी शस्त्रो लइने धाउछुं. मनुष्योने न माननार तुं आ योद्धाओथी अप्रतिगत शूर, प्रबळ अने प्रतापी शस्त्रो लइने धाउछुं.

अतिधृति. ७६ अक्षर.

अति धृति ए छोतेर अक्षरतणो सामटो छंद छे,
ओगणीश अक्षरना एमां रणपिंगलमां फंद छे;
पांच लाखने हजार चोविश, जुओ गणत्री करतां,
बसें उपर इठ्ठासी बनशे वृत्ति गणतां गणतां.
(आ छंदनी ५, २४, २८८ वृत्ति थाय छे.)

उ०—स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिरप्नस्वती
षूर्वरास्विष्टनिरार्तनास्विष्टनिः ॥
आदद्धव्यान्याददिर्यज्ञस्य केतुरर्हणा
अधस्मास्य हर्षतो हृषीवतो विश्वे जुषन्त
पन्थां नरः शुभे न पन्थाम् ॥

ऋ. सं. १ मं. १९ अ. १२७ सू. ६ मं.

अर्थ—अने तें मरुतोना गण प्रमाणे प्रचंड नाद करनार छे, धान्यथी भरेला समृद्ध खेतरमां नाद करनार छे, अने सेनामां नाद करनार छे, प्राहुणो, अने यज्ञनो ध्वज, एवो अग्नि पूजा सहित हव्य स्वीकारी ले छे. माटे ज आनंदी अने संतोषवान् एवो जे आ अग्नि एना मार्गने सकळ जन भजे छे. म-

---

१. केटलाक आचार्य आ छंद्रना पादाक्षरनुं प्रमाण क्रमे १२,१२,८,८,८,८,१२,८ =७६ होवानुं जणावे छे.

नुष्यो जेम कल्याणार्थ सारो मार्ग भजे छे तेम सकल जन तेना मार्गने भजे छे.

आ वृत्तना पेहेला चरणमां **अप्नस्वतीषु उर्वरासु इष्टनिः। आरतना सु इष्टनिः।** एम वांचवुं. तेमज बीजामां **हव्यानि आददिः** एम वांचवुं वळी त्रीजाभां **स्म अस्य** एम वांचीने बंने अनुष्टुप चरण **विश्वे जुषन्त पन्थ आम् नरः शुभेन पन्थ आम्** एम वांचो एटले ७६ वर्ण पूरा थशे.

अपरसप्तक.

कृतिथी आरंभी उत्कृति पर्यन्तना छंद अपर सप्तकना छंद केहेवाय छे. ए छंदोनां नाम क्रमे—

१ कृति. २ प्रकृति. ३ आकृति.
४ विकृति. ५ संस्कृति. ६ अभिकृति.
७ उत्कृति.

आ छंदनुं आप अने ते रचवानो विधि उदाहरण समेत आ नीचे आप्यो छे एथी वांचनारने स्पष्ट समजाशे.

आ छंदना निचृत् आदि सामान्य चार चार भेद पण पडी शके छे.

कृति. ८० अक्षर.

कृति छंद ऐंशी अक्षरनो वेदे विस्तारीने कीधो सीधो,
रणपिंगलमां विश अक्षरनो पादज जणवी दीधो;
वृत्तरचे तो दश अडतालिश पांच छोतेर ज आवे,
विविध भातनां अने जातनां कविवर रची जणावे.

(१०, ४८, ५७६ आ छंदना भेद थाय छे.)

उ०—देव इन्द्रो नराशंस्मास्त्रिवरूथस्त्रिबन्धुरो देव-

मिन्द्रमवर्धयन् ।

शतेन शितिपृष्ठो नामाहितः सहस्रेण प्रवर्त्तते

मित्रावरुणेदस्य होत्रमर्हतो बृहस्पतिस्तोत्र-

मश्विनाध्वर्यवं वसुवने वसुधेयस्य वेतुयज ॥

य. सं. २८ अ १९ कं.

यज्ञदेवे जे ऐश्वर्यवाळा, त्रण गृहवाळा अने त्रिवंधुर, इन्द्रदेवनी वृद्धि करी ते काळापृष्ठवाळी हजार गायोथी प्रवर्त्ते छे. एना मित्रावरुण होता योग्य छे. बृहस्पति उद्गाता छे, अने अश्विनीकुमार एना अध्वर्यु थता योग्य छे.

प्रकृति. ८४ अक्षर.

प्रकृति रचना चोराशी अक्षरनी कुल थइ बनी आवे,
एकवीश अक्षरना चरण पाडी रणपिंगले बतावे,
बसिपर सत्ताणुंज धरीने एक उपर बावन आणे,
जुजवां जुजवां एवां ज वृत्त कविवर आप करी जाणे,

(आ २१ वर्ण पादना छंदना भेद, २०,९७,१५२ थायछे)

उ०-अश्रूर१९ शुष्ट देव सोमाप्यां यता मिन्द्रायैकधन

विदे । आतुभ्यमिन्द्रः प्यायता मात्वमिन्द्राय

प्यायस्व । आप्या ययास्मान् सखीन सन्या

मेधया स्वस्तिते देवसोम सुत्यामशीय ।

नुष्यो जेम कल्याणार्थ सारो मार्ग भजे छे तेम सकल जन तेना मार्गने भजे छे.

आ वृत्तना पेहेला चरणमां अप्नस्वतीषु उर्वरासु इष्टनिः। आरतना सु इष्टनिः। एम वांचवुं. तेमज बीजामां हव्यानि आददिः एम वांचवुं वळी त्रीजाभां स्म अस्य एम वांचीने बंने अनुष्टुप चरण विश्वे जुषन्त पन्थ आम् नरः शुभेन पन्थ आम् एम वांचो एटले ७६ वर्ण पूरा थशे.

अपरसप्तक.

कृतिथी आरंभी उत्कृति पर्यन्तना छंद अपर सप्तकना छंद केहेवाय छे. ए छंदोनां नाम क्रमे—

१ कृति. २ प्रकृति. ३ आकृति.
४ विकृति. ५ संस्कृति. ६ अभिकृति.
७ उत्कृति.

आ छंदनुं आप अने ते रचवानो विधि उदाहरण समेत आ नीचे आप्यो छे एथी वांचनारने स्पष्ट समजाशे.

आ छंदना निचृत् आदि सामान्य चार चार भेद पण पडी शके छे.

कृति. ८० अक्षर.

कृति छंद ऐंशी अक्षरनो वेदे विस्तारीने कीधो सीधो,
रणपिंगलमां विश अक्षरनो पादज जणवी दीधो;
वृत्तरचे तो दश अडतालिश पांच छोतेर ज आवे,
विविध भातनां अने जातनां कविवर रची जणावे.

(१०, ४८, ५७६ आ छंदना भेद थाय छे.)

उ०—देव इन्द्रो नराशंसस्त्रिवरूथस्त्रिबन्धुरो देव-

स्वत्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतया-

ङ्गिरस्वद्ध्रुवेसीदतम् ॥

अर्थ—हे स्वय मातृणे ! परमेष्ठी प्रजापति अभिव्यक्ति अने विस्तारवाळी तने स्वर्गनां पृष्ठपर स्थापो.

हे इष्टके ! तुं स्वर्गने नियममां राख, ए स्वर्गने दृढ कर; ए स्वर्गनो नाश नहि कर कारण के ए फरता अने स्थिर प्राणीमात्रना प्राण, अपान, उदान, अने व्यान वायुनी स्थिति माटे छे.

सूर्य चारे तरफनी मोटी योग क्षेमवाळी संपत्तिथी अने शुभकारक तेजथी तारूं रक्षण करो. अंगिराना चयनानुष्ठान वेळा तुं जेवी स्थिर हती तेवी हमणां स्थिर था.

विकृति. ९२ अक्षर.

विकृति रचना बाणु अक्षरनी बतलावी वेद विषयमां.
रणपिंगलमां त्रेवीश वर्णो रचवा जणव्युं पाद विषयमां,
त्राशी उपर इठ्ठाशी ने वळी तं पर षटशत वसन गणावे.
वृत्त भगवानो शिशुनो मरजी तो कविवर ते गणी भणावे,
आ छंदना ८३, ८८, ६०८ भेद थाय छे.

उ०—विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे,

व्यचस्वतीं प्रथस्वती मन्तरिक्षं यच्छा—

न्तरिक्षं दृ९ हान्तरिक्षं माहि९ सीः ।

विश्वस्मै प्राणाया पानाय व्यानायो

दानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय । वायुष्ट्वा.

एषाराय: प्रेषे भगाय ऋतमृत वादिभ्यो

नमो द्यावा पृथिवीभ्याम् ॥

यं. सं. ५ अ. ७ कं.

अर्थ—हे सोमदेव! सोमरुप धन मेळववावाळा इन्द्रनी प्रीति माटे तारा अंश अने सर्व अवयव पण वधो, किंच हे सोम! तारा मान माटे इन्द्र वृद्धि पामो अने तुं पण इन्द्रना मान माटे सर्व प्रकारे वृद्धि पाम. हे सोम, सखा पेठे, अमो ऋत्विजोने पण प्रज्ञाथी वृद्धि पमाड. हे सोम! तारुं कल्याण थाओ. तारा प्रसादथी हुं सोमाभिषव क्रिया यज्ञसमाप्तिदिन पर्यन्त मेळवुं. अमे ऐश्वर्य माटे धननी अपेक्षा राखियेछिये. सत्यवादियोनां कर्मनुं फळ थाओ अने पृथ्वी तथा स्वर्गना देवोने नमो.

आकृति. ८८ अक्षर.

आकृति इठ्ठाशी अक्षरनो चरण भेदवण वेद वखाणे,
रणपिंगलमां बावीश अक्षर चरणे चरणे कवि आणे;
एकतालीश उपर चोराणुं बणशो उपर चार जणाय,
एज प्रकारे जुजवे नामे कविवर वृत्त रची खुश थाय.

आ छंदना ४१, ९४, २०४ भेद थाय छे.

उ०—परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे व्यचस्वती

प्रथस्वतीं दिवं यच्छ दिवं दृ॒ंह दिवं मा

हिंसीः।

विश्वस्मै प्राणाया पानांय व्यानायो दाना

प्रतिष्ठायै चरित्राय। सूर्यस्त्वाभिपातु मह्या

स्वत्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतया-

ङ्गिरस्वद्ध्रुवेसीदतम् ॥

अर्थ—हे स्वय मातृणे! परमेष्ठी प्रजापति अभिव्यक्ति अने विस्तारवाळी तने स्वर्गनां पृष्ठपर स्थापो.

हे इष्टके! तुं स्वर्गने नियममां राख, ए स्वर्गने द्रढ कर; ए स्वर्गनो नाश नहि कर कारण के ए फरता अने स्थिर प्राणीमात्रना प्राण, अपान, उदान, अने व्यान वायुनी स्थिति माटे छे.

सूर्य चारे तरफनी मोटी योग क्षेमवाळी संपत्तिथी अने शुभकारक तेजथी तारूं रक्षण करो. अंगिराना चयनानुष्ठान वेळा तुं जेवी स्थिर हती तेवी हमणां स्थिर था.

विकृति. ९२ अक्षर.

विकृति रचना बाणुं अक्षरनी बतलावी वेद विषयमां.
रणपिंगलमां त्रेवीश वर्गो रचवा जणव्युं पाद विषयमां,
त्राशी उपर इठ्याशी ने वळी तं पर षट्शत वसन गणावे.
वृत्त भणवानो शिशुनो मरजी तो कविवर ते गणी भणावे,
आ छंदना ८३, ८८, ६०८ भेद थाय छे.

उ०—विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे,

व्यचस्वतीं प्रथस्वती मन्तरिक्षं यच्छा—

न्तरिक्षं दृ९ हान्तरिक्षं माहि९ सीः।

विश्वस्मै प्राणाया पानाय व्यानायो

दानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय। वायुष्ट्वा.

पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्त मेन

तयाङ्गिरस्वद् ध्रुवासीद ॥

य. सं. १४ अ. १२ कं.

अर्थः—हे ! स्वय मातृणे! विश्वकर्मा प्रजापति, अभिव्यक्ति अने विस्तारवाळी तने अन्तरिक्षना पृष्टपर स्थापो.

हे ईष्टके ! तुं अन्तरिक्षने नियममां राख अने अन्तरिक्षने दृढ कर. तेनो नाश नहि कर. कारण के ए अन्तरिक्ष चर अने स्थिर प्राणीमात्रना प्राण, अपान, व्यान अने उदान वायुनी स्थिति माटे छे.

वायु चारे तरफथी मोटी योग क्षेमवाळी संपत्तिथी अने शुभकारक तेजथी तारूं रक्षण करो. अंगिराना चयनानुष्ठान वेळा तुं जेवी स्थिर हती तेवी हमणां तारा अधिष्ठाता देवना अनुग्रहथी स्थिर था.

संस्कृति. ९६ अक्षर.

छन्नु अक्षर एकन्दरमां संस्कृति रचवा वेद विगत जणवें,
चोविश अक्षर चरण चरणमां रणपिंगल जणवे गणवें;
एक उपर सडशठ, सित्तोतेर, बे ने सोळ बतावे कविवर
वृत्तरचना करवाली तुं कर विविध प्रकारे, नाम कविधर.
आ छंदनां १, ६७, ७७, २१६ वृत्त थाय छे.

उ०—देवो अग्निः स्विष्टिकृत् । सुद्रविणामन्द्रः
कविः । सत्यमन्मायजी, होताहोतु होतुरायजी,
यानग्रेयान् देवानयक्षा, अपि प्रर्य्यते होत्रे,
अमत्सासता समनुवाम्, होत्रादेवंगमां,
दिविदेवेषु यज्ञपुरये, संस्विष्टि-

कृच्चाग्रे होताभूर्वसुवने वसुधेयस्य,
नमो वाके वीहिवौषद् ॥

य. सं. २८ अ. ४५ कं.

अभिकृति. १०० अक्षर.

अभिकृति शत अक्षर एकन्दर वेद विगतसर बतलावे छे,
पचविश चरण चरणपर अक्षर रणपिंगल गणी लावे छे;
अण करोड पर पांतरीश कही चोपन ते पर युग बतरीश;
तुज मननी मरजीसम विध विध रचना वृततणी तुं करीश.

आ छंदनां वृत्त ३, ३९, ५४, ४३२ थाय छे.

उ०–संवत्सरोऽसि, परिवत्सरोऽसी दावत्सरोऽ
सीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि । उषसस्ते कल्प–
न्ताम महोरात्रास्ते कल्पन्ता मर्धमासास्ते
कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्ता मृतवस्ते क
ल्पन्ता ᳖ संवत्सरस्ते कल्पन्ताम् । प्रेत्या
एत्यै सञ्चाञ्च प्रचसारय सुपर्ण चि-
दसि देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ॥

य. सं. १७ अं. ४५ क.

अर्थ–हे अग्ने! तुं संवत्सर छुं, परिवत्सर छुं, ईदावत्सर छुं, ईत्वत्सर छुं, अने वत्सर छुं, एटले युगरूप पण छुं. तारा संगम मध्यान्हादि अवयव कल्पाओ, दिनरात्री कल्पाओ. तारा पक्ष कल्पवामा आवे, तारा मास कल्पवामां आवे, तारी ऋतु कल्पवामां आवे, अने संवत्सर कल्पवामां आवे, गमनागमन माटे पोताना स्वरूपने तुं स्वेच्छानुसार संकुचित अने

विकासित करे छे. तुं सुपर्णाकार जेवा चिन्हवाळो छुं, ए दैवत सहित तुं जेम अंगिराना कर्ममां स्थिर रह्यो हतो तेम स्थिर था.

उत्कृति १०४ अक्षर.

उत्कृति रचवा शत ने युग[४] थई अक्षर जुजवा पदन्दरमां आवे,
छव्विश अक्षर प्रतिपाद रणपिंगलमां गणतरी करी गणावे;
छ पर इकोतेर शून्य पन्नग वसु धरी करीने चोशठ लावे,
वृत्तरचना कुल चरण चरणनी थइ रही तेनो हद बतलावे.

आ छंदनां वृत्त ६, ७१, ०८, ८६४ थाय छे.

उ०–शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू अग्नेरन्तः
श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्ता
माप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथन्ताम
द्यावा पृथिवी इमे ग्रैष्मावृतू अभिकल्प
माना इन्द्रमिव देवा अभिसं विशन्तु
तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.

य. सं. १४ अ. ६ कं.

अर्थ—ज्येष्ठ अने आषाढ ए ग्रीष्म ऋतु छे, हे ग्रीष्म ऋतु ! तुं चीयमान अग्निनी अन्तश्लेष छुं, ते प्रमाणे अग्नि चयन करता मारा यजमानना तुं उत्कर्ष करनार, अने उपकारक था. अथवा ते प्रमाणे पृथ्वी अने स्वर्ग तारा उत्कर्ष माटे कल्पवामां आवे ओषधियोने एक ज चयनाख्य कर्ममां रहेला नाना प्रकारना स्वयमातृणादि इष्टका (अग्नि) तारा उत्कर्ष माटे कल्पवामां आवे—

अर्थात् तारो उत्कर्ष करे. स्वर्ग अने पृथ्वीनी वच्चे रहेला एक चित्तवाळा ग्रीष्म ऋतुतरिके कल्पायला अग्नि देव जेम इन्द्रमां अने इन्द्र जेम देवमां प्रवेश करेछे तेम देव प्रमाणे आसादित थयेल हे अग्नि! तुं अंगिराना कर्ममां स्थिर थइने रह्यो हतो तेम अत्र पण स्थिर था.

उत्कृतिनुं बीजुं उदाहरणः—

होता यक्षदश्विनौ छागस्य (१)

हविष आत्तां मद्य मध्य (२)

तो भेद उद्भृतं (३)

पुरा द्वेषोभ्यः (४)

पुरा पौरुषेय्या गृभो (५)

घस्तान्नूनं घासे अज्राणां (६)

यवसप्रथमानाँ (७)

सुमत्क्षराणा ँ शतारुन्द्रियाणाम् (८)

अग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां (९)

पार्श्वतः श्रोणितः शितामतः (१०)

उत्सादतोऽङ्गादङ्गदवत्तानां (११)

करत एवाश्विना जुषेता ँ (१२)

हविरेवाश्विनाजुषेताम् (१३)

(यजुर्वेदे—अ० २१, म० ४३.

बीजा अने त्रीजा सप्तकना अतिजगत्यादि छंद.

संख्या.	छंद.	पादाक्षर प्रमाण.							
१	अतिजगती.	१२	१२	१२	८	८	...	...	५२
२	निचृत् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	५१
३	विराट् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	५०
४	भूरिक् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	५३
५	स्वराट् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	५४
६	शक्करी.	८	८	८	८	८	८	८	५६
७	निचृत् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	५५
८	विराट् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	५४
९	भूरिक् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	५७
१०	स्वराट् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	५८
११	अतिशक्करी.	१६	१६	१२	८	८	...	...	६०
१२	निचृत्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	५९
१३	विराट्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	५८
१४	भूरिक्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	६१
१५	स्वराट्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	६२
१६	अष्टि	१६	१६	१६	८	८	...	...	६४
१७	निचृत् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६३
१८	विराट् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६२
१९	भूरिक् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६५
२०	स्वराट् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६६
२१	अत्यष्टि	१२	१२	८	८	८	१२	८	६८
२२	निचृत् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६७
२३	विराट् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६६
२४	भूरिक् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	६९
२५	स्वराट् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	७०
२६	धृति	१२	१२	८	८	१६	८	८	७२
२७	निचृत् धृति	...	...	...	...	...	...	...	७१

संख्या.	छंद.	पादाक्षर प्रमाण.								
२८	विराट् धृति.									७०
२९	भूरिक् धृति									७३
३०	स्वराट् धृति									७४
३१	अतिधृति .	१२	१२	८	८	८	८	१२	८	७६
३२	निचृत् अतिधृति									७५
३३	विराट् अतिधृति									७४
३४	भूरिक् अतिधृति									७७
३५	स्वराट् अतिधृति									७८
३६	कृति									८०
३७	निचृत् कृति									७९
३८	विराट् कृति									७८
३९	भूरिक् कृति									८१
४०	स्वराट् कृति									८२
४१	प्रकृति.									८४
४२	निचृत प्रकृति.									८३
४३	विराट् प्रकृति.									८२
४४	भूरिक् प्रकृति.									८५
४५	स्वराट् प्रकृति.									८६
४६	आकृति.									८८
४७	निचृत आकृति.									८७
४८	विराट् आकृति.									८६
४९	भूरिक् आकृति.									८९
५०	स्वराट् आकृति.									९०
५१	विकृति.									९२
५२	निचृत विकृति.									९१
५३	विराट् विकृति.									९०
५४	भूरिक् विकृति.									९३
५५	स्वराट् विकृति.									९४
५६	संस्कृति.									९६
५७	निचृत संस्कृति									९५
५८	विराट् संस्कृति.									९४
५९	भूरिक् संस्कृति									९७
६०	स्वराट् संस्कृति.									९८

हविरेवाश्विनाजुषेताम् (१३)

(यजुर्वेदे—अ० २१, म० ४३.

बीजा अने त्रीजा सप्तकना अतिजगत्यादि छंद.

संख्या.	छंद.	पादाक्षर प्रमाण.								
१	अतिजगती.	१२	१२	१२	८	८	...	...	...	५२
२	निचृत् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	...	५१
३	विराट् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	...	५०
४	भूरिक् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	...	५३
५	स्वराट् अतिजगती.	...	...	...	...	...	...	...	...	५४
६	शक्करी.	८	८	८	८	८	८	८	...	५६
७	निचृत् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	...	५५
८	विराट् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	...	५४
९	भूरिक् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	...	५७
१०	स्वराट् शक्करी.	...	...	...	...	...	...	...	...	५८
११	अतिशक्करी.	१६	१६	१२	८	८	...	...	...	६०
१२	निचृत्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	...	५९
१३	विराट्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	...	५८
१४	भूरिक्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	...	६१
१५	स्वराट्. ,,	...	...	...	...	...	...	...	...	६२
१६	अष्टि	१६	१६	१६	८	८	...	...	...	६४
१७	निचृत् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६३
१८	विराट् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६२
१९	भूरिक् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६५
२०	स्वराट् अष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६६
२१	अत्यष्टि	१२	१२	८	८	८	१२	८	...	६८
२२	निचृत् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६७
२३	विराट् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६६
२४	भूरिक् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	६९
२५	स्वराट् अत्यष्टि	...	...	...	...	...	...	...	...	७०
२६	धृति	१२	१२	८	८	१६	८	८	...	७२
२७	निचृत् धृति	...	...	...	...	...	...	...	...	७१

रणपिंगल भाग. ३ जो.

डिंगल

अथवा

मारवाडी गीत रचना

रघुनाथ रूपक अने बुद्धिविलास आदि

ग्रंथो उपरथी

गूर्जर भाषामां रचनार

रणछोडभाई उदयराम

अेओअे

वडोदरा नूतनविलास प्रिन्टिंग प्रेस

अने

अमदावादना आर्योदय प्रेसमां मुद्रांकित करावी

प्रसिद्ध कर्युं.

संवत् १९६१ सन १९०५.

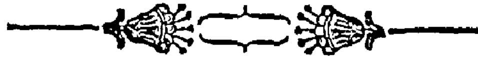
मूल्य बार आना.

संख्या.	छंद.	पादाक्षर प्रमाण.
६१	अभिकृति.	१००
६२	निचृत अभिकृति.	९९
६३	विराट् अभिकृति.	९८
६४	भूरिक् अभिकृति.	१०१
६५	स्वराट् अभिकृति.	१०२
६६	उत्कृति.	१०४
६७	निचृत् उत्कृति.	१०३
६८	विराट् उत्कृति.	१०२
६९	भूरिक् उत्कृति.	१०५
७०	स्वराट् उत्कृति.	१०६

अनुक्रमणिका.



रणपिंगल भाग ३ जो.



डिंगल अथवा गीतरचना.

मात्रामेळ समगीत.

१. प्रथम गोखो.

आठ अक्षर, तेनी मात्रा बार, अेवां आठ चरण, तेमां आठमा चरणमां विप्सा आवे.

आठेना सरखा प्रास मळे अने अन्ते गुरुलघु आवे. अेवा चार दवाला करवा.

दुहा.

अक्षर आवे आठ ने, मात्रा तेनी बार;
आठ चरण अेवां रची, अन्ते गुरुलघु धार.
प्रास मळे आठे तणा, एवी जुगती जाण.
गोखो रचतां कवि सदा, विप्सा आठे आण.

उदाहरण.

दुरगुण नथी एक,	१०४
पुरेपुरो छे विवेक,	११३
निजनो टकावे टेक;	९४
साचवी सद्बुथी नेक.	१०४
रुडा साथ एकमेक,	११६
भुंडाने दइने ठेक,	१०३
कायर करेछे छेक,	९६

पसारे सुबे'क बे'क. १. ११६
आवो जन रुडो जाण, १०६
वरताय जेनी आण; ९४
लोक सौ करे प्रमाण; १०४
सत्यतणो साचो भाण. ९२
वागे शरीरमां बाण, १०६
एम वदे भुंडी वाण; १०१
तोपण ना थाय हाण, ११४
वळे नहि घाण घाण. २. ११२
तोपण वक्यो जे जाय, ९६
निन्दाखोर ज गणाय; १३२
खोटुं तेथी जे बकाय, ११७
तेनो तन लागे लाय; ९६
क्यम करी ना ओलाय, ९७
ए पाप पिंडने खाय; १०६
रुडो ते रुडो जणाय, ११५
भुंडा भुंडाथी हणाय. ३. ११२
निन्दा मांह नथी सार, १३२
ए तो आप हणनार; १३२
कुडी पेसती कटार; ११६
वळी असी केरी धार. ९४
जीभ तारी कापनार, ११७
माटे तेने तुं निवार; १२९
नहि तो ते करी ठार, ९९

आणे तुज पार पार. ४. १२०

उपर प्रत्येक चरणनी सामे अंक मूक्या छे, ते बारमात्राना प्रस्तारमां केटलामुं रूप थायछे ते दर्शावेछे.

प्रथम गोखो.

विदेहतणे दिवाण, ईश चाप धरे आण;
तोडवा अनेक ताण, उठीया करे अपाण;
राजा राय अने राण, पिनाकरे धरे पाण,
इले होय हींण माण, दईवाण दईवाण.

अथगीत जाति गोख.

मांझी मेघहरो मछराल[3], हुंतल[4] मेल[5] हाथाल;
जैत्र[6] वांदी[7] जम[8] जाल[9], केपियांरो कांल[10].
शूरधीर सपखाल[11] आसुरां[12] भीमां उजाल[13],
आंणुआं[14] लाखो भूजाल, पाल पाल पाल. १
दूसरो खेंग[15] दुबाह, रुक[16] हथौ[17] रिम[18] राह[19],
चीति क्रीति राखे चाह, वाह वाह वाह. २
मोभारां करो जेरद[20], मुगलां[21] उतारे मद,
[22]बांहलो खाटे विरद, मरदांरा मरद.
[23]रिमा खांगे[24] करे रद, बहु लीयेशु शबद[25],
हींदुए हद बिरद, जद[26] जद जद. ३
भारा हेरो[27] कुल भाण, कविंदां दिये केकाण[28];[29]

१ मालक. २ मेघजीनो वंशज. ३ मोटो. ४ थतो. ५ पंझावाळो–६ जयकारी. ७ लढाई. ८ जमनो समुह. ९ वहु. १० शत्रु. ११ जेना वखाण सारा. १२ आमर. १३ भीमांणी. १४ चारण. १५ खेंगारजी, १६ तरवार. १७ हाथमां. १८ फोज. १९ रस्तो पाडवावाळो २० बखतर. २१ मोगलनो. २२ भुजाथी २३ शत्रु. २४ खड्ग. २५ जश. २६ जगदेव. २७ शौर्य. २८ घोडा. २९ आ बुद्धिविलासनुं उदाहरण छे.

वांची जेवडा वखाण, प्रथवी प्रमाण.
मारको अमली मा[1]ण, जाडेजा जोध जुवाण;
वि[2]रति [3]दत्ति वी[4]र्नोण, जाण जाण जाण. ४

२. एकाक्षरो. इकखरो.

१. पादमां=१४
२. पादमां=१४
३. पादमां=१४
४. पादमां=१४
मात्रा तेमां अन्ते रगण. चारेनां म्होरां मळे.

दरेक दवालो आ प्रमाणे करवो.

दुहा.

प्रति चरणे धर चौद कल, अन्ते रगण रचाय;
अन्त्याक्षर चारे पदे, एनो एज धराय;
एने के' एकाक्षरो, डिंगळनो रचनार;
मो'रां चारे मेळवे, आ कविता करनार.

उदाहरण (नीति विषे).

नीति सजीले वेश रे, २९०
रूडापणानो वेश रे; ३३९
प्रभुए दीधेली शेश रे, २५०
एथी समे सौ क्लेश रे; १ २४२
शिक्षातणो ए सार रे, ९३
जन सौतणो शणगार रे; १२८
सज्झड सजी मन धार रे, १३८
प्रभु पामवानो पार रे. २ ९४
छे कवच रक्षा काज रे, ९६
नीति उगारे लाज रे; ९३

१ अहंकार. २ वीर. ३ दातारी. ४ खामी नहि.

पण राखवानुं साज रे; ९४
सद्गुण केरूं ताज रे. ३ ९३

नीति खरी जन प्राण छे, ११९
माटे धरे जे जाण छे; ९३
जन माप केरुं प्रमाण छे, १२८
गुण-संघरानी खाण छे. ४ ९४

इक्कखरो.

शुण शेष रे, शुण शेष रे,
दिल केकइ उपदेश रे;
वनवास जावण वेश रे,
इम आखियो अवधेश रे.

३. (द्वितीय) अर्द्धभाख-गजल.

१. ४+५+५=१४ २. ४+५+५=१४ ३. ४+५+५=१४ ४. ४+५+५=१४	१, २ ना प्रास मळे. ३, ४ ना प्रास मळे. अन्ते गुरुलघु आवे.

दुहा.

चार पांच ने पांच थइ, कन्य कल चौद प्रमाण;
पे'ला बीजा पदतणा, प्रास मेळवी आण;
त्रीजा चोथा पदतणां, मो'रा मळतां जाय;
अर्द्धभाख के गजल आ, गुरुलघु अन्त रचाय.

उदाहरण शीलविषे.

शील जे साचवे छे नार, २४३
आखा कुलतणो शणगार; ३३९
स्वामी घरतणो उजाश, २९०

प्रीति जोडनारों पास. १	२४२
जेको शीलवंती होय,	२४२
तेने शके न डुभवी कोय;	३१०
शील जे साचवे सुखदाय,	३३२
तेने प्रभू सदा दे सा'य. २	२५०
घरमां शीलवंती नार,	२४३
तेना भाग्यनो नहि पार;	३३१
कुलने तारनारी नाव,	२४३
वर संसार तरवा दाव. ३	२७७
सौ शणगारनो शणगार,	३३४
उत्तम सतितणो अवतार,	३४२
हीरा मणि थकी ए बेश,	२५०
चढतो सर्वथी छे वेश. ४	२४३

अर्द्धभाख.

चित्रह कूटशुं भुज चंड,
कस भूथांण गह कोडंड;
परभु किता वासर पाय,
अत्रितणे आश्रम आय.

४. भाख.

१. ४+५+२+ग, ल=१४	}	चारे चरणनां म्होरां मळे.
२. ४+५+५ =१४		
३. ४+५+५ =१४		
४. ४+५+५ =१४		

आवो दरेक दवालो करवो.

१ साधु.

दुहा.

चार पांच ते पांच कल, प्रतिपद मांहे आण;
चौद कळा चारे पदे, भाख्र साखमां जाण.
अन्ते गुरु लघु ते विषे, चारे पद सोहाय;
मोरां चारे पदतणां, शोभित मळतां थाय.

उदाहरण (आशानी सीमा.)

आशा अंतरे जे थाय, २१२
चडती शक्तिथी तव चा'य; ३३२
संभव जेटलो ज जणाय, ३३४
आशा तेज योग्य गणाय. १. ३३१
खोटी करे आशा कोय, २३७
पाछळ पडे तेवो सोय; २१०
मेजे आवतुं ते खोय, २१२
पूठे पोको मुकी रोय; २. २५१
आशा जेटलो श्रम थाय, २३१
तो ते कूदके पो'चाय; २१२
सीमा साचवी के'वाय २१२
हांसी थोकनां न गवाय. ३. ३३१
आशा निराशा तो थाय, २३७
सीमा साचवी ना जाय; २१२
जोने हृदय नहि वळी वांय; ३७२
मन तज खोटे ते मन वाय. ४. २११

साख.

[illegible],
[illegible];
[illegible],

इम आवास जाय उमंग.

५. उवंग.

१. पादमां १०+४=१४ ⎫ चारेना म्होरां मळे. म्हो-
२. पादमां १०+४=१४ ⎬ रांमां चोकलियो (एक)
३. पादमां १०+४=१४ ⎪ गण आवे
४. पादमां १०+४=१४ ⎭ चोथी झडमां विप्सा आवे.

आवा ४ दवाला करवाथी आ गीत थाय.

दुहा.

दश पर चोकलियो धरी, चौद कला कर एम;
विप्सा चोथा पादमां, आवे शोभे जेम;
मो'रां चारे पदतणां, सरखां मळतां जाय;
डिंगळमां ए गीतनुं, उवंग नाम कथाय.

उदाहरण.

गीत उवंगमांह गाजो, ४६
परम प्रभुपद सरस सा'जो; ८९
नित्य नीति नीर न्हाजो, ३६
धाम धाजो धाम धाजो. ३६

उवंग.

लंगरी रिमसेन लाडो,
गुमर धारक लाज गाडो;
इळ जडे कुंभेण आडो,
जूज जाडो जूज जाडो.

६. सावक[1] अडल.

१, = १६ चारे चरणनी अन्ते चोकलियो
२, = १६ एकनो एकज शब्द आवे.

१ वाघनी पेठे चारे चरणनो छेल्लो शब्द अडल रहे माटे सावक अडल.

३, = १६
४, = १६

आवा चार दवाला करवामां आवे तो **सावकअडल** गीत थाय अने एकज दवालो करे तो **गाहाचोसर** अथवा **बीजो सावकअडल** केहेवाय.

दुहा.

बार उपर कल चार कर, प्रति पद सोळ कलाय;
तेमां अन्ते चार कल, चरणे छूटी थाय;
तेना अक्षर होय ते, चारे मो'रा मांय;
तेना तेज धन्या करे, सावकअडल रचाय.

उदाहरण.

राम अने लक्ष्मण सुत दसरथ, १९६७
उभय गया वन सांभळी दशरथ; १९३४
दिले उचाट करे अति दसरथ; ११३२
पाछळ प्राण गया नृप दसरथ. १. १९३३
नृप तनु जतन करी निज हाथे, १७८
पत्र लख्यो मंत्री निज हाथे; १४३
मेली एने वायक हाथे, १४९
कह्युं भरथने देजे हाथे. २. १२
मोसाळे सूता त्यां आव्यो, १
अशुभ शुपन भरथने आव्यो; ९
उठी शत्रुघन पासे आव्यो, ३४
भाई आ बोलावा आव्यो. ३. १
दारुण नगर शोकयुत देखी, २९८
दोलत वणज बजार न देखी; १७७

दुंदूभीं गर्जन गान न देखी, १६४
ढंग विनाना गढने देखी. ४. ९९

सावक अडल.

दासरथी लखमण सुत दसरथ,
दोऊ शुणे सिधाए दशरथ;
दीह उचाट करें दील दसरथ,
दीधा प्राण पिछाडी दसरथ. १
पहतन जतन कियो जलपाणा;
पत्र लिखे मंत्री निज पाणा;
वायक तेड त्रवे खत पाणा;
पुणे भरथचे दीजे पाणा; २
वे मोसाल निंदवश आये,
अणशुभ सुपन अनेको आये;
उठ कडकस शॅत्रघण उप आये,
आतुर उभे अयोध्या आये. ३
दारूण नगर शोकयुत देखे;
दोलत वणज बजार न देखे;
दुंदभ गरज गान नह देखे;
दुरंग अढंग आय कर देखे. ४

७. गाहा चोसर.

१. = १६
२. = १६
३. = १६
४. = १६

चारे चरणने अन्ते चोकलिये एकनो एकज शद्ब आवे.

आ गीतमां उपरना मापनो एकज दवालो करवो.

उदाहरण.

वायक तेडी मूक्यो वाटे, ४
आपी खरची खपती वाटे; ६४
कह्युं चोरनो भय छे वाटे; ६२
रे'जे रात टपामां वाटे. २२

गाहा चोसर.

निरखे आवासां भर नीजर,
नह देखे दसरथ नृप नीजर;
निज देखे नह बंधव नीजर;
नर दीठा विलखा सह नीजर.

८. उमंग.

१. पादमां	=	१६	अन्ते ग.	चारेनां मोहोरां मळे.
२. पादमां	=	१६	अन्ते ग.	तोटकमां स चारनी १६ मा-
३. पादमां	=	१६	अन्ते ग.	त्रा थायछे—तेना रागे गवा-
४. पादमां	=	१६	अन्ते ग.	य छे.

आवा दरेक दवाला करवा.

(दोहरा.)

चरण चरणमां सोळ कल, तेमां गुरु वर अन्त;
चारे म्होरां मेळवी, उमंग रच धीमन्त;
आठे यति करी सोळ कल, चरण चरणमां आण;
म्होरां चारे पादनां, तेमां मळतां जाण.

उदाहरण.

घटी नेन नजर वपु वृद्ध थतां, ४६३
मुख गाल नम्या रद पंक्ति जतां; ४४२
वपु वर्ण फर्‍यो रत तो घटतां, ४४२
दिन गाळ हवे प्रभुने रटतां. ४४२

उमंग.

कटिया श्रुति नाक लिया करमें,
रचना कह सूपनखा घरमें;
नारी इक वीर उभे नरमें;
तिसडी न लखी सुपनंतरमें.

९. कविइलोल, झडउथल, घडउथल.

१. ८ मात्राए यति=१६ २. ८ मात्राए यति=१६ ३. ८ मात्राए यति=१६ ४. ८ मात्राए यति=१६	चारेनां मोहोरां मळे. पेहेली तुकना शब्द थोडाक फेरवीने बाकीना बधा जेमना तेम राखीने चोथी तुक करवी. ने बीजीमां एवोज फेरफार करीने त्रीजी करवी.

बीजीनो उथलो करीने त्रीजी तुक अने पहेलीनो उथलो करीने चोथी तुक करवी.

आवा दरेक दवाला करवा.

दुहा.

आठे यति करी सोळ कल, चार चरणमां आण;
मो'रां चारे पादनां, तेमां मळतां जाण;
पे'ला पदना अन्तना, शब्द लेइने आप;
चोथा पदना अन्तमां, तेना तेज तुं थाप;
तेमज बीजाना घणा, त्रीजा मांह धराय;
कवि इलोल के झडउथल, ए रीते ज रचाय.

उदाहरण.

धनना मदथी नहि भूल माते; ४४२
नथी सार कशो एमांह राति; ३८७

हत सार कशो एमांह रात,
धर्नी थात जति, नहि भूल मति.

कविइलोल वा घडउथल.

मंदोदर भोले भूल मती,
जल आसी वारध लांव जती;
जल आयर वारध लांध जती,
मुह मंडे भोले भूल मती.

१०. धमाल.

१, ४+५+२+गल+९=२३
२, ४+५+२+गल+९=२३
३, ४+५+२+गल+९=२३
४, ४+५+२+गल+९=२३

} चारेनां मोहोरां मळे, तेमां लघुगुरु आवे.

आवा प्रत्येक दवालो करवा.

दुहा.

चार पांच ने पांच करीँ, भाख चरण सम आण;
ते पर नव कल वळीँ करी, त्रेवीशनुं पद जाण;
मो'रां चारे मेळवी, लघु गुरु अन्ते धार;
गीत धमाल भलु बने, गातां अति सुखकार.

उदाहरण.

धमाल.

धमाल मचावी मस केम, फाटयो तुं फरे; ७०९२
तारुं तल तपास तमाम, कूड क्यम करे; ११८९५
मूकी हणोहण हठ ठाठ, असत्य तज अळा, १५८६४
हृदये हरखवा मन होय, चेती ले चळा. ७१०५

धमाल.

रावण ससा दिगगजरूप दंडक वन रमे,
निरलज सुपनखा तिण नाम गरक अनंगमे;
सीतानाथ आगल सार आई तिण समे;
भालम कान्त अदभुत भाळ चित रतशुं भमे.

अर्धसमगीत

११ बीजो प्रौढ-चौददशो[१].

१, पादमां ३+४+३+४=१४
२, पादमां ३+४+३ =१०
३, पादमां ३+४+३+४=१४
४, पादमां ३+४+३ =१०

(२, ४ प्रास मळे तेमां गुरु लघु आवे.)

दुहा.

विषमे चौद कला करो, त्रणयुग[४] त्रणयुग[४] सम;
त्रणयुगने त्रण समविषे, बीजाप्रौढनो नेम.
समनां मो'रां मेळवो, गुरु लघु धरीने ठाम;
चौददशो वळी नाम छे, माप जणावा काम.

उदाहरण.

प्रौढबीजो पुरुष पिंडे, ७०
प्रौढ नव कर पाप; ६४
प्रौढनुं पद परखवाने, ७०
मन उपर धर माप. ६५

---

१ बुद्धिविलासमां आज मापनां गीतने सोरठियानुं नाम आप्युं छे. जुवो रणपिंगळ पृ. ३८ अंक ९३ रूपमाळा—आमां कलानी विगत जणावी नथी, एटलोज फेर छे.

दूजो प्रौढ.

मीत कर परहूत उपर,
उठे रघुवर आप;
सहस भग किय चसम सेहस,
सकज मेटे श्राप.

गीतजाति दूजो प्रौढ.

दूजो भारमल दीपक, रीतिरो रखपाल,
लाज घण बिरदाल लाखो, भूपलीले[1] भूंवाल[2].
वेदंगा[3] वरहास[4] बगसे, वधारण जशवास,
कुंवर देशलतणो कायम, बडो लील विलाश;
आपियो प्रथमादि उपरि, वर्जवजे[5] वाखाणं[6],
फोजरो शीणगार फाबे[7], मोजरो महिराण.
सूर धीर खंगार शरिखो, नरां चाडणनीर[8],
सुयण हेल हमीर शांमो, वडीम घण वरवीर.

१२ केवार.

(प्रौढ प्रमाणे) १, ९+४+३+४=१६
२, = ९
(प्रौढ प्रमाणे) ३, ९+४+३+४=१६
४, = ९

२,४ ना मोहोरां मळे; तेमां अन्ते बे गुरु आवे.

आवा दवालानुं एक केवार गीत थाय.

---

१ राजलीला. २ भूपाळ. ३ कवियो. ४ घोडा. ५ बक्षे ६ कहेवाय. ७ बखाण. ८ शोभे. ९ चडाववावाळो.

दुहो.

पांच चार त्रण चार थइ, विषमे सोळ कळाय;
सममां नव तेमां रसिक (ऽऽ) प्रासे मळता थाय.

उदाहरण.

शर चार ने त्रण चार विषमे, ९०९
समे नव लावे; ६
केवार रचना प्रौढ विषमे, ४८३
सोळ कल आवे. ७०
षड रिपु आवी मळी घेऱ्यो, ३७
तन दुर्ग भारी; ९
मन निग्रह खड्ग धरी करमां, ४४१
काढ जई मारी. ७

केवार.

दिल लंक अंगद आद द्वादश,
तह किया तेखी;
ऍक अरण बिच सो त्रसा आतुर,
दरी द्दग देखी.

गीत जात केवार.

उनडे[1] जेवह आचारि अपेहड[2], भडनिवड[3] भाखो,
रजरीत[4] कृति प्रवित राखण, लाजवण लाखो;
शोभाग खाटण प्राग सरिखो, त्याग त्रुहितांणो[5],
धजबंध खत्रवट धन धारण, जूनवट[6] जाणो;
उढंगँदान पवंग आपे, कवि दलिद्र कापे.

१ उनडजेवो. २ अपड=पडे नहि. ३ नवो. ४ राजरीति. ५ सुधा.
६ जूणवट. ७ घणो.

संसार शिरि दातार सामो, थिरि[8] सुजश थापे,
बिलकुले[9] पात्रां मिले वडहथ, भेंझे[10] ब्रिद भारी;
कुँअर गुरु[11]देशलतणो कांइम, धराव्रत धारी.

१३ प्रौढ–सोळदशो–सोरठियो.

१ पादमां	९+४+३+४=१६	
२ पादमां	३+४+३ =१०	२,४ प्रास मळे प्रासने अ-
३ पादमां	९+४+३+४=१६	न्ते गुरु लघु आणवा.
४ पादमां	३+४+३ =१०	अर्ध शंकर जाति र. पिं. पृ. ४१

दुहा.

पांच चार त्रण चार कल, विषम विषे कल सोळ;
सममां त्रण ने चार त्रण, प्रौढ गीतमां तोळ.
समनां मो'रां मेळवो, गुरु लघु लावी ठाम;
सोळदशो एने कहे, सोरठियो पण नाम.

उदाहरण.

चित चतुर तारुं चोख करवा, ४७४
आण अंतर टेक; ४९
कर दूर अवगुण होय ते ते, १४१
साध प्रभुपद एक. ९४

प्रौढ.

सगके मुकामां करे मिथलां,
आविया अवधेश:
शुण अतुल साज जलूस सारा,
मिळे छक मिथलेश.

---

८ स्थिर. ९ बिलकुल. १० शोभे. ११ गुरु.

१४. सिंहचलो-सोळतेरो.

१ पादमां=१६[1]
२ पादमां=१३
३ पादमां=१६
४ पादमां=१३

२, ४ प्रास मळे त्यां रगण आवे.

दुहा.

सोळ कळा विषमे रचो, समे तेरनुं माप;
समनां मो'रां मेळवो, रगण धरीने आप.
सिंहचलो तेने कहे, सिंह सरीखी चाल
मळती आवे थोभतां, माटे ते संभाल.

उदाहरण.

सिंहचलो.

पर उपकार करीने अतिशय, १३९०
करी ले सुखकर साधनो; ८६
गरीबनिवाज बनीने गरवो, ४०३
विचार तज तुं बाधनो. ६६

सिंहचलो

प्रगट इम भ्रात चहुं परणी जे, माण किताचां मारिया,
डेराहूत सजोडा डेरा, पाछाविंद पधारिया; १
छेडा छोड करंता छोळां, नामे शीश नरेशनुं,
लंघे रात अणंद अलेखे, सो सुख नही सुरेशनुं. २

---

१ आ गीतनुं १, ३ पद लघुसाणोरना जेवुं छे.

खेले जुवा डोरडा खोले, सह शुभ कारज सारिया,
देवा देव जिकण ही देखो, जाती देव जुहारिया.
सारी जिनस कुबेर समोवड, खोल भँडारा खांतसू,
गाछा भोग अचार अनेकां, भात दिया बहु भातशुं. ४
सीदास रथां पट दंती, कोतल चंचल कायजे,
इमाल खजाना कोडे, दीध विदेही दायजे. ६

१५ लहचाल.

मां १०+८ = १८
गां ८+ र+जी= १९
: १०+८ = १८
८+ र+जी= १९ } २,४ नां मोहोरां मळे

आवा प्रत्येक दवाला करवा

दुहा.

विषमे दश ने आठ कल, एम विराम अढार;
सममां आठ उपर रगण, तेपर धर जीकार.
समनां मो'रां मेळवो, कल जेमां तिथि[1] थाय;
लहचाले ए रीति छे, कविजन रचि हरखाय.

उदाहरण.

लहचाल.

लहचाल विषे कर ठीक चरण वर, ४०१२
भगवतभक्ति विचार जे जी; ८१
धर धारण मनपर, नियम अनुसर; ४०३४
धीरज कविवर, धारजे जी. ८८

---

१ एटले पंदर.

लहचाल.

सुत भ्रात कटे सक धीठ वधे धक,
वीस भुजाण विचारियोजी;
निर बीजां वानर नेम गमुं नर,
धिख ईसो मन धारियोजी.

अथ गीतजात लहचाल.

कोड वरिंशणो लखधीर वडाकर, राजीद रुप करंजणो जी,
वेर वराहलीयां दलवादल, भूप खलां दलभंजणो जी;
देशल उत्त तपे कुलदीपक, जेहल सोजल जेवहो जी,
वाडीम लाजअजाद वधारण, आजनको पेह ए वहो जी,
प्रीति गुणां खटभाखा परीखण, आपण शाख उजालणो जी,
कुंअर भोज करंन हिर्यावळि, पूरत पीपरि पालणो जी;
बेहद हद मरद खत्रीवट, रीत प्रवीत लियांरहे जी;
जाण प्रवीण निरेहंण जादव, साच कहे पणे संग्रहे जी.

१६ मुक्ताग्रह—रणखरो.

१ पादमां=२० २ पादमां=१७ ३ पादमां=२० ४ पादमां=१७	प्रहासना बीजा दवाला प्रमाणे २, ४ नां मोहोरां मळे; तेमां बे गुरु आवे.

पेहेली तुकना छेल्ला शब्द-
नुं सिंहावलोकन बीजीना
प्रारंभमां थाय.

आ प्रमाणे प्रत्येक दवाला करवा.

---

१ आपवावाळो. २ सूहरनी पेठे वेर लेइ. ३ आकाशनी घटाजेवुं. ४ वडाइ. ५ राजा. ६ भाषा. ७ परीक्षा करवावाळो. ८ क्रिया करवामां विवाह. ९ ग्रहणकरे. १० निर्मल. ११ विरुद.

दुहा.

विषमे वीश कला करो, सममां सत्तर थाय;
मुक्ताग्रह के रणखरो, एवुं नाम कथायः
विषमे छेल्ला शब्द ते, सम प्रारंभे जाण;
सम मो'रांने मेळवी, तेमां बे गुरु आण.

उदाहरण.

मुक्ताग्रह.

गीत मुक्ताग्रहे गाय गुण प्रेमथी,	२३६६
प्रेमथी नेमथी भाव दाखी;	१६४
भक्तिना भावथी लक्ष दइ लावथी,	२३४६
लावथी दाव लो भजन भाखी.	३०३

मुक्ताग्रह.

पदवँद उतमंग माकनेथी पधारे,
पधारे महल कोदंडपाणी;
विदेही सुताने गुणी जेती विगत,
विगत तेती पुणी तात वाणी;
अरण आग्या करी मूज नायक अवध,
अवध वीतायने वेग आवां;
जानकी अठे मो रहेला जनकरे,
जन करे किना पोचाय जावां.

विषम गीत.

१७ त्रीपंखो.

१	पादमां	४+४+४+४=१६	१, २ नां मोहोरां मळे. लघु गुरुनो नियम नथी.
२	,,	४+४+४+४=१६	
३	,,	५+५+५+५=२०	
		एवा दवाला करवा.	

दुहा.

चोकलिया गण चार थइ, सोळ कला सौ थाय;
पे'ला बीजा पादमां, मो'रां मळतां जाय.
त्रीजुं पद कल वीशनुं, पांचकला गण चार;
त्रीपंखाना ए रीते, बधा दवाले धार.

(उदाहरण. सज्जन अने सोनानी सरखामणी.)

सज्जन सोना समान लेखो. १११४
निर्मलता शोभा सम पेखो, १४८
कृति बेतणी बहुज शोभती थायछे. १. १८१४
शोभीतां पोते बहु सारां, १४९
परने मस शोभा देनारां १०
बे विविध प्रकारे उपयोगी थायछे, २. २१३०
अगत घणी उपयोग घणेरो, १७०
उजास झांखो दीप्ति केरो, ३
तोपण ए बे निज कसथी दीपेछे; ३. २०३
सज्जन सोनामां जे भळशे, ३८१
सज्जन सोना जेवा ठरशे; ३८१
पारस अवर नहि, एज छे जाणजो. ४. १७७४

त्रिपंखो.

आवण रघुवर सुणी अवाई,
वीस भुजाधर सभा बणाई;
जठे रावण अनुज बोलियो जोरवर. १

१८ दोढो.

१, १४
२, १४
३, १६
४, १० तेमां गल.
५, १४
६, १४
७, १६
८, १० तेमां गल.

सर्वे मळी मात्रा २१६.

पेहेली साथे बीजीनो अने चोथी साथे आठमीनो प्रास मळे ने त्रीजी मळ्या वगरनी रेहे. फरी एवां चार पद आवे; अर्थात् आठ पदनो एक दवालो थाय.

(हरिगीत.)

पद प्रथम बीजुं चौद कलनुं, प्रास बेना मेळवो,
त्रीजुं करो पद सोळ कलनुं, चोथुँ दशनुं मेळवो;
तेमां गुरु लघु अन्त लावी, चार फरी तुक तो करो,
चोथी वसुना प्रास मेळवो, एम दोढो आदरो. १

उदाहरण.

बे'की फरे दोढो बनी, ९३
नहि निजसमो धरणी धनी; १३१
पण धूळमां धन धाइ पडशे, ५०५
चित्तमां तुं चेत. ३६
धन, धान्य, पशु लूंटायछे. १०७
जश जोर वय वही जायछे, १४१
एनुं करे अभिमान जे जन, १११४
तेज जन न सचेत. ५४

दोहो.

पुर अवधसूं हुय निज पगां,
मुनि वहे आश्रम मारगां;
सँग राम लखमण कुँवर दसरथ,
धरम द्विज रणधीर;
संपेख अगनग साखसी,
रत रोस जाजुल राखसी,
तिह ताक पाण विछेद तारी
बाण इक रघुवीर. १

१९ अरट.

प्रथम दवालो
४+४+४+४+२=१८.
४+४+गल=११.
४+४+४+४=१६.
४+४+गल=११.

आवा चार दवालानुं एक गीत.

पेहेला दवालामां प्रथम पद १८ मात्रानुं छे तेने बदले २,३,४ दवालामां पेहेलुं पद पेहेला दवालाना त्रीजा पद जेवुं, एटले ४+४+४+४=१६ मात्रानुं करवुं; अने बीजुं, त्रीजुं, अने चोथुं पेहेला दवालाना जेवुंज करवुं.

दुहा.

चोकलिया गण चार पर, बेकल प्रथमे आण;
चार चार ने गुरु लघु, बीजे चोथे जाण.
चोकलिया गण चार तो त्रीजा पदमां थाय;
बीजा चोथा पद तणां मो'रां मळतां जाय.
अरट दवाला त्रण रह्या, त्रण तुक सरखी धार;
प्रथम पदे कल सोळमां चोकलिया गण चार.

उदाहरण.

१. जश जाशे वही जो जराय कूडुं २९०
२. जळकुंडे ज्यम छेद ७८
३. कूंडे छिद्र जशे त्यम कूडुं १६६
४. एम वदेछे वेद. १ ५९
५. पय पकवानो अने अमृतसम १४७९
६. पाक पेयना ठाठ ६२
७. टपकुं विषनुं पडतां वणसे ४४२
८. कूडुं जशनुं काठ २ ६४

अरट.

इम राज करे अजनंद अयोध्या,
नेत बंधीं नखतेत;
जंगाजीत तपोबल जालम;
ओप बडो अखडेत. १
नामे शीश अनेक नरेसुर,
रैत सुखी अण रेह
चारू चक्र अदल्लां चाले,
तेज धरें शिर तेह. २

२० सालूर.

१, पादमां=१८	१,४ अने २,३ ना प्रास मळे. चारे मोहोरोमां अन्ते एक चोकालियो गण आवे.
२, ,, =१२	
३, ,, =१६	
४, ,, =१२	

आवो प्रथम दवालो करवो, ते पछीना दवालामां पेहेलुं पद १६ मात्रानुं करवुं.

दुहा.

अढार कलनुं प्रथम पद, बीजे चोथे बार;
त्रीजे सोळ कळा करी, प्रथम दवालो धार.
पे'लाने चोथा तणां, मो'रां मळतां जाय;
बाकी दवाला त्रण विषे, त्रण पद उपर समान.
पेहेलुं पद कल सोळनुं, भेद एटलो मान.
चारे पदना अन्तमां, चोकलियो गण थाय;
कल रचतां सालूरनी, लक्ष चुकी नव जाय.

उदाहरण.

कळ बळ तारां तो टूटी जाशे, ६०
धूळ धाणी बहु थाशे; २८
फोज फना थइने विखराशे, १६९
ताळां गढ देवाशे. १. ९
माटे बळनुं बळ नव करवुं, ९८९
डरवुं प्रभुबळ देखी; ३१
बळ देवुं निर्बळ बळ पेखी; २०१
धैर्य बळे बहु धरवुं. २. ८०

सालूर.

जाजुल द्रूजराज करण रिण जाडो, तस कुठार दग तायल;
राह बरात ईख अजरायल, आयर ऊभो आडो. १
रतो जूझ विखम वच रोडे, जबर इसो कुण जोमंड;
मो उभां शंकर चो कोदंड, ताण भीच कुण तोडे. २

अथ गीतजाति सालूर.

लाखो दीपिओ दातार सुलखण, खांगे[1] दलां खल खंडे,

1 खड्ग.

भारेथि[2] आँगि[3] बजाँगी[4] महाभैंड[5], वीदँग[6] रोर विहँडे[7]
मोटमति वड गात्र निर्भमण[8], पात्र कुपात्र परखे,
गाहेंड[9] मल दुजल खत्री गुंर[10], रीती[11] दुआपुर रखे.
कायम राज करे कवि कीरति, वीरति[12] लाज वधारे,
शाहिण[13] लाख बरीशँण[14] शासण, अमर नाम उऑर[15].
पाटपती जाडेजा लखपति, देशलरो कुल दीवो,
धारण एकण भाग कलोधर, जोध! घणा दिन जीवो.

२१ अराटियो.

१ लो दवालो { ४+५+५+५=१९. ४+४+ग,ग=१२.
४+४+४+४=१६. ४+४+ग,ग=१२. }

एमां विप्र गण कहिं पण आवे नहि.

बीजा दवाला. { ४+४+४+४=१६. ४+४+ग,ग=१२.
४+४+४+४=१६. ४+४+ग,ग=१२. }

एवा दवाला करवाथी अराटियो गीत थायछे.

(हरिगीत.)

पद प्रथममां कल चार वळी त्रण वार शर कल आदरो
कल चार पर कल चार ते पर बे गुरु सम झड करो
कल चारना गण चार त्रीजे, विप्र गण पद नव धरो
त्रीजी समी पे'ली करवेथी अराटियो बनशे खरो.

उदाहरण.

जोबन बळथी फाट्यो केम फरेछे, ६३०
फांदामांह फसाशे. २२

---

२ जुधतां. ३ आग. ४ घणी. ५ शूर. ६ कवि. ७ भांगे. ८ निर्भय. ९ जबर. १० श्रेष्ठ. ११ द्वापर युगमां कौरवपांडवनुं युद्ध थयुं छे एवुं करवावाळो माटे. १२ शोभा. १३ हुकम. १४ वखसवो. १५ राखे.

जोबन केफी जोर फीटशे. १९२
जोबन वय वही जाशे. १. ३३
माती ताती काया तारी १
करचलिए करमाशे, २६
आंखो गळशे चळकट टळशे १८९
अखडइ धक्का खाशे. २. ५

अरटियो.

एकण दिहाडे मुनिराज अज्योध्या,
कौशिक आवण कीधो;
राजाहूंत मिले रिषराजा,
दोमज आसण दीधो. १
जोडे पाण महीपत जंपे,
को ऋषि आग्या कीजे;
आग्या ईह सुणो नृप आगम,
संग उभे सुत दीजे. २

अरटियो.

(शाहजादीने पादशाह औरंगजेबने माटे थती चिन्ता.)

सूनी ढेलडी जंपे शाहजादी, बंका जोध विरुद्धा,
औरंगशाह घरां किम आवे, राह दुरंगे रुद्धा. १
हारन चीरन हंस हूरमां, वाचे कोकिल वाणी.
नाह साह रँगमोल न आवे, आडो भड आशाणी. २
लागो खेधवेध घर लेवा, खाय उवाडे खंडे,
असपतरा मारग अडपावे, नींबाहरो न छंडे, ३
घरकाजे घावे घोखलिया, साम धरम भुज साहे,

परगा रेस दियो पतसानुं, पतसाही पिड गाहे. ४
मुगलां काज जुरे मुगलाणी; आंसु नांख अपारां,
मारु दुरंग घरां दिश मेलो हिन्दु साम हमारा. ५

२२ जांगडो साणोर—पुणियो साणोर.

१, ४+५+५+५=१९
२, ४+४+ग+ग=१२
३, ४+४+४+४=१६
४, ४+४+ग+ग=१२

} २,४ नां मोहोरां मळे विप्रगण अवश्य आवे.

उपर प्रमाणे प्रथम दवाळो करवो. अन्य दवाळामां पेहेली झड १६ मात्रानी, बाकी उपर प्रमाणे.

(एकत्रीशो सवैयो.)

चार अने त्रण वार पांच थइ ओगणीश कल प्रथमे आण,
चार चार ने बे गुरु सममां तेनां मोहोरां मळतां जाण;
चोकलिया गण चार त्रिजे पद अवर तणे पे'ले पद थाय,
पुणिया साणोरे गण विप्रज ज्यम आवे त्यम ठीक गणाय.

उदाहरण.

श्रवण कह्युं न शुणंत, झरण, झरण थाय. ४१४७
तमरा नाद समाने, २३
तनन तनन ज्यम तांत वगडती ५५५
रमुज एज रहीं काने. १. २९
निशदिन मन रीज पमाडवाने १४४
ललना नाच नचावे, २३
मधुर अवाजे गायन सुणियां ५२६
ए रस हवे न आवे. २. २०

जांगडो अथवा पोणियो
साणोर.

पडियो मुरझाय शेष इल उपर,
सगत राण सुत साजी;
थरके माल वनचरां थाणां;
मुख कुमलाणां माजी. १.
नेण जरे हरि वदन निहारे,
अंक भरे निज अंगा;
बोले सिथिल कहे रे बंधव,
ऊठो लखण अभंगा. २.

२३ झडमुगट.

१, पादमां मात्रा	=१९		चारे मोहोरां मळे तेमां अन्ते बे लघु आवे.
२, ,, ,,	=१३		
३, ,, ,,	=१६		
४, ,, ,,	=१३		

एमां प्रत्येक चरणना प्रारंभनो शब्द ते चरणना अन्तमां आवे. एवा चार दूवालानुं एक गीत थाय. अने प्रथम सिवाय-ना दूवालाना पेहेला पदमां १६ मात्रा आवे.

(हरिगीत)

झडमुगट मांहे पाद पे'लुं, ओगणिश कलनुं करो;
कल सोळ त्रीजे पाद पे'ले त्रण दूवालामां धरो.
सममां कला करी तेर, म्होरां चार, ललथी मेळवो;
प्रतिपाद आदि अन्त केरी, यमक अर्थे भेळवो.

उदाहरण.

पर कारज साचववा धर तुं मनपर, ६५२७
कर सुकृत ठिक धर निज कर; ३७२

खरचालो थइने बन नाहि खर, १५३१
धर पर चरण केम न धर? १. ३४३
नरस न वर्त्तन कर तुं कादि नर, १४४५
सरवा स्वारथ रीति सर; ३११
हरवा दुख रट भावे हरहर, १३९५
करतालो लइ भजन कर. २. ३६६

झडमुगट.

तरवर वन शिखर जोवता सरतर,
कर सारंग तूँनीर कर,
वरलोहां दीठो अँग रघुवर,
परधर पडियो धरणपर. १.
गत जिणने पूछी सह अविगत,
रत घावां किण काज रत,
सतवंती लेतां धारे सत,
पतहूं भिडियो लंकपत. २.

गीत जात झडमुगट.

पति महीअल मडल उजल पखे[1] लखपति
अति रजे[2] लजे[3] जश सरस अति
मति बहपँहे[4] काइम उत्तम मति
दैति[5] मन क्रम केरि[6] सिमोरँ[7] दति १.
तँण[8] कासप[9] तप बल देशल तण
पँण[10] भल हेले[11] चित शुक्रित पँणे[12]

१ पख (पक्ष). २ राजवट. ३ लाज. ४ पूरी. ५ दातारी. ६ कर. ७ समर. ८ तन. ९ कश्यप=सूर्य. १० नियम. ११ उजळा. १२ केहेवुं.

अणकॅल[13] विमळ कहेतवि[14] कवि अण
घण शत व्रत दत महत घण २.
घर[15] अणशँक[16] निकलँक भिणि[17] मिण[18] धर
नर महि कहि हद विहद नर
घरवट प्रगट शँकशराज[19] सत्रर
तरवर हर वयकल पैंतर[20] ३
क्रम[21] केवल मल रहित प्रवित क्रम
ध्रम[22] रुख[23] मुख वित सुरति ध्रम
गमगुण[24] निपुण सरव काइम गम
समरथ पथ वड गहड शम. ४

२४ अमेल.

१,	पादमां=१८	एकेयनो प्रास मळे नहि.
२,	,, =१४	
३,	,, =१६	
४,	,, =१४	

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो. बाकीना दवालामां पेहेला पदमां १६ मात्रा आवे.

(हरिगीत).

पे'ले दवाले प्रथममां धृतिकल[18] गणीने आणजो,
पछी विषम बाकी पद विषे कल चौद सरखी जाणजो;
समपद विषे कल चौद आवे प्रास कोइ नव मळे,
माटे अमेलज नाम एनुं अन्तर साथे नव मळे.

१३ कळाय नहि. १४ केहेवुं. १५ पृथ्वी. १६ शंकारहित. १७ केहेवुं. १८ मणि. १९ इंद्र. २० कल्पतरु. २१ कर्म. २२ धर्म. २३ मरजी–इच्छा. २४ जाणपणुं.

अमेल.

अमेल.

सबरी बनमाह प्रीतसु साची,
उवर जठे दरस अभिलाख;
आश्रम उभे सहोदर आया,
त्रिभुवण नायक शेष तठे. १.
परक्रमणाय तेण पग परसे,
जस इम जीह अपार जपे,
लेखां, नर, नागां ने दुरलभ
दीधो सो मोने दिदार. २

२९ खुडद साणोर.

१, पादमां=१९ मात्रा
२, ,, =१३ ,,
३, ,, =१६ ,,
४, ,, =१३ ,,

२, ४ नां मोहोरां मळे तेमां बे लघु आवे.

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो; बाकीना दवालामां पेहेली झड १६ मात्रानी; बाकीनी उपर प्रमाणे.

(हरिगीत.)

कल ओगणीश पद प्रथममां, पछीं सोळ विषमे थायछे,
सम पद विषे कल तेर थातां, प्रास मळता जायछे;
ते प्रासमां अन्ते लघु बे, साचवी सारा धरो,
ए रीतिनुं छे माप चोख्खुं खुडद साणोरे करो.

खुडद साणोर.

धीर वीर नर चित्त चेतना धरी		१३०३
सज सामग्री समयसर,		३४९
काम आवशे कठिन काळमां		३९०
डगमग मन करीं कदि न डर.	१	३७७
परउपकार करीने खुश था		४०३
करी ले साधन सुखकर;		३९७
गरिबनिवाज बनीने गरवो,		४०३
निद्रा कर पछी निडर.	२.	२९०

खुडद साणोर.

व्याकुळ लखी सेन विभीखण बोले,
कमलापतिसुं जोड कर;
धनुधारण धीरज उर धरजे,
हिव करजे उपचार हर. १.

वैद फतूस तूस लंकाविच,
सो आवे धारक सुरत;
जिके बतावे जडी सजीवन,
तो लिखमण ऊठे तुरत २.

२६ दुमेल—अर्द्धपालवणी.

१, पदमां १८ मात्रा २, ,, १६ ,, ३, ,, १६ ,, ४, ,, १६ ,,	पेहेला अने बीजा पदनां मोहोरां मळे अने त्रीजा अने चोथा पदनां मोहोरां मळे.

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो. बाकीना दवालाना पेहेला पदमां १६ मात्रा अन्ते चोकलियो गण आवे.

दुहा.

दुमेलमां चारे पदे, मात्रा सोळ गणाय;
प्रथम दवाला आदिमां, बेकल वधती जाय.
मो'रां पे'ली बीजीनां, मळतां चाल्यां जाय;
त्रीजी चोथीनां मळे, अन्त चोकडी मांय.

दुमेल.

बाल्यपणुं में गमतो करी गाळ्युं १२०
तरुणपणुं तरुणीमां टाळ्युं ३२
वृद्धवये मूंझे मन मारुं १४८
शोध्यो मार्ग न मुक्ति सारुं १. २२
अंग गळ्युं वळी पळीयुं मुंड, ६५६
दशन विहीन बन्युं वळी तुंड, ८५६
वृद्धवये वपु हींडतां डोले ५०
आशाये मन चडच्युं चगडोळे २. २२१

दुमेल.

दसरथ नृप भुवण हुवा रघुनंदण,
कवसल्या उर दुष्ट निकंदण;

रूप चतुरभुज प्रगटत रीधो,
दरसण निज माताने दीधो. १.
उदर सुमंत्र लखण जीतन अर,
धरे शेष अवतार धुरंधर;
बियो शत्रघण सुयश बसायक,
दीरघ बाह बडो बरदायक. २.

२७ पंखाळो.

प्रथम दवालामां

१, पादमां १८ मात्रा.
२, ,, १४ मात्रा.
३, ,, १६ मात्रा.
४, ,, १४ मात्रा.

बाकीना दवालामां विषम पदमां १६ मात्रा लाववी अने सममां उपर प्रमाणेज लावी दवाला करवा. २, ४नो प्रास मेळववो.

(एकत्रीशा सवैया.)

पंखाळामां पे'ले पादे अढार मात्रा आवे,
अवर विषम पद सोळ तणां सौ सर्व दवाले लावे;
सम पद चौद तणां रचीं तेना प्रास मेळवो भावे,
ए रीते रचना करवाने डिंगलकार जणावे;
भले वेलीया ने छोटानां, तेमां पद भेळावो,
वळी सोहणा साणोरे जे पद रचना ते लावो;
आवा भेदे जूदा जूदा बणे दवाला करवा,
तेना नियमो लघुगुरुवणना जेना तेमां धरवा.

पंखाळो.

वालक पंखाळो जोवन वोडो, ३८१

झाझुं झुंमे झोंकावी; १
आधुं पाछुं जोतो छे नहि ९८८
उड्यो चाले ठेकावी. १. १
चेत चेत तुं चतुर चित्तमां ४९४
अखडइ पडवानो उपाय, ३०१
शामाटे शोधी शोधीने १
कुटिल केम ठरावे काय. २. २४९
जोबननुं शुं जोर जणावे १४८
जोबन चाल्युं पळमां जाय ४३६
ए जोबन वेळामां उत्तम ९९६
काम करे कीर्त्ति जग थाय. ३. ५२९

पंखाळो.

धरियो पण जनक इसी मन धारे,
धनुष पिनाक चढाय धरे;
महपत आय स्वयंवर मांहे
वसुधा कुंवरी तिकों वरे. १.
तातहूंत अधकी परतंग्या,
सांभल वात कहुं सरसाल;
तन मन धार भाल दशरथ तण,
मेगल राल दइ वरमाल. २.
जाले चाप पिता पण जावो,
हण जावो जोधा जगहार;
चित तो राखलियो मृदु चरणां
भाख लियो राघव भरतार. ३.

२८ पालवणी.

१, ३+४+४+४+४=१९		चारे म्होरां मळे तेमां लघुगुरुनो नियम नथी.
२, ४+४+४+४ =१६		
३, ४+४+४+४ =१६		
४, ४+४+४+४ =१६		

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो रचवो, बाकीना दवालामां चारे पद सोळनां करवां. पण तेमां चोकलिया गण बधा कवि आणता नथी.

दुहा.

चोकलिया गण चारनां, चारे पाद रचाय;
ओगणीशनुं धूर पद पालवणीमां थाय.
म्होरां चारे पादनां, सरखां मळतां जाय;
गुरु लघुनो कइ नियम नहि चार दवालामांय.

पालवणी.

प्रभुजी तारी पालवणी करशे, १८३१
अरि तारा सौ थरथर डरशे. ९७८
अधिराइ आणे शामाटे २
सारूं थाशे घाटे घाटे. १
धिर श्रद्धा मन पूरी धरशे, ४००
कोड धरी जो भक्ति करशे ३८१
भव अरणव तुं पार उतरशे, ९३४
आदरथी प्रभु नाम उचरशे. ९१९

पाळवणी.

पुलियो नहीं चाप कंथ तो पाणी,
धाम जनक मिलिया रजधाणी;
हुतो कटे पोरस कुळ हाणी,

अब तें सिया दगो कर आणी. १
गृह तो सहस बतीस लुगाई,
पण तुं लायो नार पराई;
वेल त्रकुट मीचरी वाई
कुंथा खोटी कीधी कमाई. २

पालवणी.

वाइ रे जिके घायलां बेली, थित नित करे रायिये थेली,
सोधे कासु काम सोहली, हाजे निंब सींचवा हेली. १
रासातणी पयंपे राणी, रण घायो माजी रतनाणी,
सोरंभ सुरे वात सुहाणी, नींबडो जीवतणी निसाणी, २
खोटीजे तन घाव बांधीजे, जीवे पियु तो आप जीवीजे,
कालों अगर चंदनको कीजे, सखी अमणो नींब सींचीजे. ३
घट घण घाव जरां पियु घायो, बहु मंत्रों मिल पाटो बँधायो,
भ्रामण तणे नींब मन भायो, जिण दुसरो मधुकर जीवायो. ४

पालवणी.

सुंदरी शोभता शणगार सजावे
वीणा ताल मृदंग बजावे,
जीके छतिश राग करिं जाणे
वार वार लखधीर वखाणे. १
कोकिल कंठ सुकंठी कामणि
गुणवंती उत्तिम गजगामिणि
मुख शशिहर जोवण मदमत्ती
राजकुमार तणे रंग रत्ती. २

शोभनमे आभूखण शोहे
म्रिग लोचनी नरा मन मोहे
निरमल कमल सकोमल नारी
सुत देशल गाएश विचारी. ३

वाराँगन हसती विकसंती
दोलतवंती दाडीम दंती.
रंगभरी निशीवाशर रमे,
प्राग कलोधर कीर्त्ति प्रणमे. ४

२९. छोटो साणोर.[1]

१ पादमां	=१८		२, ४ पदनां म्होरां मळे. गुरुलघुनो नियम नहि; बाकी वेलिया प्रमाणे.
२ ,,	=१५		
३ ,,	=१६		
४ ,,	=१५		

उपर प्रमाणे पेहेलो दवालो करवो; पण बीजा दवालामां प्रथम पद १६ मात्रानुं करवुं.

(हरिगीत).

पद विषममां कल सोळ पण धुरपद अढारनुं आणजो
पंदर तणां समपद रची ठिक प्रास मळता लावजो
एवा दवाला चारनो साणोर छोटो थायछे
कदि लावणीना रागमां को ठीक रीते गायछे.

उदाहरण.

कर कवि छोटासाणोरे कविता ९९२
जेमां हरिरस जामी जाय ४०७
पावन थाशे पोते पूरो ४

१ एना चार भेद छे १ वेलियो, २ सोहणो, ३ खुडद, ४ जांगडो.

गानारो जो हरिगुण गाय. १ ९७७
जे जे बीजा रस आ जगमां ४३३
नरनारी पावनकर नथी ३४९
तजजो तरुण तरुणी ते तो ३१
सिद्ध कऱ्यो सिद्धान्ते मथी. २ १४८

छोटोसाणोर.

एकण दिन अमर सकल मिल आया
करी अरज सांभल किरतार
राज विना मारे कुण रावण
भूरो कवण उतारे भार. १

इला सखत मंडे असुराणो
संकट जिणरो अकथ सहां
दीनानाथ तुज विण दुखरी
किण ढिग जाय पुकार कहां. २

छोटोसाणोर.

आछा गुण कहण वाण पण आछी, मोटमबुधमे नको मणा
राजा सुजस चहु जग राखे, ता कवि दीपक सभा तणा. १
भूपालां बातां हद भावे, सबद सुणावे घणा सकाज
डील धराज दीखता डारण, राजा बिच शोभे कविराज. २
राजी सरव सभाने राखे, सरस सुभाळां हूतसिरे
धजवड हथां मारकां धूतां, कव राजपूता अमर करे. ३
आखे मान सुणो अधपतियां, खत्रियां को मत करजो खीज
वरदायक वहता मदवारण, चारण वडी अमुलख चीज. ४

३० वेलियो साणोर.[1]

१	पादमां	=१८	दुहा प्रमाणे म्होरां मळे ने तेमां गुरुलघु आवे.
२	,,	=१५	
३	,,	=१६	
४	,,	=१५	

उपर प्रमाणे पेहेलो दवालो, पेहेला पदमां १८ मात्राथी करवो, पण बीजा दवालाना पेहेला चरण १६ मात्रानां करवां.

(हरिगीत.)

कल वेलियाना विषम पदमां सोळ पूरी थायछे.
धुरपद विषे प्रथमे दवाले कल अढार रचायछे.
सममां कला पंदर खरी पण अन्त गुरु लघु आणजो
समतणा आवे प्रास मळता एम मनमां जांणजो.

वेलीयो साणोर.

वल वेलियो फाली फूली वन	२१८६
वधी वधीने प्रसर्यो वास	४३५
पूरा शणगारी निज परने	५३०
आल्हादित कर्या आवास १	३९२
जे रुडुं ते रुडुं जणवे	७५१
कूडुं कूड करावे काम	३९९
हीणुं हिणपद पामी पूरुं	३०
ठोकर खातो ठामे ठाम. २	३८१

वेलियो साणोर.

दिल अंतर एह विचार दसरथ, धर पदवी युवराज सधीर

१. बुद्धिविलासमां पद रचना पृष्ठ ३५ मां कहेली अर्द्ध पालवणी प्रमाणे करवानुं अने पेहेला बीजा अने त्रीजा अने चोथा पदनां म्होरां परस्परने मळतां लाववानुं कहेलुं छे.

सोदेणी विसवाही वासे, राज जोग दासे रघुवीर. १
मुनि वसिष्ट पूछ दिन महूरत, खोए दृष्ट त्रिकालां खंभ
छछहा दूत चहू दिश छंडे, अवनीपत मंडे आरंभ. २

राठोड दुर्गादासनुं गीत.

वेलियो साणोर.

बगतर कर कँथा बिजड दँड बंधे, रिम सिर मुगत दियण ले रेस
दिन दिन नवा पवाडा दीपे, दशमा नाथ नमो दुर्गेश. १
हसम जमात भात सँग हाले, शंख घण त्रहे निशाणसर
दहण पाप एरियण वरदाइ, नमो कब्बंध अबधूतनर. २
ध्यान धरे मन घणो खित्री ध्रम, मारू चडियो प्रभांत मांही
ग्यान देयण आसकण सुतन, गुरु शिप दूजो भूपाल साही ३
कोप करे किधा अरी कण कण, निबाऊत निकलंक नरेश
शब्दी कला न पूजे तोसुं, असुरे सुरे कीध आदेश. ४

महाराजा लखपतजीनुं गीत.

वेलियो साणोर.

विलसण[१] गजबाज निवाजण खट ग्रन
कायम राज स्रजोद[२] सकाज
धर ओपम प्रतपे पाटोधर[३]
लखपति कुँअर भुजे कुळ लाज १
समझण गुण रूपक देशल सुत
अकलि पराक्रम[४] अगम अथाट[५]
वेर वराह[६] लीयण[७] जशदायक

१ विलास करवावाळो. २ मर्यादा. ३ गादीने उधारवावाळो. ४ पराक्रम. ५ अथाग. ६ सुवरना जेवुं वेर लेवावाळो.

नर नायक लायक नरनाह. २

प्रागहरो[1] पोत्रां परिपालग

मोटां दान दियण मन मोट

पह[2] समराथ[3] हाथ जग उपरि

क्यावर करन[4] करमरो[5] कोट. ३

एकाणि[6] रहणी वडी मति आसति[7]

सामा शोह[8] चडावण शाख

बिरद उजाल भुजाल[9] धजाबँध

भूपति भेद लहे खटभाख[10] ४

३१ सोहणो.

१,	पादमां=१८	२, ४ नो प्रास मळे, त्यां लघुगुरु आवे.
२,	,, =१४	
३,	,, =१६	
४,	,, =१४	

उपर प्रमाणे पेहेला दवालानुं प्रथम चरण १८ नुं करवुं; पण अन्य दवालामां पेहेलुं पद १६ नुं करवुं.

(दुहा.)

विषम पदे कल सोल छे, पण धुरि पदे अढार,
सममां मात्रा चौदमां अन्ते गुरुलघु धार.
समनां म्होरां ज्यम मळे त्यम रचना कर आप
ए रीते रच सोहणो प्रभुनो कवी प्रताप.

१ प्रागमलजीनो पोतरो. २ राजा. ३ समर्थ. ४ कर्णरूप. ५ लागं ६ कर्म. एकज रहेणी. ७ आस्तावाळो. ८ शोभा. ९ भुजपति. १० छ भापा.

उदाहरण.

सोहणो.

सोहणो अने शोभितो सारो ७
घेरी आंख्यो लाल घणी १४५
चटक मटकशी चालो चाले १३
मनुष्यमांहे मुकुटमणि. १ २०२
एके गुण जो होय न एमां १५३
लाखेणो पण राख समो ११६
सुंदरता साथे सदगुण तो ३८१
गरवा गणतां वणुं गमो. २ १२०
बेंक्यो बेंक्यो जोर करेछे १४५
तोर करेछे ए तुरंग २९२
ठोकर खातो ए अखडातो १४८
ए उडबंग थनार भंग. ३ ३१३

सोहणो.

राघव आदेश पाय दशरथरो, कवसल्या ए आय कने
दाखे राज भरथने देसी, मात दियो वनवास मने. १
सुत हुं तुझ चालसू साथे, डील सुखम वन विकट डरे
छता अवास साबता छूटा, कवण जाबता अवर करे. २

३२ त्रीवंको.

१ पादमां =१६
२ पादमां=१६
३ ६+४+४+४=१८
४ ४+४+६=१४

१, २, ४ नां मोहोरां मळे.

त्रीजो अमेल.

त्रीजा पादना शब्दो चोथामां उलट पालट आवे.

(दुहा.)

प्रथम बीजे कल सोळ छे, म्होरे एकज बोल;
छपर त्रीजे पद चार ने चारचारना बोल.
चार चार चोथे पदे त्रि पद अन्तमां जेम;
ते पर छ कल रची करो चौद कला कुल एम.
त्रीजा चोथा चोकला बोल उलट सुलटाव;
धुर बीजा चोथा तणां म्होरां मळतां लाव.

उदाहरण.

त्रीवंको.

जो सुजन सभानीमांह यदि	३८९
त्यां त्रीवंको थइ जाय कदि	४२३
भण भाषण भूषण भूषण भाषण	२०२६
भाषण भूषण भाइ भले. १	१६९
विस्तार विषयनो विस्तरजे	४०७
उंचे बहु बोले उचरजे	३८६
ज्यम जामे ठामे ठामे रस मस	९८९
मसरस ठामे त्यम धरजे. २	२०४

त्रीवंको.

पूछी मा आगल आय प्रमा
पितबंध न दीसे अंग प्रभा
सज रागन रंगन रंगन रागन
रागन रंगन राजसभा. १

३३ चित्तइलोल.

१	५+४+३+४	=१६	प्रौढ प्रमाणे प्रास, अंते गुरु लघु.२,४,५,६ना म्होरां मळे. पांचमा पदनी प्रथम सात मात्रामांनो छेल्लो शब्द अ-थवा अक्षरो पांचमा पदमां पांच मात्रानी छेवटमां आवे अने ते छठ्ठा चरणनी छेवटमां पण आवे.
२	३+४+३	=१०	
३	५+४+३+४	=१६	
४	३+४+३	=१०	
५	७+जी+५	=१४	
६	७+२+५	=१४	

(कवित)

पांच चार त्रण चार एम कल सोळ केरां;
पे'लां त्रीजां पद रची धर सारी रीतिथी.
बीजा ने चोथामां कल त्रण चार त्रण लावी;
तेमां गुरु लघु अन्ते प्रासमांहे प्रीतिथी.
पांचमा पदनीमांहे सातपर जी करीने;
पांच कल विष्सावाळी लावी चौदमां धरो.
छठ्ठामांहे चौद कल चित्तइलोलनीमांह;
पांचमा ने छठ्ठा केरां म्होरां मळतां करो. १

उदाहरण.

चित्तइलोल.

चितइलोल चित्त चोख करवा ५१०
आण अंतर टेक ४९
कर दूर अवगुण होय ते ते १४१
साधु प्रभुपद एक ५४
धरी विवेक जी विवेक २४३
कामे लागशे विवेक. १ २४२

तो कुळभाण जी कुळभाण
कायम साहेबी कुळभाण. २
चित क्रितमाहे सुबिद साहे सेराहे संसार
शाखरो शिणगार सोमो भुजे खत्रवट भार
तो दातार जी दातार
देशळ राउरो दातार. ३
वासर सवाडे गुण गवाडे नरां चाडे नीर
वडौ हेल हमीर बडहथ बडिमधण वरवीर
तो लखधीर जी लखधीर
लायक कुंवरे लखधीर. ४

३४ गोखी–द्वितीयगोख-तृतियगोख.

१	आठ	अक्षर	मात्रा	१२
२	आठ	अक्षर	मात्रा	१२
३	आठ	अक्षर	मात्रा	१२
४	छ	अक्षर	मात्रा	९
५	आठ	अक्षर	मात्रा	१२
६	आठ	अक्षर	मात्रा	१२
७	आठ	अक्षर	मात्रा	१२
८	छ	अक्षर	मात्रा	९

पेहेला गोख प्रमाणे वधुं. आठमा चरणमां विप्सा आवे, आठेना सरखा प्रास ने तेमां अंते गुरुलघु आवे.

१ कीर्त्ति. २ वखाणे. ३ जादव एवी तमारी शाख छे. ४ समा. ५ इंद्र. ६ सवायो. ७ चडाववुं. ८ मोटा हाथ. ९ मोटाई.
१० एनो ए शब्द फरी फरीने आवे ते, जेम वाह वाह वाह.

(दुहा)

गोखी एवा गीतमां आठ चरणनी हार
गुरुलघु अन्ते आणिने म्होरां मळतां धार.
छ वर्ण मात्रा नवतणां चोथे वसु पद आण
आठ वर्णनी वारकल शेष पदे कवि ! जाण.
छेलुं पद जे आठमुं तेमां विप्सा थाय
एम दवाला चारनुं रूडुं गीत रचाय.

उदाहरण.

द्वितीय गोख.

गोख बीजो आप गाय	११६
थोक लाभ नहि थाय	१०४
कोकमां कसाय काय	११७
फोकटे फसाय	२८
गुण गोखना गवाय	११७
रेन दिन ना रटाय	११७
एळे अवतार जाय	११९
हाय ! हाय ! हाय !	२८

गोखी.

वेहू ताम जोड बांह, नमे शीश नरां नाह
रिपीची करे सराह तवे एम ताह
मूझ बोल नृपां माह ठीक आप रखे ठार
आलमां कहे ऊमाह वाह, वाह, वाह. १

३५ अर्द्ध भाखडी.

१	११ मात्रा	२, ४, प्रास मळे.
२	१४ मात्रा	
३	११ मात्रा	
४	१४ मात्रा	

५	१६ मात्रा	चोथी झडनो उल्लालो आवे.
६	१० मात्रा	६, ८ प्रास मळे.
७	१६ मात्रा	लघु गुरुनो नियम नथी.
८	१० मात्रा	

(कवित).

अर्द्धभाखडी नी मांह अगियारकल पे'ले
बीजे चोथे चौद थाय प्रास तेना तो मळे
त्रीजे कल अगियार सोल पांचमीमां आण
चोथी तुकनो उलालो जेम बेसतो भळे
छट्ठे ने आठमे पदे आवे दश कला ठीक
तेना म्होरां ठीक ठाक मळे एक रीतथी
सातमा पदनी मांह सोळ कळा कुल आवे
एवा चार दवालानुं गीत रच प्रीतथी. १

उदाहरण

अर्द्धभाखडी.

काम क्रोध तजो जी १५
हरिगुण रटो भली भांत २६१
मोक्षमार्गमाट जी २८
राखो मनमां रुडी खांत २९७
मन खांत राखे ईश मळशे ४७१
टळे त्रिविधि ताप ४८
वळी अवर जनमनों वार ना'वे १४४
टळे सौ संताप. २६

अर्द्ध भाखडी.

मिथला मुगट राजी [illegible], चांणिया [illegible] मांन,
त्रिगविध [illegible] नवा जी, धृतन [illegible] मनशी मांन

सह भांत विगत विमाह सुणऽहे, अंग प्रफूलित आण
पत किरण निकसे रसम परसत, जलज विकसे जाण. १

३६ भ्रमरगुंजार पेहेलो.

१	=१६	प्रास मळे तेमां अंते बे लघु आवे.
२	=१४	
३	=१४	कोई साथे प्रास न मळे.
४	=९	आठमी साथे प्रास मळे तेमां अन्ते बे गुरु.
५	=१६	प्रास मळे तेमां अन्ते बे लघु.
६	=१४	
७	=१४	कोई साथे प्रास न मळे.
८	=९	चोथी साथे प्रास मळे तेमां अन्ते बे गुरु.

(मनहर)

पे'ला पदमांह कल, सोळ बीजामांह चौद
बन्नेमां बे छेला लघु प्हारा मळे तेमनां
त्रीजी नोंखी चौद कलो चोथी आठमीमां नव
तेमां अन्ते बे गुरुने प्रास मळे एमना
पांचमीमां सोळ अने छठीमांह चौद आवे
तेमां अन्ते बे लघु ने प्हारा मळे बे तणां
सातमीमां चौद कल प्रास मळे न कोईथी
भ्रमरगुंजार पे'ले माप के' छे सौ जणां. १

उदाहरण.

प्रथम भ्रमरगुंजार.

प्रथम भ्रमरगुंजार वनोवन ११४४

सरस मधने काज शोधन, ४१९
करे मधुकर भ्रमण अतिशय ६०८
स्थिर थइ न थोभे; ८
पेसतां ए पछी कमल अंदर १२०१
बंधी बनी जाय मधुकर ५५९
लालचे लपटाई जातां ४९
लाज गइ लोभे १. ७

भ्रमरगुंजार.

हणुं मिलत घुर हरि दिघ सिरहथ
रघु बजरंग हुवो समरथ,
मळे रघुवर वयण वनचर
सीत शुध साजे;
तो करुं अरियण तेण कणकण
हरख मारुं विसख हणहण,
विकट पुरुं मनावांछित
गहर जग गाजे. १

३७ मंदार.

१ अंते गुरु=१६ } १, २ नो प्रास मळे.
२ =१६ }
३ =१६ अमेल
४ =१३ आठमी साथे मोहोरां मळे.
५ =१६ } मोहोरां मळे.
६ =१६ }
७ =१६ अमेल.
८ =१३ चोथी साथे मोहोरां मळे.

(हरिगीत)

पद प्रथम बीजुं सोळनुं अन्ते गुरु कर प्रासमां,
त्रण सात ए पद सोळनां मंदार केरा वासमां;
चोथुं अने वळी आठमुं कल तेरनुं प्रासे मळे,
कल सोळनुं छे पाचमुं ने छठ्ठुं प्रासे जे भळे.

उदाहरण.

मंदार.

उमंगनां पद बे तुं आणी	२४
प्रास मळे बेना ले जाणी	४
सिंहचलो अध ते पर आवे	१६९
ए नमणो मंदार छे;	९९
कामकळा[1] सम बे पद पे'लां	१६९
चार आठ दोहा सम छेलां	१९१
त्रण मुनि अमेल सोल कलानां	१६९
ए रचनानो सार छे. १	९९

मंदार.

सुण सेष सीयाची सोधानुं,
जेले चारु दिश जोधानुं,
सुग्रीव कह्यो दिश प्राची शोधन,
वानर वीर व नीतस;
जिण साथ पेराकी जंगारा,
अत प्राक्रम दीरघ अंगारा,
इसडा पचवीस करोड अढंगा,
जुझ सरीतां जीतस. १

१ जुओ रणपिंगल प्रथम भाग पृष्ठ ५७.

३८ मनमोद.

१	१३, ११=२४	प्रथम एक दुहो करवो.
२	१३, ११=२४	
३	१०, १०, १०, ७=३७	दुहानो छेल्ली तुकनो छेल्लो, एक के बे शब्द त्रीजी तुकना आरंभमां आवे. झूलना अथवा कडखा जाति करवी.
४	१०, १०, १०, ७=३७	
५	१०, १०, १०, ७=३७	
६	१०, १०, १०, ७=३७	

(कवित)

तेर अगियार एम चोवी' कळ पे'ले पदे,
बीजे पण एम प्रास दुहो थइने मळे,
त्रीजे दश दश दश सात थइ साडत्रीस,
बीजाना छेला बोलो ते त्रीजा प्रारंभे मळे,
चोथानुं एवुं छे माप त्रीजाथी म्होरां मळेछे,
दश दश दश सात पांचमे छठ्ठे पदे,
मनमोद मांहे एम एक दुहो ते उपर,
झलणां के कडखाने लाववा कवि वदे. १

उदाहरण.

मनमोद.

जनमनमोद जणायछे ज्यारे जबरुं जोर;
अनुकूलता सौ अवसरे तातो मातो तोर.
तोर तातो अने खूब मातो बने,
शान्ति ने सुखतणो समय ज्यारे, ४७६८९२१.
लोकने लाइमां फूक वागे घणी,
धन्य के' धन्य के' वारवारे, २३९४२०४.
सुख ने शान्तिना गर्व घोंघाट जे,

સમય સમયે થતા જશ પ્રસારે, ૪૬૬૧૨૪૯.
વાહરે વાહરે વાહ વાણી વદે,
મસ મદે કેમ ના મોજ મારે? ૧ ૨૪૧૧૯૧૫.

મનમોદ

ડેરાથી સાજે ડમર પહ ઇમ કીધ પયાણ,
કરવા સુરાં સહાયકજ અસુરાંસો આરાંણ,
રાણદિસ હાલિયા ઠાણ આરાણરુખ,
કહર અસમાણ ચઢ ભાણઢંકા,
ગોમ નેજા લહક રાગસિંધુ ગહક,
ડહક ડંડા હડા શીશ ડંકા;
જબર જુથ નીઠ સુગ્રીવ અંગદ જિસા,
વલે પત ભાલસા વીર બંકા,
બાંધ માલં ખડે અડે નભ મા'વલં,
લડે દશકંઠસોં લેણ લંકા. ૧

૩૯ લઘુચિત્તવિલાસ.

૧ ૬+ગ (સંબોધન)+૬ (પ્રથમની વિપ્સા)=૧૪
૨ =૧૪
૩ =૧૪ } ચારેનાં મોહોરાં મળે.
૪ =૧૪ } અને અન્તે ચોકલિયો ગણ આવે.
૫ ગ (સંબોધન) +૬. પેહેલી ઝડની વિપ્સા જે હોય
તેજ આવે.

(હરિગીત)

પદ પ્રથમમાં કલ છો ઉપર ગુરુ એક સંબોધન તણો,
તે ઉપર વિપ્સા પ્રથમની કરી ચૌદ કલ પૂરી ભણો;
ત્રણ શેષપદ કલ ચૌદમાં ચારેય ચોકલિયે મળે,
પદ પાંચમું પે'લું બધું પણ આદિ છો કલ છો ઢળે.

उदाहरण.

लघुचित्तविलास.

जीव जाशे जी जीव जाशे १७
व्यसनी पूरो थई जाशे १७
लावी लघुचित्तविलासे ३०
का अफीण अधिकुं खाशे २८
जी जीव जाशे. १ ४

लघुचित्तविलास.

जुद्ध जुटें जी जुध जुटे
जोसेल दसासण जूटे,
त्रिजडा मुहडे तन तूटे,
वसु पडिया प्राण विछूटे,
जी जुद्ध जूटे. १

४० भाखडी.

१. ४+५+जी (११),+१४ तेमां अन्ते गल=२५
२. ४+५+जी (११),+१४ „ =२५
३. ४+५+जी (११),+१४ „ =२५
४. ४+५+जी (११),+१४ „ =२५

११ कलनां चारे मोहोरां मळे, १४ कलनां मोहोरां मळे. चोथा पदपर रणपिंगल पृ. ४१ शंकर जाति अंक १०१ मां छे, ते आवे; अने तेनां आरंभमां उपरना चोथा चरणनो उथलो आवे.

५. १६ (चोथा चरणनी चौद मात्रानो उथलो)+१०=२६

६.	१६+(अन्ते गलवाळी मात्रा	)	१०=२६
७.	१६+(,,	)	१०=२६
८.	१६+(,,	)	१०=२६

आ चारे चरणनां मोहोरां मळे.

आमां छेल्ली दश मात्रा ३+४+३=१० आ प्रमाणे लावतां सरळता सचवायछे.

उदाहण.

भाखडी.

चोपर शर धरी जी, कल अगियारनो यति एक, ६२५३१
कल मनु पछी करी जी, गुरु लघु अंत सांह विवेक. ६२५४०
शिव मनु यति फरी जी, मो' रां मळे यतिना छेक, ४९६६४
उचरी भाखडी जी, कर वर जाति शंकर टेक, ६२५४१
वर जाति शंकर टेक तेपर, करी उथलो आण, ८८०७३
वळी सोळने दशतणा यति बे, अन्त गुरु लघु जाण, ११७६६२
चारे पद रची एम म्होरां, चांर मळतां आण, ८९६६१
आ आठ पदनी भाखडी छे, खरी रसनी खाण. ८७०६४

भाखडी.

मिथलां महिपति जी, अवनी कीध जिग आरंभ,
तेडे समजती जी, लिख फुरमाण बाहु प्रलंभ,
कर विध कामती जी, खोए जित तित जश खंभ,
नागर नोबती जी, घर घर घुरत द्वार असंभ;
घण द्वार नोबत घुरत बाजत, तीस खट अवरेख,
बँध प्रोल प्रोल विशाल तोरण, वणे चित्र विसेख,
प्रत सदन पीत पताक फरकत, वरण चिह्न सुखवेश,
मध जनकपुर सुर असुर मानुष, पडे संभ्रम पेख. १

बुद्धिविलासकर्त्ता, आ गीतना मापमां प्रथम चार चरण ११+९=२० मात्रानां लाववा जणावे छे. जुओ उदाहरण माटे नीचेनुं गीतः—

महाराजा लखपतजीनुं गीत.

भाखडी.

लायक लखपती जी; दाना दोलती
मही उत्तम मती जी, इनेवे समजती
अधिपति आ सती जी, सुरति शोभती
वाडी वाघती जी, कायम कीरती
कीरती लखजुग क्रोड कायम, रीवू कायम राज
शिरताज शाखशकाज समरथ, वरीशण गज वाज
भांजण मुगल अभंग भारथ, मोजमे महिराण
खगि त्यागि खत्तवट बीरद खाटण, प्रथी उपर पाण. १
वान वधारणो जी ओठी[1] आमेरा[2]
इलपुंडी[3] ओपियो जी आचां[4] ऊधेरां[5],
दाने देयणो जी कोटी कवशरां,
देख दीखालणो जी क्यांवरि[6] कोंअरां[7];
कोंअरा चाडण[8] शोह[9] कोंअर, धरपति लखधीर,
निजपखे देशलसुतन निरमल, वाडिम घणवर वीर;
प्रभु जोतकारी नरां ओपम अधिक जश ओशाप,
जाडेज वंश मगेम जालिम प्रगल तेज प्रताप. २

---

१ ओठाणी. २ आमराणी. ३ पृथ्वीना पड उपर. ४ हाथ. ५ उदार, उद्धारकरे. ६ काम. ७ कुंवरामें. ८ चडाववावाळो. ९ शोभा.

જેહળ જેવહો[1] જી મહિ પુડી મંડળી
શામાં શાખરી જી ભાળીમ[2] ભુજ ભળી
સોવ્રન[3] સમપણો[4] જી કરન[5] વળી કળી
નિજરી નિરમળી જી અતિમતી ઉજળી;
ઉજળી રજવટ પ્રગબ આશતિ મહણ[6] મેર[7] મ્રજાદ[8],
ઉદમાં[9] દામણી[10] કળહીં[11] અશુરાં નરાં નામણ નાદ[12]
મનમોટ ગાહટ[13] કોટ માઝી ચાલ પહ[14] કળી ચાલ,
શપખાલ[15] બિરદ વિશાળ માળિમ ભડકિમાડ ભુજાળ. ૩
રીતિ રહાવણો જી ઊંચી આદરી,
કીરતિ કવિ કરે જી પરભૂઈ પસરી,
પ્રગટ પરાક્રમી જી ખત્રવટ વપિ ખરી,
વાશો ખગવેશજી ‘સુપ્રસન્ન શંકરી[16]’
શંકરી સુપ્રસન્ન દીહ સબળા કળામધી અધિકાર,
જૈકાર બોલે સુજશ જણ જણ વડીમ વિળશે વાર;
હિંદુઆં શિરહરસધર[17] હિંદુ વિકટ થાટ વિહાર,
શિણગાર કુંઅરે હાર સામો[18] દિપે જગદાતાર. ૪

૪૧ ત્રિકૂટબંધ.

૧ = ૧૪	}	દોઢાગીત પ્રમાણે. તેમાં ૧, ૨ નાં
૨ = ૧૪	}	મોહોરાં મળે. તેમાં લઘુગુરુ આવે.

૧ જેવો. ૨ ભલાઇ. ૩ સોનું. ૪ સમર્પણ કરવાવાળો. ૫ કર્ણ. ૬ દરિયો ૭ મેરુપર્વત. ૮ મર્યાદ. ૯ ન દબાય એવો. ૧૦ દોરડું બાંધે. ૧૧ કલહ, યુદ્ધ. ૧૨ હાંક. ૧૩ પ્રબળ. ૧૪ રાજા. ૧૫ સાર પક્ષાં. ૧૬ દેવી. ૧૭ જબર. ૧૮ સમાવંશ.

३	=	१६	३, ४ नां मोहोरां मळे नहि.
४	=	१०	
५	=	१४	५, ६ नां मोहोरां मळे तेमां लघुगुरु आवे.
६	=	१४	
७	=	१४	७ थी १४ सुधी मोहरां मळे तेमां बे लघु अन्ते आवे.
८	=	१४	
९	=	१४	
१०	=	१४	
११	=	१४	
१२	=	१४	
१३	=	१४	
१४	=	१४	
१५	=	१३	तेमां अन्ते गुरु लघु आवे तेनो प्रास ४थी ऌडथी मळे.

(कवित)

त्रिकूट बंधनीमांह पंदर तो पाद थाय,
त्रीजे चोथे सोळ दश कला क्रमे थायछे.
पंदरमे बार कल तेमां अन्ते गुरु लघु,
तेनां म्होरां चोथे पदे ठेठ मळी जायछे.
शेष रह्यां तेमां प्रतिपद चौद कलकेरुं
पे'ला बीजा केरां म्होरां लघु गुरुमां मळे
पांचमा ने छठ्ठा केरां एज रीते म्होरां मळे
अवरनां म्होरां अन्ते बे लघु आवी मळे.

शिवाजिए अफझुलखानने वाघनख पेराने मारी नाख्यो ते वेळानुं वर्णन.

त्रिकूटबंध.	रूप.
अफझुल्ल आव्यो धारिने	९४
उपाडी निजकर कालिने[1]	१३७
थई आकळो उठ्यो पछी ते	९४
शरीर सजवा काज.	४२
बिछुवा करे बे बांधिया	९४
ते वाघना नर सांधिया	१२७
चतुर चेती चित्तमां चट	४१४
वर कवच धरियुं अंगपट	४८७
कमर कसीने बांधी झट	३८२
कीधुं प्रयाण ज कट्ट कट	५०४
पोंची पछी ते तंबु तट	४७०
अफझूल उंचो हस्त घट	४७१
बाझ्यो शिवाने झट्टपट	४७०
चीर्यो शिवाये शूरवट	४७०
लइ लूंटी अरिनी लाज. १	१०७

त्रिकूटबंध.

कुल भ्रात मंत्री सुत कटे, उर क्रोध रावण ऊपटे
मन समझ न हूचे थटे मरणो, सजे घण घमसाण.
वध ओप वाजँत्र वाजिया, सज टोप बगतर साजिया
कस कंबर वड फर गहरकर, धज धजर आ वध सधरधर
घढ चले रथपर ढर चमर, भड अवर निशचर रिण भवर

---

१ शिवाजीनी तरवार जेने ते भवानी केहेतो हतो.

मिल चिहूर मूछां भवर भर, वज पखर गुधर भिड जवर
गज चिंध फर हर खुल अगर, भ्रुकु अतर लोयण अगन झर
अर आदियो आरांण. १

निरशंक असुर निहारियो, धनु धरण धानुष धारियो
भूथांण बांधे करण भारथ, रोष धर रघुवीर
सेसाद अंगद साथरा, कप हाकले जुध काथरा
रिण रींछ मरकट न्रयति रट, भट प्रगट गज थट कज सुभट
जट गरट गिरथट गह झपट, नट जेम ऊधटकर निपट
वज खंभ आहट हूय विकट, हदकियण खल खट लाग हट
वट आमट ऊछट डायण वट, दट दनुज हर वट कज दपट
सज भिडे वीर सधीर. २

४२ दूजो त्रिकूटबंध.

प्रथम भ्रमर गुंजारनी बे झड.	१. ९+७ = १६		१, २ नां मोहोरां मळे तेमां बे लघु अन्ते आवे.
	२. ७+७ = १४		
	३.	= १४	अमेल.
	४.	= १०	पंदर साथे मोहोरां मळे, तेमां गुरु लघु अन्ते आवे.
	५.	= १४	५, ६ नां मोहोरां मळे. अन्ते लघु गुरु.
	६.	= १४	
	७. ९+७	= १६	अमेल.

८. ७+७ = १४	८ थी १४ सुधीनां मोहोरां मळे, तेमां अन्ते बे लघु आवे.	
९. ७+७ = १४		
१०. ७+७ = १४		
११. ७+७ = १४		
१२. ७+७ = १४	लघु घणा आवे त्यम टीक.	
१३. ७+७ = १४		
१४. ७+७ = १४		
१५. = १०	चोथी साथे मोहोरां मळे, तेमां अन्ते गुरु लघु आवे.	

(एकात्रिशा सवैया.)

बीजा त्रिकूटबंधनी मांहे, पंदर पद सौ मळीने थाय,
पे'ले पदकल सोळ थायछे, नव साते विश्राम गणाय,
बीजामां कल चौद करेछे, सातसातना बे विश्राम,
मोहोरां ए बे पदनां मळतां गुरुलघु अन्ते आवे काम. १
त्रीजुं पद कल चौद तणुं छे अमेल ए तो चाली जाय,
चोथुं पंदरमुं दश कलनुं गुरु लघुमां म्होरां मेळाय,
पंदरमुं छठुं पद मळतुं अन्ते गुरुलघु प्रासे आण,
मुनिपद नव ने सात विरामे सोळ कलानुं अमेळ जाण. २
शेष रह्यां पद आठ थको ते चौद सुधीनां सरखां आम,
ते प्रतिपदमां चौद कळा छे, साते साते छे विश्राम;
ए सर्वेनां म्होरां मळतां सरखी रीते चाल्यां जाय,
तेमां अन्ते बे लघु आवे सौ पदमां लघु ठीक गणाय. ३

शिवाजी पोतानी मातानी शीखामण मानी राज मेळववा माटे पोताना साथी पसंद करेछे.

दूजो त्रिकूटबंध.

शुणी मातनी सौ वात सावज १०८१

धीर धारे " शीख आ घज. " ४१२
हवे निशदिन कदि न जंपुं ८७
जीत करवा काज. ४१
जैन जोइता जइ खोलिया १२८
ठग अने जोया ठोलिया ९२
गांज्या न कोना जाय एवा ९३
धीर जे नर जोरमां वर ४२६
कशो नहि डर खूब धीर धर ५७४
फरी घर वर शोध कर कर ५७४
जे निशाचर फरतल निडर ५१५
जाण डुंगर ढोळ शिखर ४२६
पडचुं पादर वांड ने दर १२५
वंश यशकर कीध लशकर ५७५
रंज[1] करवा राज. ४१

दूजो त्रिकूटबंध.

रघुनाथ श्रीहथ हते रावण परम संता कीध पावण
जयति अहिनर अमर जंपे समरकरुणासार
चित खून खिण न विचारियो घणी आप निजवृंद धारियो
उण अडर निशचर अवनी उपर कहर करकर साज लशकर
प्रचंड खितधर कियण पाधर जबर अहनर अवर निरझर
धरणी हरहर रिषी तिणधर थहर थिरमर अतर थरथर
तेण कृतभर काज दुस्तर हुवर तिणपर महर नरहर
परस किय भवपार. १.

१ बिजापुरना राजने रंजाडवा माटे.

दनुज जिण जिंह अटलपद दिय कृपाकर तिह लंकपति किय
वळे सगळी रिद्ध रघुवर वयण वर वरियाम
मुख हुतीं तिय मंदोदरी ध्रुव सुजण अन्ते वरधरी
अरु महल भुवतल विरल उज्वल अनुग निसचल अमल भूतिपल
चपल कोतल कलल चंचल विहद मदगल भ्रमर अलबल
रथां जल हल चित्र रलरल उजल अणचल प्रबल पैदल
अचल त्रियबल महलपुर इल प्रबल दलबल रीझ इकपल
सकल बगसे साम. २

४३ हंसावलो.

रा अक्षर मारवाडीमां झाझो आवे ने गुजरातिमां छठ्ठीनो प्रत्यय ना आवे. उल्लेखा अलंकार आवे.

१	=	१८	२, ४ नां मोहोरां मळे, तेमां गुरु लघु आवे.
२	=	१५	
३	=	१६	
४	=	१५	

आवो पेहेलो दवालो करवो पण बाकीना दवालाना पेहेला चरणमां वेलिया प्रमाणे १६ मात्रा आणवी.

हरिगीत.

हंसावलाना विषममां कल सोळ पण धुर बे वधे
समपदे पंदर थाय म्होरां अन्त गुरु लघुमां बधे
ना रा घणा पदमांह आवे गीत तो अेवुं रचो
उल्लेख* आवे अलंकारज अेम रचवामां मचो.

---

* बीजा प्रकारना उल्लेखनी व्याख्यानो दुहो.

जेम बहु विधि वरणे एकने, बहु गुण अे उल्लेख
(हे राजा !) तुं रण अर्जुन, तेज रवि, सुरगुरु वचन विशेष.

धीर धारे " शीख आ घज. " ४१३
हवे निशदिन कदि न जंपुं ८७
जीत करवा काज. ४१
जन जोइता जइ खोलिया १२८
ठग अने जोया ठोलिया ९२
गांज्या न कोना जाय एवा ९३
धीर जे नर जोरमां वर ४२६
कशो नहि डर खूब धीर धर ९७४
फरी घर घर शोध कर कर ९७४
जे निशाचर फरतळ निडर ११९
जाण डुंगर ढोळ शिखर ४२६
पंडचुं पाद्र बांड ने दर १२९
वंश यशकर कीध लशकर ९७५
रंज[1] करवा राज. ४१

दूजो त्रिकूटबंध.

रघुनाथ श्रीहथ हते रावण परम संता कीध पावण
जयति अहिनर अमर जंपे समरकरुणासार
चित खून खिण न विचारियो धणी आप निजवृंद धारियो
उण अडर निशचर अवनी उपर कहर करकर साज लशकर
प्रचंड खितधर कियण पाधर जवर अहनर अवर निरझर
धरणी हरहर रिषी तिणधर थहर थिरमर अतर थरथर
तेण कृतभर काज दुस्तर हुवर तिणपर महर नरहर
परस किय भवपार. १.

---

१ विजापुरना राजने रंजाडवा माटे.

सत व्रतरा राखण लाखेणसी
मनरा[2] कून दिलरा महीराण.[3] १
जगेरा रूप वायेरा जुज सठ्ठल[6]
इलराँ स्थँभ कुलराँ अजुआल
दुखरा हरण देवरा दरशण
पनेरा प्रवित छत्रंनेरा पाल. २
गहरा सगेहे[11] अगंजरो[12] गांजण
पखरा सधर ऊधेरा पाणे
अँगरा अभँग जँगरा अरिजण[15]
तपरा भाण तपे तुडि[16] ताण. ३

झडलुप्त, त्रिमेलपालवणी.

(त्रीजी झड प्रासमां लुप्त थायछे माटे)

१ = १८		१, २, ४ नां मोहोरां मळे, तेमां भगण आवेछे.
२ = १६		
३ = १६		त्रीजी अमेल.
४ = १६		

प्रथम दवालो उपर प्रमाणे करवो. पण बाकीना दवालामां प्रथम झड १६ नी लाववी; बाकीनी उपर प्रमाणे

(हरिगीत.)

झड लुप्तमांहे सोळ कलनां चार पद पूरां करो,
ध्रुरपद विषे बे कल वधे वळी भगण सौ अन्ते धरो;

---

१ लाखाजेवो २ कर्ण ३ दरियो ४ जगतनुं रूप ५ वचननो ६ युधिष्ठिर ७ पृथ्वी ८ कुलनो उजाळवावाळो ९ पुन्यमां १० षटवर्ण ११ शदियो १२ कोइथी गंजाय नहीं तेने गांजी नाखवावाळो १३ जबरा १४ हाथ १५ अर्जुन १६ तडित, वी जळी.

हंसावलो.

गुणतणो ग्राहक पशुतणो पालक १७९९
वेणनो अचल गरीब निवाज ६०४
टेक नेकनो टकावनारो ११७
शूर तणो शिरोमणिताज ४२३
वैरी विदारण दीन उगारण ११५६
माग्यां दानतणो देनार ३९९
जश लोभी माग्यानो मेरु २
राज लाज अरि लेवणहार. १४९

हंसावलो.

धर्म धररा मथण जगतरा पालक
संतरा अमल संतरा साथ
वेररा देयण भगतरा वछल
नररा रूप नमो रघुनाथ. १
गुणरा गहर गरुडरा गामी
घणनामी सुररा घवेश
कपरा मित जगतरा कारण
सतरा समंद धनो अवधेश. २

हंसावलो.

देशलरा कूंवर वंशरा दिपक
जशरा लियण जुगतिरा जाण

१ आ सघळां शिवाजीना विशेषणो छे ते उल्लेख अलंकार लाववा माटे योजवामां आव्यां छे.

मन इच्छा लंकेश्वर मारण
वळी विचार करे लक्ष्मीवर
धर्यो जन्म मर्यादा कारण. १
खल ए खूनी बहु खून कीधां
दुनिया द्विज देवो दुख दीधां
करुणा निधि मनमां ए कारण
ब्राह्मण कुळ निधामां लीधां २

४५ त्रीबंकडो-घोडादमो.

१	= १८		२, ४ नां मोहोरां मळे, तेमां अन्ते बे गुरु आवे.
२	= १६		
३	= १६		
४	= १६		

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो. बीजा दवालामां चारे झड सोळनी. एवा चारनुं एक गीत थाय.

हरिगीत.

त्रीबंकडो घोडादमो धुरपद अढारज कलतणो
छे अवर पदकल सोळनां चारे दवालामां गणो,
बीजा अने चोथा तणां म्होरां मळे तेवुं धरो
ते विषे अन्ते बे गुरु धरीं गीत रूडुं तो करो.

उदाहरण.

घोडादमो.

त्रीबंकडो पाको बनीं को तेडो १४७
वांको करवा वांको बाझे ९
सामो तेवो वळगे साथे ९६

पद एक बे ने चारनां ठिकठाक म्होरां मेळवो,
त्रीजुं रह्यु पद तेहने नहि कोइ साथे मेळवो.

उदाहरण.

झडलुप्त.

जो झडलुप्ते नोंखी त्रीजी झड २५८८
ते रीते नोंखो तुं नव पड़ १३६५
म्होरे ज्यम त्रण भेळी मळे २७१
मळ त्यम जातिमां तुं नव खड़ [1] १ १३६९
मेल मळे ते छे सुखदायक ११३५
लायक जनने ए छे लायक ९९९
अमेलज ए तो मननो मेल ७०५
छेवटमां ए छे दुखदायक. २ ११३५

झडलुप्त.

डेरा रोपिया उतर दध डारण
मन न हचे लंकेशर मारण
वळे विचार करे लिखमीवर
धरे जन्म मरजादा धारण. १
खळ खूनी हेतो घण खायक
दुनियां द्रूज देवां दुखदायक
करुणा निध आणी इण कारण
निरखे कुळ ब्राह्मण रघुनायक २

झडलुप्त.

उदधि पार उतर्यां अघहारण

---

1 कचरो.

मन इच्छा लंकेश्वर मारण
वळी विचार करे लक्ष्मीवर
धर्यो जन्म मर्यादा कारण. १
खल ए खूनी बहु खून कीधां
दुनिया द्विज देवो दुख दीधां
करुणा निधि मनमां ए कारण
ब्राह्मण कुळ निधामां लीधां २

४५ त्रीबंकडो–घोडादमो.

१	= १८	२, ४ नां मोहोरां मळे, तेमां अन्ते बे गुरु आवे.
२	= १६	
३	= १६	
४	= १६	

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो. बीजा दवालामां चारे मद सोळनी. एवा चारनुं एक गीत थाय.

हरिगीत.

त्रीबंकडो घोडादमो धुरपद अढारज कलतणो
छे अवर पदंकल सोळनां चारे दवालामां गणो,
बीजा अने चोथा तणां म्होरां मळे तेवुं धरो
ते विषे अन्ते बे गुरु भरीं गीत रूडुं सो करो.

उदाहरण.

घोडादमो.

त्रॉबंकडो पाको बनीं को तेडो १४७
वांको करवा वांको बाझे ९
सामो तेवो वळगे साथे ११

दे अग्नि तो वांको दाझे: १ १
माटे वांकी रीति मूको १
सरस सार नीति जो सीधी ८
सीधे सरल सगां सौ थाशे ३०
कविए एवी गणना कीधी. २ ९७

त्रिवंकडो.

अंगद मेलियो सद दूत अप्रंपर
बळअतुलां मजबूत बडालो
वप सिणगार धूतखल बेठो
रचे सभा अदभूत रढालो १
मिले जाय मेले हरि मोनुं
जड तोनुं आगूच चिताउ
सीस नमाय सियाले साथे
बचसी जद उपाय बताऊं.

त्रिवंकडो.

दौत्य कुशल अंगद दूत मेल्यो
बळ बुद्धि विक्रममां पे' लो
वपु सणगारी धूर्त्त ज्यां बेठो
सामत सघळा मंत्री भेळो.
वद्यो वेण जई मळ हरिने तुं
जड आगळथी हुं चेतावुं
सीता साथे लई जई प्रणमे
तोज बचे उपाय बतावुं.

त्रिवंकडो.

दातारां रूप समो भ्रम देशळ
भूपति भलो भलो जग भाखे
लाख वरीश नरेशार लाखो
रीत प्रवित खत्री ध्रम राखे. १
भारथि[1] अग्नि[2] ऊजागि[3] महाभड
जोध जडार्ग[4] वडा छळ जागे
मेर म्रजाद दशो दिश मालिम
मुगलांकन्ने पेशकश मागे. २
मोटे चितसामा कुळ मंडण
वीदँग[5] वरन सदा वरतावे
मोज अपार संसार शिरोमणी
कुंवरे हार शिंगार कहावे. ३
एकर्ण[6] रहाणि हिंदूआं ओपम
पाट उँघोरवडा पण पाळे
अवतारी भारी अहंकारी
आप तणा परियां उजवाळे. ४

४६ सेलार.

१	=	१८	१, २ नां मोहोरां मळे.
२	=	१६	
३	=	१६	३, ४ नां मोहोरां मळे चोथामां शब्दालंकार आवे.
४	=	१६	

१ युद्ध. २ आग. ३ घणी. ४ वीर. ५ कवि. ६ एक रेहेणी राखना वाळा ७ उनारवावाळा.

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो. बीजा दवालामां पेहेला चरणमां १६ मात्रा लाववी.

हरिगीत.

सेलारनुं पद प्रथम तो पुराण कलनुं थायछे,
बाकी बधां कल सोळनां चारे दवाला मांयछे;
पद प्रथम ने बीजा तणां स्होरां मळे त्रण चारनां,
चोथे अलंकार ज रचो बहु सरस ने विचारनां.

बुद्धिविलासमां धुरपदनो भेद बताव्यो नथी. सर्व पदमां सरखी १६ सोळ मात्रा लाववानुं जणाव्युं छे.

उदाहरण.

सेलार.

सेलार सेल करवा भटकेछे ४४९
ए गोदा खातां अटकेछे १४९
मोज न मळतां थाय अधीरो १९६
धीरो वीरो कदि यदि धीरो. १ २००
करो सेल जो सारे कामे ६
ठरेल थईने सीधे ठामे ११
तो तो जगमां जीती जाशो ९
खाशो मार न खासो खासो. २. २२

सेलार.

तपसीरो रुप धरे अतताई
अडर फुटी गह सीत उठाई
सिथल पुकारी साद शुणीजे
कीजे हो हरि वाहर कीजे. १

१ सरस.

गीध जटायु गाढ गुण गाडो
आय फिर्यो शुण रावण आडो
आखे वयण न हुवे अधीरो
धीरो रे आयो हुं धीरो. २

सेलार.

गृही तापस रुप अद्भूत लबाडी
कर झाली सीता उपाडी
आर्त स्वरें आरंभ्युं रूदन
सार करो कौशल्यानंदन. १
गुणी जटायु गुणथी जाडो
आवी फर्यो शुणी रावण आडो
शुण रावण नहि था तुं अधीरो
धीरो रे हुं आव्यो धीरो. २

४७ गजगति.

१ अन्ते लग=९+जी २ ,, =९ ३ ,, =९+जी ४ ,, =९	चारे चरणनां मोहोरां मळे. चोथीनुं सिंहावलोकन हरिगीतना प्रथम चरणमां आणवुं.

५. चोथीनुं सिंहावलोकन. ९+७+१२=२८	अन्ते लग
	२. पिं. पृ. ४७
६. ९+७+१२ =२८	११८ सारसी
७. ९+७+१२ =२८	११२ गीतक, वैतालिक,
८. ९+७+१२ =२८	हरिगीता गीया मालती

हरिगीत.

कल नव तणां पद चार तेमां अन्त लघु गुरु आणजो,

बीजा अने चोथा तणा वळीं प्रास मळता जाणजो,
पद प्रथम त्रीजा उपर गजगति मांहतो जी धारजो,
सिंहावलोकन चोथीनुं धरों छंद गीता सारजो.

उदाहरण

गजगति.

१.	गजगति गुण ग्रहेजी,	२१
२.	ललना लइ लहे,	१८
३.	तेथीं चतुर ग्रहेजी,	२०
४.	कवि कविता कहे.	१२

कविता कहे कवितो भली गज गामनी वखणायछे;
लीला गति लइ लक्ष ललना लटकती ललचायछे;
गुण ग्रहो गुणने जगे अवगुण गजनी मांह गणायछे;
गज गति करतो धूळ छांटे ए अवगुण लेखायछे.

गजगति.

कुंभज मुनि कहेजी,
रघुवर मन लहे,
निशाचर रहेजी,
विकट वन महे.

चित चहे जावा विकट वनमां रहे राक्षस रोषमां,
तन तुंग नाम कबंध तेनुं पडयुं द्वादश कोशमां;
ए हतो गायक इन्द्र शापित जोर ए बहु मारतो,
वण मस्तके निज हस्तथी बहु जीवने संहारतो.

गजगति.

कुंभज कह कहेजी, सियवर सुण सहे,

वंदे पग वहेजी. गेलो वन गहे.
वन गहे गेलो जेण विचमे रहे राक्षस रोसमें,
तन तुंग नाम कबंध तिणरा करग जोजन कोस में,
सो हुतो गंधृप श्राप वासव धिखे प्राक्रम धारिया,
विण शीश दूर पसार बाहां घणा जीव संघारिया. १

४८ सावजडो.

१	६, ५, ५, ७=२३	चारेनां मोहोरां मळे.
२	५, ५, ५, ५=२०	
३	५, ५, ५, ५=२०	ऊदाहरणमां अन्ते लघुगुरु
४	५, ५, ५, ५=२०	आवेछे.

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो. बाकीना दवालानी पेहेली झड वीस वीस मात्रानी आणवी तथा बाकीनी त्रणे झड २० वीश मात्रानी आणवी. गोख गीत प्रमाणे चोथामां विप्सा नहि.

सवैयो.

पांच कळाना चार गण तणी वीश कळा पद चारे थाय,
पण आदिना आदि पदमां त्रेवीश कळ कुल एम समाय;
तेमां छ, पांच, पांच अने वळी साते तो आवे विश्राम,
चारे म्होरां मेळवो सरखां सावजडो रचवो कवि आम.

उदाहरण.

सावजडो.

सावजडो, बळवान, वन वने, मटकायछे. ९८९९
खाजमां हरिणने खोळिने खायछे १७६९
क्षुद्र हणवा थकी क्षुद्र लेखायछे १७६१
मृगपति जो हणे धन्य यश गायछे. १ २३६७

गरीबने रेंशीने बळथकी मारवो, १९०१
थाय सामो बळे तेज ऊगारवो; १७९६
केम बळवान ते जीवने धारवो, १७६१
दोष अति देइने तेहने डारवो. २ १७६१
खाइ हरणां घणां खूब ताजो थयो, १७६१
पापमां एम अवतार एळे गयो; १८११
पारधी पाश सपडाइने तुं रह्यो, १८११
आ जरा जेटली गोलीए जीव गयो. ३ २२९२
जोरना तोरमां जोध शुं झूझवे, १७८६
काळ आवी उभो पास रे'शे हवे; १७९६
नाश तारो थशे खास कवि तो कवे, २२६६
चेत तुं चेत लवरी हवे शुं लवे. ४ १८११

सावजडो.

सुणे वेण अंगद कलह सुभट सरसाविया,
थरक जल थालज्युं त्रकुट जण थाविया;
चाल बांधे घुरां दनुज ललचाविया,
अतवप अकंपन समर सज आविया. १
ताडका न त्रीठा ओरिया तायलां,
घणा घाए हवा आपत्रण घायलां;
भिडे जुध पछे भींडी वटे भायलां,
रीठ वागो उभे ओड अजरायलां. २

सावजडो.

वडा डाण परमाण हुयवला उपटवरां,
घणा घोडां भडां नगारां घरहरां;

घरनी भुई हुई जाण पैला घरां,
आज जाडेज घमसाण के उपरां. १
दिये हमला गढां प्रसण मनमे डरे,
मेवसा ताहरें नाम पडके मरे,
भलभला भोचिया डंड आवे भरे,
कणा सिर देशला राव प्रारंभ करे. २
गढपती राव रायधण सरखो गणै,
हुकम लोपे जकोतकां पकडे हणै,
मन जाण तातके दहल काने सुणै,
वीरवर भारहुत फोजकेसी वणै. ३
पूछि जे प्रधाना सौम कौटा पडे,
आजरा सीलेहिखान विकट उघडे,
घोप पड प्रवाहां लगस फोजां चडे,
घाट लखपति हराकिणां उपरे घडे. ४

४९ अर्द्ध सावजडो.

१	६+९+९+७	=	२३
२	९+९+९+९	=	२०
३	,,	=	२०
४	,,	=	२०

१, २ नो अने ३, ४ नो मोहोरो मळे एटलो तफावत सावजडाथी छे.

प्रथम दवालो उपर प्रमाणे करवो. बीजा दवालानी पेहेली झड तथा बाकीनी त्रणे झडमां वीश वीश मात्रा आवेछे.

(गीति)

अर्द्धा सावजडामां सावजडा सम चरण बधां आवे,
प्रास मळे वे पे'ला छेला बे पछी कविजन मेळावे.

उदाहरण.

अर्द्धसावजडो.

सावजडो अर्द्ध फालो भरी अथडाय छे, ९६०७
लाग लई लोंकडी उपर ललचायछे; २५१५
चूकतां फाल ते काळ पाशें फश्यो, १७५६
पारधी ते परे आवियो छे धश्यो. १७५६
एम आ जगतमां मोट बदलायछे, २३७९
उलटा सुलटी सौ बनी जायछे, १७५६
हर्ष ने शोक अे कांई मन नव करो, ३९६३
पूर्ण प्रभुनाथकी खोटुं करतां डरो. २३७१

अर्द्ध सावजडो.

दनुज आवियो वळे खटके हिंये दोयणां,
लाल मुख दसुं भटके अगन लोयणां;
राम सामो धसे एम रण रोपने,
लहर निध छिल्यो जाणे हदां लोपने. १
महोदर वंजर मुसहाव दाहे मसत,
दूरीमुख धूमनी धूम वामी दसत;
तुंग तन अकंपन देख वड तोलरा,
दसमुख मुसाहिस कोय चंडोळरा. २

५० दीपक.

१	=	१८
२	=	१५
३	=	१६
४	=	१६
५	=	१६

२, ५ तथा ३, ४ नां मोहोरां मळे. वेलिया गीतनी तुक प्रमाणे १, २, ५ तुक करवी. अने दुमेळ प्रमाणे ३, ४ तुक करवी.

प्रथम दवाले उपर प्रमाणे करवो; बाकीना दवाळाना पेहेला पदमां १६ मात्रा करवी.

(गीति)

बीजीमां कल पंदर सोळ कला पद अवर पदे चारे,
पण धुरपद आदिनुं अढार कलनुं चतुर कवि धारे. १
दीपक एम बने छे म्होरां बे पांचनां मळे जेमां,
त्रीजा ने चोथानां म्होरां मळतां अणायछे तेमां. २

उदाहरण.

दीपक.

कर दीपक दिल विषे तुं सुखकर, ३६३६
जो पर्छो जगनां केवां कृत्य, ३८९
भलुं भलुं तुजने ते भासे, २४
भूंडा भूंडा पोत प्रकाशे, १४५
सत्य रेहेछे सर्व सत्य. १ ६१२
अंधारुं राख्ये अथडावुं, १४५
अजवाळे अजवाळुं थाय, ४००
जगमां जोवानुं जोवाशे, २
उजास चारे पासे थाशे, ३
ज्ञान दीपक दिलमां प्रकटाय. १ ८९२

दीपक.

ईसवर सिय शेष चढे रथ ऊपर,
तहक सारथी खडे तुरंग,
नगर हलक हाले नरनारी,
घर धंधो छोडे घरबारी,
मिल त्याने दे शीख उमंग. १

भिल्ल गृह वन मिले भावसुं,
परम भगत पोरस भरपूर,
मोडण लगो आप दिश माजी,
जिणनूं कही हकीकत जाजी,
दल राखस करणा हिव दूर. २

५१ गोख (झांपखोडो) तृतीय गोख.

पेहेलो दवालो.	१	६, ५, ५, ७=२३	(तेमां अन्ते ल) यति पण तेज प्रमाणे.
	२	५, ५, ५, ५=२०	
	३	५, ५, ५, ५=२०	
	४	५, ५, ५, ५=२०	बे विप्सा आवे.
बीजो दवालो	१	५, ५, ५, ५=२०	लघु गुरुनो नियम नहि.
	२	५, ५, ५, ५=२०	
	३	५, ५, ५, ५=२०	
	४	५, ५, ५, ५=२०	पांच मात्राना शब्दनी विप्सा आवे.

चारेनां मोहोरां मळे. बीजा प्रमाणे बाकीना दवाला करवा.

(हरिगीत)

यति पांच कलना चारनी कल वीस चारे पादमां,
चोथा पदे विप्सा रचो ठिक झांपखोडा गोखमां;
धुरपद विषे पद पांच ने शर सात थइ त्रेवीस कला,
तेमां रचो अन्ते लघु तुक चार प्रास मळे भला।

उदाहरण.

गोख.

विषम चरणमां आण वडो साणोर कविवर ! ४२३४४

६ ५ ५ ७
त्रेवीश कल षट शर शर मुनि चरणधर, १०९४२
तृतीय गोख गल मास विश कल पद अवर; १०८८६
कलाशर कलाशर कलाशर कलाशर. १ ८१०६

झांघखोडो.

अतुल सरासन भंग लख वध अत उमंग उर,
गहर दिन महूरत पूछ सतानंद गुर,
आम निज जनक नृप लिखे कागद अतुर,
अवधपुर अवधपुर अवधपुर अवधपुर, १
तेड मंत्री वृवे पत्र इम तवे तिथ,
कही जें घणे हित स्वयंवर तणी कथ,
पाण करसी गृहण जानकी वेद पथ,
दासरथ दासरथ दासरथ दासरथ. २

५२ सतखणो.

जांगडा साणो-रनां प्रथमनां चार पद.	१	४+५+५+५=१९	२, ४ नां मोहोरां मळे.
	२	४+४+गु+गु=१२	
	३	४+४+४+४=१६	
	४	४+४+गु+गु=१२	
संबोधन सहित सरखी.	५	=८	५, ६ नां मोहोरां मळे.
	६	=८	
झड चारे	७	=९	अमेल.

दवालामां दोढ तरिके एकनी एक आवे. उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो; बीजा दवालाना पेहेला पदमा सोळ मात्रा करवी.

(ककुभा जाति)

धुरपद च्यार अने शर शर शर थइ कल ओगणॉ आवे,

बीजे चोथे चार चारपर बे गुरु प्रासे लावे,
संबोधननी साथे पांचे आठ कला आवेछे,
पंचम सरखुं छठ्ठुं पना ए बोले लावेछे. १
त्रीजा पदमां चोकलिया गण चार थई कल सोळे,
अवर दवाला तणां प्रथम पद त्रीजा तोले बोले,
चार दवालामांह सातमुं नव मात्रानुं दोढे,
एवो सतखण रची रचीने कवि उचरता मोढे. २

उदाहरण.

सतखणो.

एळे गुमाव्यो अवतारज आखो,	७०३
कर्म कर्यां छे कूडां,	४
शोधी शोधी जड्यां जेटलां,	२९९
भवमां भटकी भूंडां,	१०
रे जो जागी,	१
रे जो जागी,	१
पस्ताइ प्राणिया. १	११
पाछळ जोयुं कशुं न जिवडा !	४९१
आंखे पाटा बांधी,	१
आज उपाय रह्यो नहि एके,	१६९
कसी बांधे सुत कांधी,	२३
रे नव चेत्यो,	४
रे नव चेत्यो,	४
पस्ताइ प्राणिया. २	११

शतखणो.

आया मृगमार सेपनुं आखे वचन सुणो प्रवीता,

दारुण कुटी निंदगी दीसे सही गमाई सीता,
रे मनमीता, रे मनमीता, कीविध कीजिये. १
मृगया रमे आवता मारग देखत उभी दोटे,
आज कुळाग भमे कुटि उपर लाग जिनावर लोटे,
रे रंग खोटे, रे रंग खोटे, कीविध कीजिये. २

५३ वीरकंठ.

१	आठ अक्षर मात्रा =१२	१, २, ४, ८ मोहरां मळे तेमां गुरु लघु आवे.	
२	आठ अक्षर मात्रा =१२		
३	आठ अक्षर मात्रा =१२	अमेल.	
४	छ अक्षर मात्रा =९		
५	आठ अक्षर मात्रा =१२	मोहरां मळे अने गुरुलघु आवे.	
६	आठ अक्षर मात्रा =१२		
७	आठ अक्षर मात्रा =१२	अमेल.	
८	छ अक्षर मात्रा =९		

सवैया.

पे'ला बीजा त्रीजा मांहे आठ वर्णनी मात्रा बार,
चोथामां अक्षर षट आणी तेनी मात्रा नव कवि धार;
एज क्रमे पद चार अवर रची आठ चरण वीरकंठे थाय,
एक बे तणां चार आठनां म्होरां गुरुलघुमां मळी जाय.

शिवाजी अने अफझुलखाननो मेळाप थयो त्यारे शिवाजीने मारी नाखवा माटे अफझूलखाने करेली तैयारीनुं वर्णन.

वीरकंठ.

वीरकंठ जो झलाय, ११७
खड्ग मारतो खळाय, ११७

उछळ्यो विचारी एम ११७
लावी दिल लाय, २८
बाझियो बझाय एम ११७
झालियो झलाय जेम ११७
चोट तो चलावी तो ७
थीर ना थवाय. १ २८

वीरकंठ.

करां जोड रूप कीश
साम पाय नाम शीश
बांध चाल महावीर
कूदियो कपीश;
निशाचरां काल नेम
पति लंक तणे प्रेम
माग विच वणे रह्यो
सदंभा मुनीश. १

५४ चित्तविलास.

१	६+गुरु संबोधन+६	=१४	प्रथमनी छ मात्रानी वि-
२	मात्रा	=१४	प्सा १, २नो प्रास मळे
३	४+५+५+५	=१९	
४	४+४+ग+ग	=१२	
५	४+४+४+४	=१६	
६	४+४+४ (ग+ग)+ग संबोधन+६=२०.		

प्रथम चरणमां जे शब्दो होय ते छेल्ले आवे.

(छप्पय).

छ कल उपर गुरु एकतणुं संबोधन करजो,
ते पर विप्सा माट छ कल तेनी ते धरजो,
एम चौदनुं प्रथम बीजुं पद चौदे रचजो,
ते पर एक दुवाल अराटिया केरो भरजो,
तेना छठ्ठा पद उपरे संबोधन गुरुथी करी,
ते पर विप्सा पद प्रथमनी छ कल तणी देजो धरी. १
पेला बीजातणां मेळवो म्होरां प्रीते,
चोथा छठ्ठातणां लावजो मळतां रीते,
त्रीजे पद कल चार उपर शरशर शर थाशे,
पांचे चोकल चार त्रिप्रवण चित्त विलासे,
चोथे चोकलिया बे उपर बे गुरु धारी आणजो,
छट्ठे ते पर संबोधीने प्रथम पदे विप्सा सजो. २

उदाहरण.

चित्तविलास.

सुख साधे रे सुख साधे, ६७
नहि नीति रीति निर्बाधे, १८
छे क्षणिक आ संसार छटकनारो ८५०
लइ भोगव सुख लाधे, ३१
चेती चित्तविलास करीजे १६६
प्रेमे प्रभु आराधे रे सुख साधे. १ ९९६

चित्तविलास.

धनु धारे रे धनु धारे
सर हेकण बाल संघारे
महाराजाधिराज सुग्रीव मनारा
सारा कारज सारे;

कीधो भूप पूरी केकंथा

दोयण दूर विदारे, रे धनुधारे. १

हमीर कवि चित्तविलासनुं माप नीचे प्रमाणे जणावेछे:—

१ चरण = १४ मात्रा.

२ चरण = १४ मात्रा.

३ चरण = १४ मात्रा.

४ चरण = १४ + पेहेला चरणनी छेल्ली छ मात्राना शब्दनी विप्सा=२०

उदाहरण माटे जुवो महाराओ श्री लखपतजी विषेनुं नीचे आपेलुं गीत.

चित्तविलास.

परिपाले जी परिपाले,
परिआवट लाखो पाले, दातारां भलां दिखाले;
आदु[1] रेहरीति[2] उजाले, जी परिपाले. १
जगजाणे जी जगजाणे,
जाडेज भलो जगजाणे, भूपाल चले मनभाँणे[3],
प्राजो[4] प्रिथमादि[5] प्रमाणे, जी जगजाणे. २
रंज[6] राखे जी रज राखे,
राजेसर कीरति राखे, देशलसुत वाँडिम[7] दाखे,
लीधा बृंद सबला[8] लाखे, जी रज राखे, ३
खलखंडे जी खलखंडे,
खंगारा[9] जी खलखंडे, देशोत[10] अडंडा डंडे,

१ आदि. २ रहेली. ३ प्रमाणे. ४ शोभायमान. ५ आखी पृथ्वी. ६ राजवट. ७ वडाई. ८ जबरा. ९ पेठे. १० जबर.

बडपात्रा रोर विहंडे[1], जी खलखंडे. ४

गढ गंजे जी गढगंजे

गढ कोटां मोटा गंजे[3], भारॅथी[2] खॅलां दल भंजे[4]

रणजीत फते कर रंजे[6], जी गढ गंजे. ५

५५ चोटियालो, चोटियाल.

१	६,५,५,७	=२३	२,५ नो प्रास मळे.
२	५,५,७	=१७	३,६ नो प्रास मळे.
३		=१०	गर्भित साणोर प्रमाणे
४	५,५,५,५	=२०	१,२,४,५.
५	५,५,७	=१७	
६		=१०	

ए प्रमाणे प्रथम दवालो करवो; बीजा दवालामां प्रथमनी झड वीस मात्रानी करवी, बाकीनी प्रथम प्रमाणे;

(हरिगीत.)

कल त्रेवीं केरू प्रथम पद छे अवर दवाले वीसनुं,
बे पांच छे सत्तर तणां चोथुं बनेछे वीसनुं;
त्रण खट तणी कल दश रचो वळी प्रास तेना मेळवो,
बे पांच केरा प्रास मळता चोटियाले भेळवो.

उदाहरण.

चोटियाळो.

छपर बाणॅ बाणॅने सात कुल त्रेवीश धरे १४७७९

पांचपर पांच मुॅनि द्वितीय पांचें २६३

१ वाळे. २ भांगवावाळो. ३ जीतीले. ४ युद्ध. ५ शत्रु. ६ खुश थाय.

त्रण छए दश करो २९
पांचपर पांच शर पांच चोथे पदे १८१६
अवर धुरपद बधां एम संचे १७८
चोटियाले धरो. १ १३
ए रीते अवर झड वीश सत्तर दशे ३४२१
वीश सत्तर दशे क्रम प्रमाणें ३१६
षटपदो थायछे. १६
बे अने पांचना प्रास तेमां मळे १७५६
त्रण तथा षटतणा एम आणे १७२
प्रास मळी जायछे. २ २०

चोटियालो.

सुण सुपनखा वेण चढ हाकिया साकुरा
खर दुसर त्रिसर खल जाल खागां
पूरतन पेरिया
अरस छबता थका आविया अडाकी
आखता असुर रघुवीर आगां
कोप लोयण किया. १

पेख दल दासरथ शेशनुं पयंपे
सहोदर सिया ले तून साथे
उभे अेकन्तनूं
जोय वहतो रुधिर डरेला जानकी
हणूला स कोई मूज हाथे
ढढाडुं अंतनूं. २

५६ दूजोभ्रमर गुंजार, भ्रमरगुंजारबीजो.

१	= १४	प्रास मळे तेमां लघुगुरु
२	= १४	
३	= १६	
४	= ९	आठमी साथे प्रास मळे तेमां ल ग
५	= १४	प्रास मळे तेमां अंते लघु गुरु
६	= १४	
७	= १६	
८	= ९	चोथी साथे प्रास तेमां लघुगुरु

(चोपाया).

पे'ले बीजे चौद कळामां लघु गुरु प्रासे आवे,
त्रीजे सोळ कळा चोथामां नव कल गणीने लावे;
एज क्रमे पद चार अवर छे दूजा भ्रमर गुंजारे,
चार आठना पांच षटतणा प्रास वासमां (।ऽ) धारे. १

उदाहरण.

दूजो भ्रमर गुंजार.

बीजो भ्रमर गुंजारमां १०६
वादे चडे विस्तारमां ९३
पण थाकथी हारी जतां ते ९४
अवनी उपर पडे; ११
वळी वादमां फळ कँइ नथी २१७
कविता विषे कवि दे कथी १२८
छेतो शीखामण लाखनी आ १२७
चतुर पदवी चडे. १ २१

दूजो भ्रमर गुंजार.

मिलिया सु राघव लिखमणं
अतकपां पोरस ऊफणं
सुग्रीव अड आकाश शीरषं
थरक गिर थहरं;
वेधहले वीर महा बलं
गह बाल हूतां दम गलं
दिल अभय केकंधा दवारे
गजे सुर गहरं. १

हमीर कवि अठ्ठावीश मात्राना चार चरणनुं आ गीत रचवा जणावे छे ने तमां अन्तमां लघुगुरु लाववानुं केहेछे. जुवो नीचेनुं तेनुं उदाहरण:—

दुजो भ्रमरगुंजार.

लखधीर कुंवर सुलखणं रजरीत कायम रख्खणं,
वर वीर हेल हमीर वडहथ वयंण नीर सुवा वेहणं
आचारि सौरी अेमगलां वहजाण भूप महाबलं
भुजराज तेज सकाज जग भलमोज वण घण माहणं. १
धजवंध निज कुल उध्धरं दातार शूर बहादुरं
मुखनूर सुरति मयंण मूरती सुयण मिणि सघरं
भूपाल आल भयंकरं साहाय सुर शिवशंकरं
सोभाग खाग प्रियाग समवड त्याग हज कल्पतरं. २
समावित्त चित्त नरेशरं परमाण जान [14]पटंतरं

---

१ वचन. २ निभाववावाळा. ३ आचारसारो. ४ तरवार शत्रुने गळे जाय अेवी. ५ सरस. ६ सर्व जाण. ७ दरियाजेवी. ८ कामदेव. ९ सौभाग्य. १० खडग. ११ प्रागमल्जी जेवु. १२ दान. १३ कल्पतरु. १४ परीक्षा.

ઊદાર વસુધા વાર આકેણ ખનેંડ મંડ અંકુરં
સોવ્રત મોજ સમપણં કવિવરાં દ્રાલીદ્ર કપ્પણં
ઓ સાંપ તેજ પ્રતાપ અવિચલ પ્રહવી જશ જય પેસરં. ३
વડુંઆર વીર વીચખણં દૂશિયાં ચિત હીત દખણં
દેશપતિ સંભ્રમ ઘણા દોલતી પ્રકૃતિ મતિ પ્રગેલં
નેખત્રેત જોધે નિરેહણં વડખાત્રિ સારિખ વેહણં
એકલમલ આંકલ દૂઝેલ કહી કેલંહી એ અકલં. ४

५७ અઠતાલો.

१	=१८	१,२,३,નાં તથા ५,६,७નાં મોહોરાં મળે.
२	=१४	
३	=१४	
४	=१०	४,८ નાં મોહોરાં મળે તેમાં ગુરુ લઘુ અન્તે આવે.
५	=१४	
६	=१४	
७	=१४	
८	=१०	

ઉપર પ્રમાણે પ્રથમ દવાલો કરવો અને બીજા દવાલાની પેહેલી ઝડ १४ માત્રાની, બાકીની ઉપર પ્રમાણે.

(સવૈયો).

ધ્રુપદ અઢાર કલનું પ્રથમે, અવર દવાલે ચૌદ ગણાય,
બીજે ત્રીજે ચૌદ કલા છે મ્હોરાં મળતાં ગણનાં થાય;
ચોથું પદ દશ કલનું કરીને એ ક્રમથી બીજાં રચ ચાર,
ચાર આઠમાં ગુરુ લઘુ પ્રાસે અઠતાલામાં એમ વિચાર.

---

१ પૃથ્વી. २ સમય. ३ ચિન્હિતકરવાવાળો. ४ અચળ. ५ ડરરહીત. ६ સોનું. ७ રેઆળ. ८ પૃથ્વી. ९ પ્રસારવાવાળો. १० મોટાઈ. ११ વિચક્ષણ. १२ કવિ. १३ પ્રગલ્ભ. १४ ચંદ્ર. १५ યુદ્ધામાં. १६ નિરખવું. १७ ભલપણ. १८ વચન. १९ કોઇથી ઝલાય નહિ એવો. २० કલહ કરવાવાળો.

उदाहरण.

अठतालो

हर्षे अठताल तो हरखायछे ८७३
प्रभुता घणी परखायछे १२८
गणी एम निज गुण गायछे १४१
ले'रमां लेवाय. ३६
जो एक ताल सधायछे १२७
झट जीती जग जवायछे १३२
अठताल तो अधिकायछे १२८
दोष क्यम देवाय. १ ४१

अठतालो.

काके कुंभवाले वेर काजां, सक्रजित उजेल साजां,
कियण गोखल कुंभ लाजां, जेगताजां जोस;
जोय जोगण वृंद जाजां, प्रबल वह्नी करे प्राजां,
वहण आवध होम वाजां, रुपदराजा रोस. १
भगत राखस भेद भाले, चक्रधर थावयण चाले,
दनुज सुत देवी दवाले, जिगसंभाले जोध;
जेण रथ धज अगन जाले, नीसर्या अणद्रष्ट न्हाले,
पहण पाणी बंध पाले, विमल ठाले बोध. २

अठतालो.

लख दीयण जशरस लीयण लाखो, भूप रूडां रूप भाखो,
रीत चीत प्रवित्र राखो, राजमेज रवेशे
मई निर्वेड दूसरो भारो, सरोहे संसार सारो,

१ पवित्र. सूर्य. ३ भट. ४ नवो. ५ वखाण करे.

कोवियां लागे करोरो, नेत बंधै[3] नरेश. १
मेर मोंझी मछ्छरालो, सुयँण माणिक सप्पखालो,
सुकवीआं उपरि सुढालो, कुंवर गुण किरणाल[6];
नाम राखण नरां नायक, लखण भारी ग्रहण लायक,
वदे खटव्रँन सुजस वायक, पाटरो रखपाल. २
धजाबंधी एक धारण, श्वे हेमरं लाख वारण[11],
मळे कीरती भाट चारण, देखी उढंग[12] दान;
साखरो शीणगार सामो, निंधू[13] राखण अमर नामो,
करे खत्रवट तणा कामो, राजहंस राजान. ३
देश मालिम सुतण देशळ नरसधर दुंहपखे निरमळ,
अतुळ बळ अति कमळ उजळ, वरन खट विशराम;
प्राग हर मोटा पराक्रम जायणां बगसणो[15] जंगम[16]
अळ विधंण हिंदुआ आपम, वीरवर वरिआम.

५८ त्राटको.

१	=१८	१ २, ३, तेमज ५, ६, ७ नां मोहोरां मळे.
२	=१६	
३	=१६	
४	=११	४, ८, ना मोहोरां मळे तेमां अन्ते गुरुलघु.
५	=१६	
६	=१६	
७	=१६	
८	=११	

१ शत्रु. २ आकरो. ३ फतेहनीधवा. ४ मेरु जेवो मालिक. ५ सज्जन. ६ सूर्य. ७ वर्ण. ८ गादीनो. ९ आपे. १० घोडा. ११ हाथी. १२ जब्बर. १३ कायम. १४ बने. १५ बक्षनार. १६ घोडा. १७ वात पकडी राखनार. १८ मनोहर.

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो, पण बीजा दवालानी पेहेली झड सोळ मात्रानी करवी; बाकीनी उपर प्रमाणे.

सवैयो.

धुरपद अढार कलनुं प्रथमे, अवर दवाले सोळ रचाय
बीजे त्रीजे सोळ कला छे म्होरां मळतां त्रणतां थाय;
चोथुं पद अगियार कलानुं एवां चार फरीने आण,
चार आठमां गुरु लघु प्रासे एम त्राटको रचजो जाण.

उदाहरण.

त्राटको.

जे त्राटक जेने तेने त्राटे ९
खटपट करतां खांते खाटे १३
फाव्यो जाणी बहु ते फाटे ५६
खर थइ गोदा खाय; ६०
भूंडा थइ भूंडे ना भाळिये ३८६
कूडां कृत्य करंता खाळिये ३९९
डा'पण राखी प्रभुथी डरिये ४३६
लख सारु लेखाय. १ ५७

त्राटको.

रद चंपे ओठ डसे रद रावण
अंग खडा रोमांच अभावण
शोक सुजाळ प्रगळां आपण
नीर झरे जिम नेण;
नाखे वारंवार निसासा
हाथां तेग ग्रही चंद्रहासा

कीधो दारुण कोप प्रकाशां
कोटसिया सिर देण. १
हाले बाग दिसां कुल हाणी
जाजुल वात मंदोदरी जाणी
बाटां रोक बदे मुख वाणी
सांभळ नाह सभीत
पोरस तो प्रथमी लग पायो
एण करां कैलास उठायो
धूपट तीनो लोक धूजायो
जीत करी जम जीत. २

५९ काछो.

१	१८+१४+१२=४४	२, ४ ना मोहोरा मळे तेमां गुरु लघु अन्ते आवे
२	९+७ +१०=२६	
३	९+७ +१२=२८	
४	९+७ +१०=२६	

१२४ मात्रानो एक दवालो, एवा चार दवालानुं एक गीत, तेमां झमक आणवी. एटले छेला विना प्रत्येक यति-ना प्रास बे गुरुमां मळे. बीजा दवालामां प्रथम पद १४+१४ +१२=४० चालीस मात्रानां करवां.

(सवैयो.)

प्रथमे अढार चौद बार यति अवर दवाले मुनि मुनि बार,
नव मुनि दशनी बीजी चोथी प्रास तालमां (ऽ।) मळता धार,
नव मुनि बारे यति त्रीजीमां अठ्ठावीस कल थई रचाय,
प्रति बे यतिमां यमक मळेछे बे गुरु तेमां काछो थाय.

उदाहरण.

काछो.

काछो जगतजन जितेन्द्रिय जाणे, कच्छ बंधो कवि प्रमाणे.

वीर वखाणे वीरवर. ८७,८७,९४,१३१.
विश्वास आणे, सर्व टाणे, नार नाणे वीर, ७७,७०१
निज साथ भाणे, जमण टाणे, मोज माणे खून ए. ७७,७१२
को वे'म नाणे, नयन बाणे, गीत गाणे धीर. १ ७७,७९१
चतुर चेती चोट म्हाले, नारी सामुं नव निहाले, मूमि भाळे लाजथी
२,१०,१३,९७३
ते घर न घाले, कोइ काले, ग्रह्यो काले एम, ७६,१०८
उन्मार्ग चाले, चडी न चाले, हळी हाले हेतथी, ७६,११४
भामनी भाले, जरी न भाळे, जोत झाले जेम. २ ७७,७८९

काछो.

रघुपत जगत मण उपसी सराले, भामणी चिहु ओर भाले,
वन विचाले जोरवर,
चित लाग चाले, गात चाले, घर संभाळे धीर,
दूर दीखाले, केक काले, अचल थाले उपरे,
दीठा दयाले, तेण ताले, वपु वडाले वीर. १
मळे लख सुग्रीव मावो, अंग जाणो हुवो आवो,
बाळ दावो लियण बिट,
जत धार जावो, करे का'वो, खबर लावो खोद,
घर धाख धावे, जठे जामे, हरि प्रभावे हेरने,
निज शीश नामे, परस पावे, मनां थावा मोद. २

काछो.

महिपति लखपती कवि दलिद्र भारे, सुकर उपरी जगत सारे,
सुयेण भौरे रारिखो,
अचॅडांउभारे धरमधारे वॅश ववारे लॉन,
करिमॅर करॉरे शत्रु संधारे गरज सारे गुणियॅणां,

१ जगत. २ सुजाण. ३ भारा सरखो. ४ चुले न चढेलां हो ळां चढावे. ५ नाभीला (तारे) ६ तरवार. ७ चाकरो. ८ गुणीजन.

संझां[1] सवारे, गुण गवारे[2], दिवारे[3] लखदान. १

आपरां[4] परिआं[5] उजाले, भलापण गृहिया भुजाले[6],

मन वडाले[7] मंडली,

वसुधा विमाले, प्रजापाले, रिघू पाले रीति,

दूणां[10] प्रदोहे[11], गढां गोहे[12], बिरद सोहे[13] सल्बलां[14],

सौको[15] सराहे[16], वारंवाहे[17], कुंवर [18]मांटे कीर्ति. २

नीपणां[19] सामो निवाजे[20], भेटियां मुळ दालिद्र भाजे[21], मागी[22] ताजे[23] भूपति,

शक[24] दिहे[25] साजे[26], रिघू[27] राजे, मेर[28] छाजे मंन,

ठावे[29] ठिकाणे, जगतजाणे, अति घराणे[30] ऊजळे,

अरिआंथि[31] आणे, पहि[32] प्रमाणे, वखाणे खटव्रन[33]. ३

देशलाणी[34] वडिम दाखे, पात्र कीधा शेर[35] पाखे[36], लखण लाखे[37] रालिया,

इम जगत आखे[38], रीत राखे, निमल झांखे[39] नूर,

गजपाट गहमंह[40], पासि परिगंहे[41], शकंज[42] अरि बंह[43] शंकळे[44],

थिति[45] पछिम घरथह, मालमउदह[46], पाटपति गहपूर[47]. ४

---

१ सांजे. २ गवरावे. ३ देवरावे. ४ पोतानां. ५ पेढी. ६ हाथे. ७ वडो. ८ भोगवे. ९ सारी रीते. १० दुर्जन. ११ बाळे. १२ किल्ला तोडे. १३ मदद करे. १४ जब्बर. १५ सर्वे. १६ वखाण करे. १७ वारंवार. १८ इच्छे छे १९ कवियो. २० बक्षीस करे. २१ जे जे मळतां वातज. २२ मागय. २३ तेजवान. २४ प्रताप. २५ दशोदिशामां. २६ शोभे. २७ रिद्धि. २८ मेरुपर्वत जेवुं उंचुं मन. २९ नाभी. ३० कुळ ३१ अर्थ ३२ पृथ्वी (आखी पृथ्वीमां). ३३ छ वर्ण. ३४ देशलजीना वेटा. ३५ दरिद्र. ३६ अळगो. ३७ लाखा फुळाणिना. ३८ भाखे. ३९ देखाय. ४० घुमता. ४१ सभा. ४२ जोरावर. ४३ बहु ४४ शंका खाय. ४५ स्थानक. ४६ वाघनी वांह. ४७ गंभीर.

६० झमाल.

	१	१३+११=२४	प्रथम एक दुहो
	२	१३+११=२४	
दुहानी चोथी झड	३	११+१०=२१	चन्द्रायणो एक कवो
	४	११+१०=२१	१,२ना प्रास मळे अने
	५	११+१०=२१	३,४ ना प्रास मळे
	६	११+१०=२१	

विषमे तेर समे शिवे, प्रथम दुहो रच प्रीत, ४१८८८
रच ते पर चन्द्रायणो, रणपिंगलनी रीत. ३३५१३
रणपिंगलनी रीत उल्लालो आणजो, २७३८
शिव दश याति कळ एम, एकवीश जाणजो, ३८९३
चार चरण ए सहित, चरण खट थायछे, ४१५९
म्होरा बव्वे मळये, झमाल रचायछे. ३६९२

उदाहरण.

झमाल.

नृपति सदनमां आविया, दोडी वधाई दार, ३०,१२२
विगत कही विध विध कथी, हैये हर्ष अपार ३९,७३९
हैये हर्ष अपार, अन्तःपुर आविने, ३८८१
सुभट सचिव गणसाथ, सुवेण सुणाविने, ३७४९
पादर आव्या राम, जीती असुर राजने, ४०९६
तुरत करो तैयार, समैया साजने. २७३३

झमाल.

नृप म्हेले आया नगर, दोड वधाईदार,

कही विगत विध विध करी, आणँद भरे अपार.

आणंद भरे अपार, अन्ते वर आयने,
सुभट सचिव जिण साथ, सुवेण सुणायने,
परण पधारे राम, जित कुल राजने,
तुरत करीजें त्यार, समेलो साजने. १

झमाल.

दिल दरिया देदो घनो, चाढण परियां चाव,
घाव अरीयां घूमवे, रावतणो उमराव.
रावतणो उमराव, सुभाव समंदरे,
राजे इसो अमीर, सुभारा नंदरे.
पण धारी कवपाल, राव विप्र पालणो,
लागु लखां वरीस, पखां अजुवालणो. १
साम धर्मी भुज सामरे, फाल मुदायत फोज,
मोज लगसण मोहमन, भोजतणी पर भोज;
भोजतणी पर भोज, समोज भाखणो,
रजवट रंग उठंग, सदा अँग राखणो;
नह भेटे परनार, अचारी हनूमल,
करमी कीरत कोट, चढंते तो कमल. २
कंथकोटो मोटो करम, ठावो खत्रवट ठोड,
सोहड भड आखाड सिध, मोडतणो कुल मोड;
मोडतणो कुल मोड, सवाई मानजे,
वरदाई वरवीर, सदाय वखाणजे;
जशलोभी घण जाण, वरीसण जंगमे,
ओपे सहज सुभाव, क्षत्रिपण अंगमे. ३

धारण हेकण कीत घर, वंस वधारण वान;
सारण कारज सुकवियां, मारण दालद्रमान;
मारण दालद्रमान, सधारण मंगणा,
उन्नड हरज्यो उन्नड, दान ऊढंगणा;
जशधारी जाडेज, सदा गढ लाजरो;
भल कव उमगे भेट, मुख भोजराजरो. ४

गीत जाति झमाल.

समझण गुण रूपक सुयण, वयण[1] लीयण वर वीर,
कुंअरां गुरउ[2] उजोत कर, धज बंधी लखधीर;
धज बंधी लखधीर, करे नित धोखलो[3]
कायम लाज म्रजाद, सदा चडती कला.
पूरतपीसे[4] प्रवित[5], खत्री पण पालणो,
आंमर, भीम, हमीर, खँगार, उजालणो. १
उभे करग[6] जगऊपरां, सखरा[7] खरी सहझ[8];
वांन वधारण वीर वर, शूर शधीर शकझ[9].
शूर शधीर शकझ, तरोवर सारिखो,
प्राण प्रमाण शंपेखं[10], करे कवि पारखो;
देशल सुत दातार, घणुं हीत दाखणो[11],
रूडी रीत प्रवीत, दुआपरे[12] राखणो. २
म्रांजी[13] नवखंडे प्रसिधि, मांझी अमली माण;
भोलीम[14] खाटण निवड मद, जालिम जोध जुआण.
जालिम जोध जुआंण, जेवनां[15] जीपणो[16].

१ वचन. २ मुख्य. ३ युद्ध. ४ पूरो तपस्वी. ५ पवित्र. ६ हाथ. ७ सारा. ८ नक्की. ९ सारां कार्य करवावाळो. १० प्रेक्षण करे. ११ दिल देखाडवावाळो. १२ द्वापार. १३ मर्यादा. १४ भलपण. १५ यवन. १६ जीतवावाळो.

घांसा हेर दल पासि, कन्हे पोरस घणो.
एकल मल्ल अवीह[2], लियां पांणी अणी[3],
वखाणे[4] खटवन[5], वडी राजस वणी. ३

है[6] वगशंण गोहर्डरहर[8], मेर[9] बरावर मंन,
जग अंतर राखण सुजश, कयावरि भोज करंन[11].
कयावरि भोज करंन, पर दूख कप्पणो,
शासण शाहणे[12] लाख, पशां ऊसमर्पणो[13],
भेद लहे चत्रवेद, गुणां वह भत्तियां[14],
पण धारी लखपति शीर भूपत्तियां. ४

६१ ललित मुगट.

१	१३+११=२४	एक दुहो.
२	१३+११=२४	चोथी तुकनुं सिंहावलोकन त्रिभंगीना प्रथम यतिमां थाय.

३	१०+८+८+६(४+ग)=३२	त्रिभंगी एक करवो.
४	,, =३२	
५	,, =३२	
६	,, =३२	

(चोपाया)

ललित मुकुटमां एक दुहापर जाति त्रिभंगी आवे,
तेमां दश ने आठ आठपर, चार कला, गुरु लावे.
बत्रीश कलनां चार चरण रचि एवां रूडां भारे,
सिंह विलोकन दुहा छेहनुं प्रथम पदे ललकारे.

---

१ फोज. २ विये नहि. ३ अणीने समये. ४ वखाणे. ५ वर्ण. ६ हय. ७ वखप्रवावाळो. ८ गोडजीनो वंशज. ९ मेरु. १० करिया वर=काम. ११ कर्ण. १२ हुकम. १३ समर्पण करवावाळो. १४ प्रकारनां.

ललित मुगट.

रणपिंगळनी रीतथी रचों दूहो निर्धार २,९३३२
तेपर अन्त उलालसह जाति त्रिभंगीधार. ३०,९६७
तुं धार त्रिभंगी, जातिरंगी, दूहासंगी, उलट धरी, ११,४९,८६०
कुल रदकल तेमां, जगण न जेमां, आठ ड एमां,
कवन करी; ११,६८०,७६
यति दशने आठे, तेपर आठे,षटने ठाठे,प्रास सजो८,३९,१८७
गुरु छे छेवटमां, ललित मुगटमां, कुल पद खटमां,
भाव सजो. १ ९०४४१९

ललित मुगट.

लडी लंका जीती करी, आपी दासने राज
अवध नगर आनंदथी, आव्या रघुपतिराज.

रघुपति तो आव्या, सौ मनभाव्या, सीता लाव्या, शेष जति
बहु वळी शूरनर, वनचर खेचर, वळकळमांवर कीसपति
अमरो असमाने, बेसी विमाने, कुसुमांजलीने वरसावे
नोबतनानादो, सरणइसादो, करी आल्हादो, दरशावे.

ललित मुगट.

करे जीत लंका कलह, दे भृत राज उदार,
आया राम अजोधियां, कवसलराज कुमार;

कवसल्लकुमारं, लेसियलारं, जंग जोधारं, शेष जती
वभीखण वधारं, अच्चर अपारं, पदम अढारं, कीसपती
अमरां असमाणं, बेठ विमाणं, सुमनसपाणं, वरसावे
घुर नोबत धाई, सुरां सवाई, धवल वधाई, सरसावे.

६२ म्होटो साणोर, वडो साणोर.

१ ६+५+५+७=२३ तेमां अन्ते लघु.
२ ५+५+७ =१७ तेमां अन्ते गुरु.
३ ५+५+५+५=२० तेमां अन्ते लघु.
४ ५+५+७ =१७ तेमां अन्ते गुरु.

ए रीते पेहेलो दवालो करवो.

१ ५+५+५+५=२०
२ ५+५+७ =१७
३ ५+५+५+५=२०
४ ५+५+७ =१७

आ प्रमाणे बीजो, त्रीजो अने चोथो इत्यादि दवाला करवा.

एमां बीजी ने चोथीनां मोहरां मळे, तेमां लघुगुरु अन्ते आणवा. ए रीते चार दवालानुं एक मोटुं साणोरगीत थाय. केटलाक एम केहेछे, के, सम पदमां छेल्लो लघुगुरु आवे तो १७ मात्रा आणवी, पण छेल्लो लघु आणवो होय तो १८ मात्रा आणवी; एटले पेहेला दवालानी मात्रा ७९ थाय अने बीजा दवालानी ७४ थाय.

(कवित)

म्होटा साणोरनी मांह, छ पांच ने पांच सात,
एम कल त्रेत्रीसनुं, पे'लुं पाद तो करो;
पांच पांच सात तणुं, बीजुं चोथुं पद रचो,
कल सतर रचो तो, गुरु प्रासमां धरो.
पण जो अढार रचो, तो अन्ते लघु लावजो;
त्रीजुं पद पांच कल, चार वारनुं रचो
एज रीते बाकीना दवाला केरो पे'लो पाद
वीस कल केरो करी, गीत रचवा मचो.

उदाहरण.

मोटो साणोर.

वीर वडे साणोर वद सुजननां वखाणो ४०९६
ते घणां हृदयमां भेद करतां ७८२
शूरना पूरमां डूबतो खूबतो १७०५६
तोय तनमां बहु ताण भरतां. १ ७७४
वीर नर होय ते गाजतो धूधवे ११६१
नवडरे डग धरे शूर धरतो ७८३
कूडने कापतो क्रूर ऊथापतो १७५६
जाप तो जरुर निज जात करतो. २ ८३७

मोटो साणोर.

धुरां दरससर पांडु मुनि कळा तेविस धर
जुग विसख सपतकल दुसर जितरे
पंच कल तेणाव्हे चारगण विषम पद
सांमुहे मेळ गण कला सतरे. १
विषम सम विषम सम दषाले वेद तुक
ठीक गुरु अंत तुक वहस ठाळा
प्रगट कल सितंतर हुवे द्वाले प्रथम
दूसरे चिमंतर कला द्वाला. २
असममें एकसी वीसमत आणजे
त्रिया सम चरण चित जाणजे बेस
गुरु हुवे अंत तिण तणी दस सात गिण
लघु अंत सात जिण अढारे लेख. ३
ह्रस्व दीरघ दोउ नेम विण रचि जे

जिको व्हे वडो साणोर बुध जोर
धरे जो नेम सो गीत परबंधमें
शुव परहास होय भेद साणोर. ४
महोरा मेल अखरोट मेले अमल
परमुख सनमुख विमल समजावे
गुणी धन जाण गरजिके गुण गाथरा
गहर रघुनाथरा सुयश गावे. ५

मोटो साणोर.

धरा वेध खित्र खेद चित्रकुट, गढढेलडी, पूरवालखत लिखत प्रमाणो,
साह अवतार अवरंग सिसुपालरे, राजसी कृष्ण अवतार राणो,
मंडपो उभे कमधां धरे मांडवो, लिखत वर सुवर अंकूर लायो,
कथन सुण द्वारकां हुत आयो कृसन, उदेपूर हुंत तिम राण आयो. २

धूरतां नगारां लिया साजम घणा, सेहरा बंध पेबँध सनेही,
यादवर कुंदणपुरं जेम तोरण चडे, जगारो जोधपुर कृसन जेही. ३
एक अधिकाइ हिंदु तुरक ईखतां, जिकानो बात संसार जाणी,
कृष्णावर रुखमणी ले गया कुंवारी, अमररीकलोधर परण आणी. ४

धराधक धूण गढकोट चाडेणधक, दुरत रावण जिहीदेयण खगदाह,
पेलके रचो शिशुपाल माथो पटक, शिर एले कन्यो पतशाह. ५
राण वाखाण सुण बिरद घण रामहर, कथन वल दिल्ली मू एम कहसी,
रायसी राण हिंदुआण धूम राखतां, राण वाखाण जुग चार रहसी. ६

६३ प्रहास साणोर अथवा गर्भित साणोर.

१ लो दवालो.	१	६+५+५+७=२३
	२	५+५+७ =१७
	३	५+५+५+५=२०
	४	५+५+७ =१७
२ जो दवालो.	१	५+५+५+५=२०
	२	५+५+७ =१७
	३	५+५+५+५=२०
	४	५+५+७ =१७

उपरना बीजा दवाला प्रमाणे बाकीना दवाला करवा तेमां अन्ते गुरु आवे.

(गीति)

गर्भित प्रहास मांहे म्होटा साणोरनुं बधुं आणो;
सममां अन्ते गुरु छे फेर खरो एटलो तमे जाणो.

उदाहरण.

प्रहाससाणोर.

ए साणोर प्रहास सुजन मनमां तो सजे; ८२९५
कीर्तिनां काम कंठे करेलां, १५९
शूणतां शूरने शूर चडि जायछे; २३६६
थायछे नेत्र मारे भरेलां. १ १५९

प्रहास साणोर.

गिरिपतिसुता नाथने हाथ जोडी करी
पूछियुं नाथ! शो भेद एनो,
आपनुं ध्यान नित धरे आखी इला
करो नित ध्यान जप आप केनो? १

हुं कहु विगत सुण सुचित सलुणी उमा
अगम परिब्रम्ह गतगुण अपारे,
निज रुपे आज संसार मांहे रहे
वळी संसारथी रहे वा'रे. २

प्रहास साणोर.

दोउ कर जोड पूछियो शकत हे कण दिवस
आख जे जगतपति भेद इणरो,
आपरो ध्यान नित करे सारी इला
करो नित ध्यान सो आप किणरो. १
आखहूं विगत हुय सुचित सांभळ उमा
अगम परिब्रह्म गत गुण अपारे,
रूप निज अखिल संसार मांहे रहे
वळे संसारसुं रहे वारे. २

दिल्हिना औरंगजेब पादशाहपर उदेपुरना राणा राजसिंहे चडाई करी ते वेळाना वर्णननुं गीत.

प्रहास साणोर.

दिल्ली उपरां रायसी राण चढियो जदन
नमर धुखमाल पुर लंकनांई,
धुआंसु हुवो इंद्रलोकसो धूंधलो
तप गयो ठेठ अही रावतांई. १
सुतन जगराम आरँभ किया एरसा
असरमा प्राजले सहर अगला,
पुरंदर मिंदरा बीच काजल पडे
सहस्र फणतणा सिर जले सघळा. २

हिंदवा छात आखियात वातां हुई[1]
सुजस हूवो तेण साखी अरकसोम,
धराधर नेण अकला हुवां धोवांसुं
धराधर शीष अकला हुवा धोम. ३
आकुलत व्याकुलत फिरे राय आंगण
पिंड किणभांत आराम पामे
सदरदे सकरचा नेण मुंदेसरी
नागणी नागसिर घडा नामे. ४

प्रहास साणोर.

करण अरथ चउदह विद्या देउर व्याकरण
भला गुण जाणगिरे[2] कुंअर भाखो,
त्रिगुण मंत्रवेद तत[3]पंच रुडी तरह
लहे पिंगल भरह[4] भेद लाखो. १
अध्यातम मरम विस्तार बावन अखर
संस्कृत पराकृत बिगत सूझे,
पाडगति गीत समझण पाहेते
बहतरी कला खट भास बूझे. २
भुजंगी छंद भमरावली त्रिभंगी
पाधडी[6] झंपताली पछोणे,
चौरसा चोपई चोप चन्द्रायणो
जाति रूपक तणी घणी जाणे. ३
सकल जग ऊपरां अकल देशल सुतन
सदा साभोंउ दरिआउ सारीखे,

१ दिलमां वह्यां रह्युं छे. २ जाणवावाळे. ३ पांच तत्त्व संपूर्ण. ५ पराक्रम. ६ पद्दरी. ७ स्वभाव.

गढपति नहि खोटा तणो ग्राहगु
आगरो पोतरो खरा परिखे. ४

६४ पाडगति, पाडगत.

१ चरण	=२१	२, ४ नां मोहोरां मळे तेमां गुरु अन्ते आवे.
२ ,,	=१८	
३ ,,	=१९	
४ ,,	=१८	

बीजा दवालानी पेहेली झडमां १९ मात्रा आवे, बाकीनी उपर प्रमाणे.

चूडामणि गीति.

पाडगतिमां विषमे ओगणिश कला बधी गणी आणो;
सममां अढार तेमां गुरु लघु म्होरे बधा मळे जाणो.
प्रथम दवाला माटे एकविश कला कवि गणी लावे;
झागडदी[1] रागडदी धागडदी पागडदी सरस आवे.

उदाहरण.

पाडगति.

गांडो भर्णो पाडगति आव्यो सुरताजे, १७१६
कागडदी कथन करतो बाहु शूर, २०६२

---

१ आ गीतनी दरेक झडमां प्रारंभमां नीचे लख्या शब्दो आवे.

धागडदी	डागडदी	धाधडदी
जागडदी	हागडदी	छागडदी
रागडदी	कागडदी	तागडदी
पांगडदी	आगडदी	डागडदी
सागडदी	फागडदी	चागडदी
भागडदी	मागडदी	

रागडदी राम भागडदी भाखे, २५८
सागडदी सरसज भणे भरपूर. १ २३४२

धागडदी जागडदी चरण चहाय, ४००७
पागडदी वागडदी वदे सुरागं; २१७७
हागडदी हाम आगडदी उचरे, १८५९
फागडदी मागडदी मस फगाय. २ २४१०

पाडगति.

गंगागडदी दुहू ओडां दल गाजे,
तागडदी तबल बाजे रणतूर;
रागडदी राम रावण जुध रोपे,
सागडदी समाम अडे सजसूर.
भागडदी भूत जोगण गण भैरव
क्षागडदी अक्षर गृधंप रिखआण,
पागडदी प्रबळ पलभर दुर पेखत
वागडदी व्योम सुरछया विमाण.

बुद्धिविलासमां आ गीतनुं माप नीचे आप्या प्रमाणे लाववानुं जणावे छे:—

१. प्रथम चरण १६ अक्षर.
२. द्वितीय चरण १४ अक्षर.
३. तृतिय चरण १६ अक्षर.
४. चतुर्थ चरण १४ अक्षर.

बीजा अने चोथानां म्होरां मळे. गीतमां लाटानुंप्रास घणा आवे.

उदाहरण माटे जुओ नीचे आपेलुं गीत:—

પાદગતિ

મંડે[1] આખોડા[2] મ્રદંગ તાલ રાગરંગ માન,
ચાગિડી ગિડિદા થાથાગિડીદા અચંભ,[3]
નિતકાર તતકાર થૈકાર થૈકાર નાચે,
રમે લખપતિ અગ નટ નાટા રંભ. ૧

ધેધિકટ ધધકટ તાધિમક તાધિમક,
રમઝમ ઠમઠમ ક્રમ એણ રીત,
રણકા ઝણકા ખાતિ ભાંતિ ભાતિ કારશાલ;
સામરાય જાદો દેખે નાહક સંગીત. ૨

થોઉગ થોઉગ તતા ધત્તા ધત્તા થંગ થંગ,
ટહ્કા ગહ્કા કરે ભેલા ખેલા ટોલે,[4]
ખખટ્ટ[5] બિનટ્ટ નટ જાલિમ તાલિમ ખાના
મ્રાઝા દેશલાણી[6] આગે રાગરા અકોલ. ૩

તાતાગિની તમં ગટારં મછટા પડ તાલ,
બેહદ મેહદ નૈંદ[7] શબ્દ વિચાર;
ભાંઉ[8] રાખે જુંકાંતિકાં[9] ભવીંરાં[10] દલીદ્ર ભાજે,
દેખે ઇન્દ્ર વલી કલી જાડેજો દાતાર. ૪

૬૫ હેલા, હેલો.

પહેલો દવાલો	૧ ચરણ	=૧૬	૧,૨ નો પ્રાસ મળે.
	૨ ,,	=૧૪	
	૩ ,,	=૧૦	૩,૬ નો પ્રાસ મળે તેમાં ગુરુ અન્તે આવે.
	૪ ,,	=૧૪	
	૫ ,,	=૧૪	૪,૫ નો પ્રાસ મળે.
	૬ ,,	=૧૦	

૧ મંડાયો. ૨ અખાડો. ૩ અચંબો. ૪ ટોળો. ૫ જબરા. ૬ દેશલજીનાં કુંઅર. ૭ નાદ. ૮ ભાવ. ૯ જેનાં તેનાં. ૧૦ ભવભવનાં.

चौद मात्रावाळी झडमां एक चोकलीयो गण अन्ते आवे.

बीजो दवालो	१	चरण मात्रा	=१४
	२	,,	=१४
	३	,,	=१०
	४	,,	=१४
	५	,,	=१४
	६	,,	=१०

बीजा दवाला प्रमाणे बाकीना दवाला करवा.

(कवित.)

पे'ला बीजा चोथा अने पांचमामां चौद कल,
तेमां छेलो एक गण चोकलीयो थायछे;
पे'ला दवालानी मांह् पे'लुं पद सोळनुं छे,
पे'ला बीजा केरां म्होरां मळतां जणायछे;
चोथा साथे पांचमाना प्रास मळे ठीकठाक,
त्रीजा छट्ठा केरी कल दश बधी आणवी;
तेना प्रास मांहे अन्ते गुरु लघु लाववाना,
ए रीते हेला नी रीत सुकवियें जाणवी. १

उदाहरण.

हेलो.

हेला रमतो ठेला देतो, ९
लक्ष वात न एक लेतो, ४९
चडी रमते चाल, ४०
खेल खेल्यो खोट खाधी, ३६
लाभ वात न लेश लाधी, ४९
हवे भा ! संभाळ. १. ३५
जन्मथी ते मरण सूधी ७०

केम खोई बेश सुखी ३६
कांई पाछळ पेख; ४९
बाळ रमतो हवे शोभे, २०
केम लेवायो तुं लोभे, ३६
थई दानो देख. २. २

हेला.

उठी जइ कौशल मात पासे,
लळी नामे शीश त्रासे;
वदे वाणी दीन;
केकई बदनाम कीधो,
दोष मोटो मने दीधो,
थयो लार विहीन. १
रोई क्यम सुत नीर ढाळे,
टळे भावी नको काळे,
बने जे बननार;
पडी काया स्नेह साटे;
दाह अग्नि कार्य माटे
भाई था तैयार. २

६६ शुद्ध शाणोर.

पेहेलो दवालो
१ ६+५+५+७=२३
२ ५+५+८ =१८ तेमां अन्ते गुरु लघु.
३ ५+५+५+५=२०
४ ५+५+८ =१८ तेमां अन्ते गुरु लघु.

बीजो दवालो	१	५+५+५+५=२०
	२	५+५+८ =१८ तेमां अन्ते गुरु लघु.
	३	५+५+५+५=२०
	४	५+५+८ =१८ तेमां गुरु लघु.

गीती.

म्होटा साणोर तणी रचना बधिय शुद्ध विषे आवे;
सममां अढार तेमां गुरु लघु अन्ते खरेखरो लावे.

उदाहरण.

शुद्ध साणोर.

शुद्ध साणोरमां तोरसां गाय शुं गाय.१ १९२३२
जो अल्या शत्रुना हाथ संभाळ; १७५६
एक फटका थकी फाडी तन नांखशे, २३७१
सांखशे शी रीते भाळ भइ भाळ. १ २३६६
चोट ले चालवी चोटी संभाळीने १७५६
तो पछी डर अरीनो न नादान, १७६९
पण कदी सामटो तुज पटो मारतां १९०१
चेतजे चतुर नर जाळवी सान. १८२४

शुद्ध साणोर.

मगण आद गुरु तीन फल रमा विबुधा मही
पिता पिंगल गिरा मात तन पीत,
रिख कश्यप आरोहण कमठ शृंगार रस
मगधपत द्विजवरण नयण त्रिय मीत. १
सरव लघु नगण आयुष वृवण सुर सरप
तात विध सावित्री कनक रंग तेण

भृगुमन चढण गज नउ रसमे अभंग
नृप मागध देश कुल विप्र गुर नेण. २

६७ चोटियो.

१	४+५+५+५=१९ मात्रा	२,४,५ नां मोहोरां मळे तेमां अन्ते बे गुरु आवे.
२	अन्ते बे गुरुवाळा त्रण चोकलिया=१२	
३	४ चोकलिया गण=१६ मात्रा	
४	अन्ते बे गुरुवाळा ३ चोकलिया=१२	
५	४+५+५+५=१९ मात्रा	

उपर प्रमाणे प्रथम दवालो करवो.

बीजा दवालामां प्रथम चरणमां १६ मात्रा, बाकी बीजो उपर प्रमाणें.

(कवित.)

चोकलिया चारतणुं पे'लुं त्रीजुं पाद थाय,
पण ओगणीश तणुं आदि आदिनुं करो;
तेमां चार पांच पांच पांच एम यति थाय,
एज रीते पांचमानुं माप धारीने धरो;
अंते बे गुरु तणा तो त्रण चोकलिया गण,
तेनी बार कळा बीजे चोथे पदे आणजो
चोटियामां म्होरां मळे बीजा चोथा पांचमानां,
तेमां अन्ते बे गुरु तो आवे एम जाणजो.

उदाहरण.

चोटियो.

चतुरा ! चोटिया गीतमां गायछे, १०८६
लावो लेवा आवी, १
ए सद्गुण तणो भंडारी, २२
तेने साथे लावी, १

बुद्धि ललचाइ पडीने गमावी. १ ४४१
पण सद्गुण ते कोना के'वा, १०
ए जो अंतर आणे, १२
तो तो फरक पडे नहि एमां, १७४
जुगत करी जो जाणे, ५
पण जो प्रीतिनी रीतिये प्रमाणे. २ ४७६

चोटियो.

वारे आवरे रण रोप बंका,
तने सुग्रीव बकारे,
उठी झटपट दोडी आवी,
अति क्रोध उर धारे,
आ हुं आव्यो उभो छुं पलकारे. १
तारा तरछोडी ते आव्यो,
ए तो विजयी वाली,
एक एकनो घातज करवा,
निज गदा कर झाली,
बाझ्या ए जेम करि परस्पर झाली. २

चोटियो.

वारे आवरे रण रोपर बंका, बंधु सुग्रीव बकारे,
उठे सुण धम जगड अधायो, धींग क्रोध उर धारे,
हुं हिव आवियो पग मांड हकारे. १
तारा हटक उलंघे तावां, आयो बाल अफारां,
वेहू एम जूटीया बंधव पिंड बली अणपारां,
खूटा मदझर जुगजाण खंभारा. २

वर्णमेळ समगीत.

६८ अर्द्ध सोखगोखो-अर्धगोख.

१ पादमां अक्षर ८) चारेनां मोहोरां मळे. चोथा चरणमां
२ पादमां अक्षर ८ (विप्सा आवे.
३ पादमां अक्षर ८ (छेल्ला गुरु लघु उदाहरणमां आवेछे पण
४ पादमां अक्षर ८) नियममां जणाव्युं नथी.

दुहा.

प्रतिपद अक्षर आठमां, अन्ते लघु गुरु आण;
चारे मो'रां ज्यम मळे, त्यम रचना करी जाण.
विप्सा तिगने आणवो, चोथा पदने ठाम;
अर्द्धसोखगोखो वदे कविजन एनुं नाम.

उदाहरण.

प्रभु पद सुखकार, १९२
सेववाने चित धार; १७९
निराधारनो आधार, १३८
ते आधार धार धार. १ १६९
ओठुं बीजुं नोखुं राख, १२९
भक्ति भाव पूरो दाख; १३९
प्रभु प्रीत रस चाख; १८८
प्रभु नाम भाख भाख. २ १७२
उद्धार एनाथी थाय, १२१
पाप बधां बळी जाय; १९१
चित्त जो चोखुं रखाय; १७९

प्रभु थाय स्हाय स्हाय. ३ १७२
मन केरो मेल काप, १६४
चित्त प्रभु पदे आप; १५९
टळशे तेथी संताप, १३२
जशे वळी पाप पाप. ४ १६६

अरधगोख.

सांभळी इसी सराह.
लयो सीत भरी लाह.
मची शके लोक माह;
त्राह त्राह त्राह त्राह. १

६९ सवायो.

१ स+स=८
२ स+स=८
३ स+स=८ पांचेनां मोहोरां मळे.
४ स+स=८
५ स+स+स+स=१६

दुहा.

प्रथम पाद बे सगणनुं, त्रण पद तेवां आण;
पाद वधेलुं पांचमुं, चार सगणनुं जाण. १
एक सवाया गीतमां, पांच पाद तो थाय,
पांचे पदनां प्रास तो, सरखा मळता जाय. २

उदाहरण.

शुभ काम करो, २८
प्रभुथीज डरो; २८
खरु तो उचरो; २८

नहि केनुँ हरो, २८
कूडमां न गरचो, जन एज खरो. १७५६

सवायो.

धर सत्त पटें, कर जुझ कटें
भिद वाण भटें, हद माण हटें;
रतकुंभ जगावण, राण रटें. १

वर्णमेळ.

विषम गीत

७० दुजो एकलवर्णो-घणकठो.

१ पादमां १८ वर्ण.		सर्व लघु मात्रा.
२ पादमां १३ वर्ण.		
३ पादमां १६ वर्ण.		
४ पादमां १३ वर्ण.		

आवो प्रथम दवालो करवो; पण बीजा दवाळाना प्रथम चरणमां १६ लघु वर्ण करवा.

(सवैया एकत्रीशा.)

प्रथम दवाले पे'ला पदमां अढार अक्षर लघुना आण;
अवर दवाले सोळ ज आवे त्रीजे पद त्रीसां त्यम जाण;
सममां अक्षर तेर लघु करी, तेनां म्होरां मळतां जाय;
बीजो एकलवर्णो एवो, घणकठ बीजे नाम वदाय.

उदाहरण.

दूजो एकलवर्णो

थइ थइ थननन झम झम झररर कल, २१२१४४
लचि लचि ढळि ढळत घन वधु. ८१९२
धिक धिक धिक धिक करि करि गुणवन, ६११२६

फट फट कहत फिटवत मधु. ८१९२

दूजो एकलवर्णो.

गह मत गत असत अवरतत परगत,
अखत दुचित रत भरथ अत;
जगपत हित मुख दुर इण भत जिम,
प्रभत हुवत दिन रमणपत.

७१ सपाखरो–साठ अक्षरो.

१ पादमां अक्षर=१८
२ पादमां अक्षर=१४
३ पादमां अक्षर=१६
४ पादमां अक्षर=१४

२, ४ नां मोहोरां मळे; अन्ते गुरु लघु. सभन ए त्रण गण न आवे तो सारुं.

बीजा दवाळामां पेहेली झड १६ अक्षरनी आवे. बाकीनी उपर प्रमाणे.

(हरिगीत.)

पद प्रथम वर्ण अढार आवे, बाकी विषमे सोळ छे;
सममांह आवे चौद तेमां अन्त गुरु लघु तोल छे;
मो'रां मळे समनां बधां छे यमक एज सपाखरो;
गण सभन घणुं करी पाद मांहे, लाववा मन नव करो.

उदाहरण.

दढ युत्राकोट वेरी लेवा, चोट पूरेपूरी देवा, १०२८०
जोसथी विकारो, उकाळे चढीने धाय; ८७७९
इन्द्रियोने फोडी तोडी, नाशना मारगे जोडी, ४६११
बेकावी बेकावी लावी, लगाडी छे ला'य. १ ८४४९
बळी बळी स्थिर थाय, ओलवी न को ओलाय; २९४९४
जोशरूपी घी होमाय, तेथी न ठराय. ११२९९

तोय जोस वधे तेम, लाग मळे तेम तेम, ४२६५१
झोकावी झझुमे झाझुं, झाली न झलाय. २ ११४१७
झुंझवीने झुंझवे शुं? इन्द्रियो अतिशें थाकी, ६६९१
पाक्या पान जेवी पाकी, खोखुं खाली जेम; ८२०१
बोखुं मोढुं चोखुं थयुं, टूटचो दांत केरो घेरो, २११३
चावी चावी चोट देता, घंटी घाण एम. २ १०२७३

सपाखरो.

अंगा सवायो उससे तायो सुणे वेण राणवाला;
वडाला छोहमें छायो चखां चोल वून;
कलेयुं अघायो लेण रटकां सजोर काथे,
कटकां रामरे माथे आयो कुंभक्रन.
असंहा वदन वाणी बोलतो पुलस्त अंसी,
क्रोधाल त्रसूल तसा तोलतो कसूर;
मिले मूछां भ्रूहरां डोलतो आकारीठ महा;
गरीठ दोयणां हियां छोलतो गरूर.

अथगीत ज्ञाति सपाखरो.

काछ धरात्ति सोरठ सिंधि हालार अपार कृति,
झालेर शाचोर लगे जेशाण जोधाण;
मालवे महिवे मांडी मेडते ठकाणे मोटे.
वंचे[2] गछे कोटे लाखा ताहरा वखाण. १
केच मुकराण वीच कामीक कनोज काशी,
थाट[3] मेदपाट[4] धार उजेण खंधार[5]
सांगानेर[6] अजमेर साल्हेर मोल्हेर सूधो[7],

१ माढ. २ वंचाय छे. ३ थरपारकर. ४ मेवाड. ५ कंदहार.
६ जयपुरथी त्रण गाऊपर शहेर छे. ७ सुधी.

च्यारि चकांमांही सामां थारो नामा चार. २
आशेर भांभेर बुंदी आगरे आबेर आबु
दिली नार नोर छोल थान खान देश,
ताहरो तमामी हरावळे वडे राइतने
प्रथि नवे खंडे पुगो शुजश प्रवेश. ३
तिलंक बंगाळ गौड शूरती खंभात तोंई,
करे कवि पात्र खरा ताहरा केवांर
तपे घणुं घणां दीह भूज देशंपतीतणां,
दीठो न छत्रीशे वंशे तुं जिशो दातार. ४

७२ एकलवणों.

१ पादमां=१८ ल. तुमुलक अं.११९३ र.पिं.
अतिशक्वरी २ पादमां=१५ वर्ण. २, ४ नो प्रास मळे
नुं २४५७१ मुं रूप तेमां उपान्त्य गुरु आवे;
बाकीना बधा लघु आवे.
३ पादमां=१६ वर्ण. अचलधृति अं. ११०७ रणपिंगळ
भा. १ लो.
४ पादमां=१५ वर्ण. चरणमां सर्व लघु वर्ण
आवे.

आ प्रमाणे प्रथम दवालो करवो, पण बीजा दवालाना प्रथम चरणमां १६ लघु आणवा.

(दुहा)

अढार लघु, पद प्रथममां, सममां पंदर आण;
प्रास मळे ते बे तणा, अन्ते गुरु लघु जाण.

---

८ रह्यासत. ९ सुधी. १० जश. ११ देशलजीना तन.

अवर विषम पद सोळनां, एकल वर्णामांय;
चार दवाला सौ मळी, एक गीतमां थाय.

उदाहरण.

तुमुलक प्रथम चरण कविवर करी धर, २६२१४४
अति शक्वरीनुं द्वितीय चतुर आण; २४५७६
तृतीय चरण अति अचलधृतिनुं कर, ६५५३६
द्वितीय चतुर चरण गलथकी जाण. १ २४५७६
भगवत रटण भगत कर निशदिन, ६५५३६
भली रीत भली भली भगत जन साथ; २४५७६
जगत जरुर गण कुडकर दुखभर, ६५५३६
जग चरण धरी ग्रह सुख भरी बाथ. २ २४५७६

एकलवर्णो.

दलबल सज दुगम चढिय सुत दसरथ,
तहक तबल अत डरुत तबाह;
समरण उवर वरण घण सिय पद,
वहत चरण उभरण वनवाह. १
चलकर मजल निकर गिर पहुंचिय,
चढ रज अरस फरक धुज चाह;
मुज मुकर अवत गुण लिखमण,
निरबल निरख भरथ नरनार.

७३ शिरखूली निशाणी.

१,	१२+९=२१	प्रथम विरामनां चारे मोहोरां मळे.
२,	१२+९=२१	
३,	१२+९=२१	
४,	१२+९=२१	

बार अने नव कलना, यति बे आणजो, ३०४१
ओ' रां चारे दलना, मध्य मिलावजो; ३६२७
ए शिरखूळी ललना, विश कल एकनी, ४००७
एमां जगकरतलना, गुण गवरावजो. ४०३३

रणपिंगलमां पृ. २६ मे रासा जाति अंक ७३ नी छे अने जे वसंततिलका वृत्तने रागे गवायछे; तेनुं माप १२+९ =२१ छे, पण आ ते ढाळे गाइ शकाती नथी.

निशाणी शिरखूळी.

नाचे मोर निहारे अहिफण उपरे,
मूषक शीर्ष न धारे घात मजारियां;
माहोमाह न मारे, वेर वुन्यादरा,
एसे तेज अकारे, राजे रघुपती.

७४ शुद्ध निशाणी.

१,	१३+१०=२३	तेमां छेला बे गुरु. चारेनां मोहोरां मळे.
२,	१३+१०=२३	
३,	१३+१०=२३	
४,	१३+१०=२३	

तेर दशे यति आणतां, त्रेविश कल जाणो, ५८५८
प्रति पदकेरा अन्तमां, बे गुरु गुणि! आणो, ५८३८
म्होरां मळतां चारनां, कवि करशे शाणो, २२७१
शुद्ध निसाणी एहनुं, नाम ज परमाणो. ५८३७

रणपिंगलमां पृ. ३० मे अंक ८५ ढढपट, दटपट छे तेनुं माप १३+१०=२३ तेमां अंते बे गुरु छे.

अंक ८६ मे निश्रेणी जाति छे तेनुं माप १३+१० एवा न यतिने छेडे अेकको गुरु आवे.

अर्द्ध सम जातिमां पृ. ७५ मे अंक ६ वाळी निशाणी छे.

शुद्ध निसाणी

सिंघ अजा सामल सलल, पीवे इकथाला,
तसकर दबे उलुक ज्यों, ऊगा किरणाला;
पडी न छेडे पारकी, चहु वरण विचाला,
ऐसा राज करे अवध, दसरथनृपबाला.

७५ निशाणी गरबत वा गर्भित.

१,	१०+१३=२३	तेमां छेला बे लघु. चारनां म्होरां मळे.
२,	१०+१३=२३	
३,	१०+१३=२३	
४,	१०+१३=२३	

तेर कळा प्रथमे धरी, दश तेह उपर कर, ४४४७४
एम कळा त्रेवीशमां, लघु बे छेवट धर; ४०२७२
निशाणी गरबत कहे, एवाने कवि वर; ३९७३५
म्होरां मळतां चारनां, आवे छेवटपर. ३९६६७

गरबत निशाणी.

द्रढ प्रताप आठूं, दिसां प्रसरे अवनी पर
हितु कमल फूले, विहद भृत चक्र हरखभर;
नीश अनीत कहुं लेश नह तहके दुःख तिमर,
सूरज कुल सूरज तपे बड तेज सियावर.

७६ निशाणी सिंहचली.

१,	९+४+३+४=(१६)+३+४+३=१०=२६	१,२ तथा ३, ४ नां म्होरां मळे.
२,	९+४+३+४=(१६)+३+४+३=१०=२६	
३,	९+४+३+४=(१६)+३+४+३=१०=२६	
४,	९+४+३+४=(१६)+३+४+३=१०=२६	

प्रौढनी बे झड थइने एक आवे, तेमां दश मात्राना

यतिनुं सिंहावलोकन प्रत्येक झडना पछीना सोळ मात्राना यतिमां आवे.

कळ पांच उपर चार आवे, राम उपर चार; १०६३३४

कळ राम उपर चार ने त्रण, एम दश कल धार; ११७९२७

एम दश कल गल प्रास मोरे, सोल यति पर आण, ७९०६३

सिंहावलोकन सोळ यतिमां, सिंहचलीमां जाण. ८९०५९

रणपिंगल मात्रामेळ प्रकरण पृष्ट ४१ नां. १०१

शंकर जाति.

निशाणी सिंहचली.

रघुवंश नायक किरत जिसकी, कवण वरणे साज,
कुण साज वरणे किरत जे नर, उदध बंधे पाज;
दध पाज बंधे कवण लावे, उतर मारग छेह,
मग छेह उतर करे गिणती, बुंद श्रावण मेह.

७७ निशाणी दुमेल, दुमला, दुमल.

१,	१४+९=२३	तेमां अन्ते गुरुलघु आवे अने प्रत्येक पदना विरामनां म्होरां मळतां चारे पदनां थइने आठ म्होरां मळे.
२,	१४+९=२३	
३,	१४+९=२३	
४,	१४+९=२३	

चौद नवे यति ठिक रचाय, प्रास मळो जाय, २०६६३
त्रेविश कल पदमां गणाय, दुमल एम थाय; २४१८७
दुमला दुमेल पण कथाय, के'छे कविराय; २४८३७
म्होरे आठ गुरु लघु थाय, निशाणी वदाय. २४८४१

रणपिंगलमां पृ. ४०९ मां दुमिला—द्विमिला ८ सगणनो छे ते साथे आने कशो संबंध नथी. मात्र नाम मळतुं छे.

निशाणी दुमला.

दंड धजा के हो दतार, धनूं वंका धार,

पळछ सास पुण जे पुकार, छंद मद्रासार;
चोरी पर चित्त हरण चार, नर जोरी नार,
एसा राज करे उदार, कवसलकूमार.

७८ निशाणी मारु.

१,	१६+१२=२८	तेमां अन्ते बे गुरु ने म्होरां चारेनां मळे.
२,	१६+१२=२८	
३,	१६+१२=२८	
४,	१६+१२=२८	

कला सोळ पर बार करीने, अट्ठाविस कळ आणो, ६४२५७
अन्ते तेमां बे गुरु आवे, जुगती पदनी जाणो; २०४४०
म्हो'रां चारे आणी मळता, मारु निशाणी माणो; ११९४३
रणपिंगलनी सार रसीली, पूरी जाति प्रमाणो. ४६५२२

रणपिंगल पृ. ४६ ककुभाजाति. ११६

निशाणी मारु.

धाम धाम जिग होय, वेद धुन रिख अभीराम ररंदे;
दया वंदत दिल साह मुमदिल, हित पर पीर हरंदे;
पवन अवर जिह सुखी अपारां, घन गुह पूर घरंदे,
अदल नीत जगजीत अज्योध्या, रघुवर राज करंदे.

७९. निशाणी सोहणी.

१,	१३+१६ तेमां अन्ते बे गुरु=२९	चारेनां म्होरां मळे.
२,	१३+१६ तेमां अन्ते बे गुरु=२९	
३,	१३+१६ तेमां अन्ते बे गुरु=२९	
४,	१३+१६ तेमां अन्ते बे गुरु=२९	

कळा तेर प्रथमे करी, सोळ कळा ते पर सोहावे, ८०१७०४
कुल ओगणत्रिश कल करी, लक्षी छेला बे गुरु लावे; ७५१६६
मेळवणी म्होरांतणी, एमां चारे मळती आवे; २८७१६
सुरस निशाणी सोहणी, भलीभात कविजन मन भावे. ७१४५२५

निशाणी गथर.

जिण पुर उपराजे, अवर न गाजे, केवल मेघ घुरायंदा,
सब रहे ठिकाणें, हुकम प्रमाणे, मारूत मते चलायंदा
वां काल अराणो भय नहि आणो, भय दुजदीना लायंदा,
राघव राजिंदा अवध नरेंदा, एसा राज दिपायंदा.

८३ निशाणी झिगर.

१, १८+१४=३२	तेमां अन्ते मगण अने चारेनां म्होरां मळे.
२, १८+१४=३२	
३, १८+१४=३२	
४, १८+१४=३२	

कल अढार पे'ला यतिमां आणी, बीजे चौद धरावेछे, १२१५४५
ए रीते पद कल बत्रिश माहे; म्होरे मगण मचावेछे, १६८२१५
वळी तेमां म्होरां चारे मळतां, कविवर आप रचावेछे, १४६८५८
ए निशाणी झीगरमां कुलकल, शत अठ्ठाविश आवेछे, १३१८७४

निशाणी झिगर.

खटतीशु वंशतणा क्षितधारी, विग्रहपुर वराराहे,
धूनागा आय करे निजराणा, लेघन जिके धराराहे;
धर धाकांहूत चहू चक धूजे, दिलखल पडे दराराहे;
कवशल्यानंद जिसीका रेणा, एसा तेज कराराहे.

८४ निशाणी पेडी.

१, १८ (२+१६)+१६+१६+१४=६४	तेमां अन्ते मगण आवे ने चारेनां म्होरां मळे, तेमज १८ अने सोळना यतिनां प्रास मळे.
२, १८ (२+१६)+१६+१६+१४=६४	
३, १८ (२+१६)+१६+१६+१४=६४	
४, १८ (२+१६)+१६+१६+१४=६४	

कळ बेपर सोळ कळा धर कविवर,
सोळ कळा वळीं धर ते उपर;
ते उपर सोळ कळा लावी, तेना प्रास मिलावे छे. १
पछीं ते पर चौद कळा कवि धरतां,
ठीक चार याति एवा करतां,
कुल चौसठ कलनुं शोभीतुं, एक चरण कवि लावे छे. २
शुभ कुल चार चरण एवां लावी, चारेनां म्होरां मेलावी,
[उलट धरीने मन मोजीलुं, रचना सरस रचावे छे. ३
नरों रचों जाति पेडी निशाणी, बेसो छप्पन कल कुल आणी,
विविध प्रकारे कविवर सुंदर, रस रंगीलो

निशानी पेडी.

जिण रैयत साथ सुखां सरसाई, सातुं ईतिभ
निजदल गवण अगम कर दीरध, घेरत
षट्रितहिं सफल कुसमवन दरखत, षट हीं
बारहीं मास सदा मन भाया, पावसपूर
विधिहर इन्द्रादि थपे थिर थाणा, तजत
ते उर ध्यान धरे निस वासर, जे जे शबद
सरसातु द्वीप नवे खंड भारी, फेली उज्वल कीरत अपार,
दसरथ रंद अवधपूर नायक, एसा राज करदा हे. ॥ १ ॥

समाप्त.

निशानी पेडी.

श्री लखपतजी बहु विद्या शोखी, कविशाळा करवाने नोखी,
सुदी जागिर तेनी आपी, भुज पोशाळ ठरावीने;

ए रावे ग्रंथो रची रचावी, कविता रचवा आपी चावी,
पछी पोशाळे काम कर्युं बहु कुशळ कवि बनावीने;
कवि प्राणजीवन पोशाळे ज्यारे, डिंगळ त्यां शीखववा त्यारे
जेसलमेर प्रति मगावी, चलवी ते सुधरावीने
श्री खेंगारजी नृपति जे वारे, डिंगल कृति विचारी त्यारे
गूर्जरमां रणशूर दिवाने, रची छे उलट धरावीने.

कल अढार पे'ला य
ए रीते पद कल बा
ळी तेमां म्होरां चा
निशाणी झीगरम।

खटतीशु वंशतणा
ामा आय

